RAJNEETI;

OR

TALES,

EXHIBITING THE MORAL DOCTRINES, AND THE CIVIL AND MILITARY POLICY

OF THE

HINDOOS.

TRANSLATED FROM THE ORIGINAL SUNSKRIT OF NARAYUN PUNDIT, INTO BRIJ B,HASHA.

BY SREE LULLOO LAL KUB,

B,hasha Moonshee in the College of FORT WILLIAM.

Calcutta:

PRINTED AT THE HINDOOSTANEE PRESS,

No. 71, Cossitolah-Street.

1809.

श्री गणेशायनमः

अथ राजनीति लिख्यते * गजमुख सुखदाता जगत दुखदाहक गणईश * पूरन अभिलाषा करौ शंभुसुत जगदीश * काहू समें श्री नारायण पंडित नें नीतिशास्त्रनि नें कथानि कौ संग्रह करि संस्कृत में ऐक ग्रंथ बनाय वाकौ नाम हितोपदेस धर्‍यौ सो अब श्री युत महाराजाधिराज परम सुजान सब गुन खान भागवान कृपानिधान मारकुइस वलिजली गवरनर जनरल महा बली के राज में * श्री श्री महाराज गुनवान अतिजान जानगिलकृस्त प्रतापी की आज्ञा सों संवत् १८५८ में श्री लल्लूजी

लाल कवि ब्राह्मन गुजराती सहस्त्र अवदीच आगरे वारे नें वाकौ आश्रय लै ब्रजभाषा करि नाम राजनीति राखौ * (दोहा) पंडित हैं ते जानि हैं कथा प्रसंग प्रवीन * मूरख मनमें मानि हैं लाल कहा यह कीन * अरु सम्वत १८६५ मांहिं श्री महाराजानि के राजा सकल गुन निधान ज्ञानवान जगत उजागर दया सागर प्रजा पालक गिलबर्ट लार्ड मिंटो तेजस्वी के राज मध्य अरु श्री निपट गुनज्ञाता महा दाता उपकारी हित कारी कपतान जान उलियम् टेलर नक्षत्री की आज्ञा सें श्री श्री वान धीवान दयायुत डाकतर उलियम् हंटर सहायक की सहायता नें अरु श्री बुद्धि वान सुखदान लिपटन अबराहाम लाकट रतीवंत के कहे सें वाही कवि नें राजनीति ग्रंथ छपवायौ पाठशाला के बिद्यार्थी साहिबनि के पढ़वेकौं * (दोहा) ब्रजभाषा भाषत सकल सुर बानी सम तूल *

ते [illegible] रखा नतु सकल कवि जानि महा रस मूल * [illegible] राजनीति के पढे सुनै तें मनुष ब्रज भाषा [illegible] होंय अरु जितेक संसार के व्यौहार की बातें हैं तिन मांहिं प्रवीन * प्रथम वा ग्रंथ में ऐसें लिख्यौ है * कि जे चतुर हैं ते आप कौं अजर अमर समान जान विद्या अरु धन की चिंता करतु हैं अरु जैसें काहू की चोटी काल गहे होय ऐसो समझ वे धर्म करतु हैं * पुनि ऐसें कह्यौ है कि सब पदार्थनि में विद्या रूपी पदार्थ उत्तम है * क्यों कि अहारकी देनवारी * पुन्य मार्ग की दिखावन हारी अरु सदा चतुराई की दाता है * जाकौ भागी भाग नलैसकै अरु मोल नाहीं * क्षयनाहीं * यह गुप्त धन है * याकौं चोर ठग राजा छल करि नलै सकै * विद्या देति है नम्रता * नम्रता पाये भयौ सुपात्र * सुपात्र भये मिलतु है धन * धन मिले करतु है धर्म * धर्मतें सुखी रहतु है * अरु

जैसें नदी नारे कों समुद्र लों पहुंचावे * तैसें विद्या हू नर कों राजा तक लेजाय * आगे जैसो वाके कपार में लिखो होय तैसो फल मिले * शस्त्र विद्या औ शास्त्र विद्या ये दोऊ जगत में उच्च पद की देनवारी हैं * पर वृद्ध अवस्था में शस्त्र विद्या कों देखि लोग हंसतु हैं अरु शास्त्र विद्या तें अधिक प्रतिष्ठा होतु है * तातें बाल अवस्था तें लै वृद्ध अवस्था लों शास्त्र संग्रह करनौं मनुष कों उचित है क्यों कि जहां पंडित प्रवेश करतु है तहां धनवान नाहीं जासकतु * तासों बालकनि के नीति शास्त्र सिखायवे कों छलकरि कथा कहतु हैं * क्यों कि शास्त्र में प्रथम ही बालकनि कौ चित्त नाहीं लागतु * पुनि ऐसें हू कह्यौ है * जो विद्या बाल अवस्था में सिखाइये सो भूलति नाहीं * जैसें कोरे माटी के पात्र में जो भरिये ताही कौ गुन लहै * याही तें पांच प्रकार की कथा करि कह

नु * पहली मित्र लाभ * कहैं प्रीति कराय वे कां ... * दूजी सुहृद्भेद कहैं स्नेह छुरायवे की भांति * ती... विग्रह कहैं युद्ध कराय वेकी चालि * चौथी स... कहैं मिलाप करायवेकी युक्ति संग्राम ते पहिले ...य के पाछें * पांचवीं लब्धप्रनाश कहैं ऐक वस्तु पायकरि छिनायदैनी

अथ कथा आरंभ

कविबासी गृह कूप कौ कथा अपार समंद * तैसी येकछु कहतु हौं मति है जैसी मंद * श्री गंगा जू के तीर ऐक पटना नाम नगर * तहां सब गुन निधान महाज्ञान पुन्यदान सुदरसन नाम राजा हो * वाने ऐक दिन काहू पंडितनतें द्वै श्लोक सुनें * ताकौ अर्थ यह है * कि अनेक अनेक प्रकार के संदेहनि कौं दूरि करै अरु गूढ अर्थनि कौं प्रकाशै * तातें सबकी आंखि शास्त्र है जाहि शास्त्र रूपी नेत्र नाहीं सो आंधरौ है अरु तरुनापन धन प्रभुता अविवेकता * ये चा

रौं ऐक ऐक अनर्थ की करनिहारी हैं अरु जहां ये चारौं हौंय तहां नजानिये कहा हौंय * यह सुनि राजा आपनें पुत्रनि की मूर्खता देखि चिंता करि कहनि लाग्यौ * कि ऐसे पुत्र भये कौंन कामके * जे विद्याकरि हीन अरु धर्म सों रहित * ते पुत्र ऐसें जैसें कानी आंखि देखिवे कौं तौनाहीं पर दूखनी आवै तौ पीर करै कह्यौ है * पुत्र ताही कौं कहिये जाके जन्मे तें कुल की मर्य्याद होय * अरु यौं तौ संसार में मर के को नाहीं उपजतुहै * पर सज्जन अरु विद्या वान जो पुत्र बंस में होतु है सो पुरुष सिंह है जैसें चंद्रमा तें आकाश सोभा पावतु है तैसें वा पुत्र सों कुल * जाकौ नाम गुनीन की गिनती में लिखनी तें नाहीं लिख्यौ गयौ * ताही की माता कौं बदबांझ कहतु हैं * अरु दान तप सूरता विद्या अर्थलाभ में जिनकौ, जस नाहीं भयौ * तिनकी माताओंनें केवल जनवेही कौ

पायो है * पैपुत्रकौ सुख नाहीं देख्यौ * कहतु किजिननि बडे तीर्थनिमें अतिकठिन तप व्रत [illegible] हैं * तिनके सुत आज्ञाकारी धनवान पंडित ध[illegible] होतुहैं * ये छह वस्तु संसार में सुख दायक हैं [illegible] धन की प्राप्ति शरीर आरोग्य स्त्रीनें हित नारी[illegible]ठ बोली पुत्र आज्ञाकारी अरु विद्यातें लाभ * इतनौकहि पुनि राजा बोल्यौ * कि मेरे पुत्र गुनवान होंय तौ भलौ॥ * यह सुनि कोऊ राज सभा में तें बोल्यौ कि महाराज आयु कर्म वित्त विद्या अरु मरन * ये पांच बात देहधारी कौं गर्भही में सिरजी हैं तातें जो भावी में है सो बिना भये नाहीं रहति * जैसें श्रीमहादेवजू कौं नग्नता अरु श्रीभगवान कौं सर्प सय्या * ता सों चिंता मति करौ जौतिहारे पुत्रनिके कर्म में विद्या लिखी है तौ विद्यावान होंयगे * पुनि राजा कही * यहतौ सांच है पर मनुष कौं परमेश्वरनें हाथ अरु

ज्ञान दयो है * सो विद्या साधन के अर्थ * जैसें ऐक चक्र को रथ नचलै तैसें विनपुरुषार्थ किये काजसिद्ध नहोय * तातें उद्यम सदा करिये * कर्म कौई आसरो करि नबैठि रहिये * कह्यो है * कि जैसें कुम्हार माटी ल्याय जो कछू कह्यो चाहै सो करै * तैसें नरहू आपनें कर्म समान फल पावै * कर्म तौ जड है वासों कछू नहोय * उद्यम करत हि तासों करता कर्म कौं प्रेरै तब भलो बुरो करता के कर्म संयोग तें होय * अरु केवल कर्म कौई आसरो करि बैठि रहनौं कपूत को काम है * अरु जाके माता पिता सुत कौं विद्या को उद्यम नकरावैं ते शत्रु जानिये * कह्यो है * कि मूढपुत्र पंडितनि की सभा में सोभा नपावै * जैसें हंसनि में बगुला नसोहै * आगे राजानें यह बिचारि पंडितनि को समाज करि कह्यो * हे पंडितो तुम में कोऊ ऐसौ पंडित है जो मेरे पुत्रनि

कों नीतिमार्ग कौ उपदेस दै नयौ जन्म करै * कह्यौ है * जैसें काच कांचन की संगति पाय मरकत मनि जनाय * तैसें साध की संगति में बुद्धि पाय मूरख हू पंडित होय * अरु नीचकी संगति में नीच * (दोहा) संगति कीजै साधकी हरै और की व्याधि * ओछी संगति नीच की आठौं पहर उपाधि * तहां राजा की बात सुनि विष्णुशर्मा बृद्ध ब्राह्मन सकल नीति शास्त्र कौ ज्ञान बृहस्पति समान बोल्यौ कि महाराज राजकुमार तौ पढायवे योग्य हैं * अयोग्य कौं विद्या नदीजियै * क्यौं कि वह पढै तौ सिद्धनहोय अरु जौ सिद्धहोय तौ अनीति विशेष करै * विद्याकौ गुन छांडै औगुन दृढ करि गांठि बांधै * तातें कुपात्र कौं नपढाइयै * जैसें बिलाव कौं नवौ नवौ भोजन खवाइयै तौ हू बिलूरवेकी घात न तजै * पुनि कोटि जतन करि बगुला कौं पढाइयै * परसूआ सौ नपढै * जौ सुनि

धर्म में निपुन होय तौहू माछरी मारवे की घात अधिक सीखे * महाराज तिहारे कुल में तौ निगुनी बालक नहोंय * जों मनि मानिक की खान में काच नउपजै * हम बिद्या बेचत नाही तुमतें कछु लेतु नाहीं । पर तुम्हारी प्रार्थना है या तें हों तिहारे पुत्रनि कों सहज सुभाव ही छः महीं ना में नीति मार्ग में निपुन करि हों * यह सुनि राजा बृद्ध ब्राह्मन बिस्नु शर्मा तें बोल्यौ अहे पुहुप की संगति तें देखो नान्हें कीट हू सज्जन नि के माथे चढतु हैं * ताते तिहारे सत संग तें कहा न होय * जैसें पाथर की प्रतिष्ठा किये सब मनुष्य देवता करि पूजैं * पुनि उदयाचल परबत की बसन सूरज के उदै भये सर्व वस्तु सूरज समान ही दीसे * सुसंग तें नीच की हू प्रतिष्ठा होय (चौपाई) कीट भृंगि ऐसें उर अंतर * मनसरूप करि देत निरंतर * लोह हेम पारस के परसे * या जग में

यह सरसे दरसे (दोहा) सेस सारदा व्यास मुनि कहतु न पावैं पार * सो महिमा सत संग की कैसे कहै गंवार * तुम मेरे पुत्रनि कों पंडित करबे जोग हो * ऐसें वा राजा नें बिनती करि ब्राह्मन कों आपने पुत्र सौंपे तब वह बिप्र राजपुत्रनि कौं लै ऐक ऊंचे मंदिर में जाय बैठ्यो * कोऊ समें पाय कह्यो सुनों महाराज कुमार (दोहा) काव्य शास्त्र आनंद तें रसिकनि के दिन जात * मूरख के दिन नींद में कलह करत उतपात

हों मित्रलाभ की कथा कहतु हों क्यों कि मित्रलाभ में लाभ बहुत है * कि ऐक चित्रग्रीव कपोत औ कछुआ हिरन अरु मूसा ये परम मित्र हे तिन के मिलन औ कर्म कहतु हों कि जे असाध्य हैं निधन हैं पर बुद्धिवाननि तें उन सों प्रीति है * तिन के काज ऐसें सिद्ध होतु हैं कि जैसें काग कछुआ हिरन मूसा के भये * यह सुनि

राज कुमारनि कही यह कैसी कथा है * तहां विस्नु शर्मा कहतु है

गोदावरी नदी के तीर ऐक सेमल कौ रूख * तापै सब दिस के पंछी आय विश्राम लेतु हे * ऐक दिन प्रात ही लघुपतनक नाम काग जा गयौ * वह ऐक कालरूप व्याधी कौं दूर तें आवतु देखि चिचायकरि कहनि लाग्यौ * आज भोर ही की वेला अधर्मी दुराचारी कौ मुख देखौ सो नजानियै कहा होय * ऐसें बिचारि लघुपतनक काग उडि गयौ * कह्यौ है कि उतपात की ठाम पंडित चतुर नर है * मूरख भय सोग बैठ्यौ सहै * इतेक में व्याधी नें रूख तरै चांवर के कनिका डारि तापर जाल पसार्‍यौ * तहां चित्रग्रीव कपोत कुटंब समेत उडत उत आय कढ्यौ * तिन में तें ऐक पंछी देखि बोल्यौ * इन चांवरनि कौं हौं चुग्यौ चाहतु हौं * चित्रग्रीव कही अरे या बन में चांवर

कहां तें आये * यह कछु कौतुक है यातें ये मो कों नीके नाहीं लागतु * सुनौं जौ तुम इन चांवरनि को लोभ करि हौ तौ वैसें होयगी जैसें कंकन के लोभ सों ऐक पथिक दहदल में फंसि बूढे बाघ कौ अहार भयौ * यह सुनि पंछियन कही यह कैसी कथा है * तब चित्रग्रीव कपोत राज बोल्यौ

हों ऐक दिन बनमें रह्यौ तहां यह देख्यौ जु ऐक वृद्ध बाघ पानीमें न्हाय कुश हाथ में लै मारग में आय बैठ्यौ * इतेक में ऐक बटोही ब्राह्मन आय कढ्यौ * वानें जब पंथमें नाहर बैठ्यौ देख्यौ तब भय खाय व्हांही ठिठक्यौ * याहि भयातुर देखि सिंह बोल्यौ अहो देवता हौं जो गैलमें बैठ्यौ हौं सो पुन्य करनि के हेतु अरु मोपास सोंना कौ कंकना है * सो श्री कृस्नार्पन देतुहौं तू लै * यह सुनि वह आपनें मनमें बिचाख्यौ कि आजतौ मेरे भाग जाग्यौ

दीसतुहै पर ऐसे संदेहमें जैवो जोग नाहीं * क्योंकि बुरेतें भली बस्तु हू पाइये पै आगेदुख होय जो अमृतमे विष होय तो मारिही मारै * पुनि ऐसें हू कह्योहै कि बिन कष्ट द्रव्य हाथ नाहीं आवत अरु जहां कष्ट तहां फल है जैसें जहां माया तहां सांप * पुष्प तहां कंटक * बिन दुख सहे सुख नाहीं * यह बिचारि ब्राह्मन नें वासों कहीकहां है वह कंकना * वाने हाथ पसारि दिखायो तब बिप्र कों लोभ आयो अरु बोल्यो * अरे तू ब्याध को करन हारो मैं तेरो विस्वास कैसें करों * नाहर बोल्यो अहो एक तो मैं प्रातस्नान करि दाता होय बैठ्यो हों * दूजे बृद्ध भयो तातें नख दांत अरु इंद्रियन को बलहू नाहीं अब मेरी प्रतीति क्यों नकरै * कह्यो है * यज्ञ वेदपाठ दान तप सत्य धीरज क्षमा निर्लोभ ये आठप्रकार कहे हैं ते पाखंडीतें न होंय * हों तो आपनें अर्थके लये दियो चाहतु

हौं अरु बाघ मास खातु हैं सो मेरे नाहीं पर
नजानतु है सो कहतु है * जैसें कुटनी काहू कों
धर्म को उपदेस देइ तो हू लोक नमानें अरु
ब्राह्मन हत्यारो हू मानिये * तातें तू सांचो है
मेरी देह वृद्ध भई अरु या काया तें मैं बहुत
पाप किये हैं यह समझ सब पाप तज धर्म
शास्त्र में पढ्यो अरु सुन्यों है * प्रानी कों ऐसो
चाहिये कि जैसो अपनों जीव प्यारो है तैसो ही
सब का हू को जानें अरु चार प्रकार तें दान देतु हैं
धर्मार्थ भयार्थ उपकारार्थ स्नेहार्थ सो नाहिं मैं
केवल तो हि दुखी जानि देतु हों * श्रीकृष्ण चंदनें
हू राजा युधिष्ठिर नें कह्यो है कि दान दरिद्री
कों दीजै तो अधिक फल होय * क्योंकि औषध
अरु पथ्य दुखी कों देतु हैं सुखी कों नाहीं अरु
जो देस काल पात्र देखि दान देतु हैं सो दान सा
त्वकी कहिये * तातें ब्राह्मन तू सरोवर में न्हाय
आ ओ सुच होय दान ले * वाकी बात सुनि

लोभकौ माखौ ज्यौं वह सरोवर में उतखौ त्यौं दोमें फंस्यौ * जब कीचतें पांव नकाढि सक्यौ तब बाघ हौलें हौलें वाकी ओर चल्यौ * ब्राह्मन कही अहो तुम काहे कौं आवतु हौ * बाघ कही कि तू पानीमें ठाढौ रह तोपै प्रयोग पढवाय कंकन दै स्वस्ति हृश सुनौंगौ * यह कहत कहत पास जाय वाकौं फंस्यौ देखि नरहटी धरी * तब बिप्र आपनें मनमें कहनि लाग्यौ कि दुष्ट कौ धर्म शास्त्र वेद कौ पढिवौ कछु काम नआवै क्यौंकि आपनौं सुभाव कोऊ नाहीं तजतु * जैसें गायकौ दूध सुभावही तें मीठौ होतु है * कछु वाके खैवे पीवे तें नाहीं अरु जाकी इंद्री मन बस नाहीं ताकी क्रिया ऐसें जैसें हाथी कौ स्नान उत न्हायौ इत फेरि ज्यौं कौ त्यौं * तातें मैं भली करी जो बाघकी प्रतीति करी * सब आपनें कुल व्यौहार चलतु हैं * यह बिचार करै तौ लौं नाहर नें वाहि मार भक्षन कियो * तातें

हीं कहतु हैं कि बिन बिचारे काम कबहू न करि ये (कुंडलिया) बिना बिचारे जो करै सो पाछें पछिताइ * काम बिगारे आपनों जगमें होत हंसाइ * जगमें होत हंसाइ चित्रमें चैन न पावे * खांन पांन सनमान रागरंग मनहिन आवे * कहि गिरधर कवि राय दुख कछु टरत नटारे * खटकत है जिय मांहिं कियो जो बिना बिचारे * कह्यौ है * पचायो अन्न * पंडितपत्र * पतिब्रता स्त्री * ससेवित राजा * बिचार करि कहिंवो अरु करि वो * इन तें बिगार कब हू न उपजे * यह सुनि ऐक परेषा बोल्यौ अहो या उं करा की बातें आपदा में कहां लौं बिचारें * ऐसें संदेह करिये तो भोजन करनौं हू न बनें क्यौं कि अन्नपानीमें हू संदेह है ऐसो बिचार कह्यौ करै तो सुख सों जीवन हू नहोय * कह्यौ है * कि तृषावंत असंतोषी क्रोधी सदा संदेही जो और के भागकी आस करै अति दयावंत ये छहों

सदा दुखी रहै * इतनी कहि वह परेवा चांवर चुगन उतस्यौ * वाके साथ सब उतरे तब चित्र ग्रीवनें बिचास्यौ कि इनकी लार जो होय सो होय पर साथ छोड़नौं उचित नाहीं * कह्यौहै * मनुष अनेक शास्त्र पढ़ै औरन कौं उपदेस देइ पर लोभ आय घेरै तब बुद्धि नचलै * आगै विनके साथ चित्रग्रीव हू उतस्यौ अरु जब वे पखेरू जालमें आये तब वानें जालकी जेवरी खेंची * सब बझे तद जाके कहे उतरे हे वाकी निंदा करनि लागे * ऐसें और हू ठौर कह्यौ है * कि सभामें सबतें आगै होय काम करै ज्यौ संवरै तौ सब कौं फल समान होय औ बिगरै तौ दोस वाही कौं देंइ जो आगै बढै * वाकीनिंदा सुनि चित्रग्रीव बोल्यौ * अरे याकौ दोष नाहीं जब आपदा आवतु है तब मित्र हू शत्रु होतु है जैसें बछराके बांधिबे कौं गायकी जांघ ही थांभ होतु है (दोहा) बधिक बध्यौ मृग बान

तें रुधिरो दियो बताय * अति हित अन
हित होतु है तुलसी दुरदिन पाय * यथा *
ज्योतिष आगम जान सब भूत भविष्य वर्त
मान * होंनहार जब होति है उलटिजातु है ज्ञान *
तातें बंधु सो जो आपत्य में काम आवै औ
भई बातको पछितायवो कपूत को काम है
यातें धीरज करि छूटनि को उपाय करो * क
ह्योहै (कुंडलिया) बीती ताहि बिसारिदै आगे
की सुधिले * जो बनि आवे सहजमें ताहीमें
चित दे * ताहीमें चितदे बात जोई बनि आ
वै * दुरजन हंसै न कोइ चित्तमें खेद नपावै *
कहि गिरधर कबिराय यहै करि मन परतीती *
आगेकों सुख होय समझ बीती सो बीती * पु
नि कह्यो है * कि आपदा में धीरज * संपदा में
बिनय * सभामे बचन चतुरई * संग्राममें परा
क्रम * जसमें रुचि * पढ़िबे में बिसन ये महत पुरु
षनके सुभावहैं अरु पुरुष कों छः दोष सदा

छोरि चाहिये * निद्रा अधीरता भय क्रोध आ लस्य सोग * इतनी कहि पनि चित्रग्रीव बोल्यो अब सब ऐक मति होय बल करी या जाल कों लेउडो * ऐसें कह्यो है * थोरेऊ मिलि ऐको करें तो बडो काम सिद्ध होय * जैसें घास मि लाय जेवरी बांठें तासों हाथी बांध्यो जाय * यह सुनि सब बल करि जालले उडे अरु व्याधीनें दूरगये देखे तब मनमें कह्यो * अबही सब ऐक मति हैं उतरिहैं तब देख लेउंगो * जद जाल धरतीमें न गिर्‍यो तब बधिक निरास होय बैठ्यो * तहां पखेरू चित्रग्रीव सों कहनि लागे अहो राजा व्याधी तो हमारे मांसकी आस छोरि बैठ्यो पर अब जालसों कैसें कढें * चित्रग्रीव कही * अरे सुनों या संसारमें माता पिता अरु मित्र ये तीनों सुभावही तें हित करतु हैं * ता तें ऐक हमारो मित्र हिरन्यक नाम मूसा वि चित्र बनमें गंउकी नदी के तीर रहत है * तहां

चलौ तो वह हमारे बंधन काटिहै * ऐसें बि
चारि ईंदुर के द्वार कौं चले अरु व्हां हिरन्यक हू
आपनें द्वार पर बैठ्यौ हो सो परेवानि कौं आवतु
देखि बिल में पैठि चपट्टे रह्यौ * तब चित्रग्रीव
कही मित्र बाहर आओ * मित्र को बोल पिछा
नि बाहर आय बोल्यौ मेरे आज बड़े भाग जो
मित्र चित्रग्रीव नें मोपै कृपा करि आय दरसन
दियौ अरु जालमें परेवन कौं देखि कह्यौ *
मित्र यह कहा है * उन कही बंधु यह पूर्व जन्म
कौ पाप है जाके भागमें जैसो लिख्यौ है ताकौं
तैसो फल मिलतु है अरु रोग सोग बंधन औ
दुख आपनें किये कर्म कौ फल है * कह्यौ है *
(कवित्त) होत उदोत प्रभाकर के दिस पच्छिम
तौ कछू धोखो नहीहै * फूलै सरोज पहारनि
मांहिं औ मेरु चलै तौ चलै कबही है * पावक
सीतल होत समें इक मोतियराम बिचारि कही है *
अंक मिटैं न लिखे बिधि के यह बेद पुराननि

मांहिं सही है * यह सुनि मूसा चित्रग्रीव के बंधन काटनि लाग्यो तब चित्रग्रीव कपोतराज बोल्यो * हितू पहिलें मेरे संघातीन के फंद काटो तापाछें मेरेकाटियो * ईंदुर कही प्रीतम येबंधन कठिन मेरे दांत कोमल * तातें पहिलें तेरे बंधन काटि तापाछें कटैंगे तो आरके काटिहों * चित्रग्रीव कही मित्र यह नायक को कर्म नाही जो आपने साथीन कों बंधाय आप छूटै यासों पहिले ये छूटिलेंय तो हमारो छूटनों बनें * पुनि मूसा बोल्यो भाई आपनी छोरि पराई बात कहनी यह नीति नाहीं * कह्यो है कि दुखपायकै धन राखिये धनदै स्त्री की रक्षा कीजै अरु धन स्त्री जाय तो जानि दीजै पर आपनपो राखियै क्यों कि धर्म अर्थ काम मोक्ष ये चार पदार्थ प्रान,के राखे रहैं अरु गये जांय * बहुरि चित्रग्रीव कही * मित्र नीति तो ऐसें ही है पै पंडित होय सो सरणागत वत्सल चाहियै *

कह्यो है पराये हेतु धन प्रान दीजै क्यों कि ऐक दिन तौ शरीर का नास होय * ताते और के निमित्त आवे तौ यासों काहा भलो है * याते तू मेरे अनित्य शरीर राखिवे को जतन छांडि अरु नित्य अविनासी जो जस ताके राखिवे को उपाय कर * कह्यो है * अनित्य देहते नित्य जस पाइये अरु मलीन तें निर्मल वस्तु * ताते शरीर अरु जसमें बड़ो अंतर है * यह सुनि हिरन्यक संतोष करि बोल्यो * हितू तोहि इन सेवकनि के सनेह तें त्रिलोकी को राज बूझिये * यह कहि उन सबही के बंधन काटे अरु कही बंधु तुम आपनी बुद्धि के दोषतें बंधे पर अब मनमें दुख जिन करौ * कह्यो है कि पंछी ऐक जोजन तें भूमि पर्यो अन्न देखे पर जाल न देखे * ताते तिहारी मति कोऊ दोष नाहीं क्योंकि चंद्र सूर्य्य हू ग्रहपीड़ा पावतु हैं अरु गज भुजंग हू बंधनमें परतु हैं * पंडित निर्धन होत हैं अरु

समें पाय पशु पंछी नभचर जलचर हू परबस
होय दुख पावतु हैं * जो भावीमें होय सोविना
भये नाहीं रहतु * ऐसें हिरन्यक नें चित्रग्रीव
कों समझाय मनोहर बचन सुनाय खवाय प्याय
कुटुंब समेत बिदाकियो अरु आपहू बिलमें
गयो * तब लघुपतनक काग जो प्रातहीव्याधी
कों देखि भाग्यो हो वाने ह समाचार पाय अप
नें मनमांहिं कही कि संसारमें मित्राई बड़ो प
दार्थ है * देखो मित्र कौंन ठौर काम आयो *
यह बिचारि रूखतें उतरि मूषक के द्वार जाय
बोल्यो * अहो हिरन्यक तुम कों मेरो प्रनाम है
अरु तुम्हें बड़ा जानि मित्राई करनि आयो हौं *
यह सुनि हिरन्यक बोल्यो अरे तू को है * इन कही
हौं लघुपतनक नाम काग हौं * यह सुनि हिर
न्यक हंसि करि बो ल्यो मोसों तोसों कैसी
मित्राई * अरे शत्रुसों मित्राई करनौं बिपत्त को
मूल है अरु हम तिहारे भक्ष तुम हमारे खान

हारे * याते जहां मित्राई. बूझिये तहां करौ * अनमिल संग न होय अरु जो होय तौ वैसे होय * जैसे स्यारने बंधायो हिरन कों अरु छुड़ायो कागने * काग बोल्यो यह कैसी कथा है तहां मूसा कहतु है

मगध देसमें चंपक नाम बन वहां अनेक दिन तें ऐक चंपाके रूखपर सुबुद्धि नाम काग अरु वाके तरे चित्रांगद नाम हिरन रहै * उन दोऊन में अति प्रीति ही * तहां हिरन कौ ऐक दिन काहू स्यार नें हृष्ट पुष्ट देखि आपने मन मे बिचाखौ कि यासों प्रीति करों तौ याकौ मांस खैवे कौं मिलै * यह बिचारि हिरन के पास आय बोल्यो मित्र तुम कुशलतें हो मृग कही * भाई तूको है पुनि इरवेतें उन कही* हौं क्षुद्रबुद्धि नाम स्यार हौं या बन में मित्र करि हीन निरबंधु अकेलो बसतु हौं आज तिहारौ दरसन पायो * मेरे जीमें जी आयो अब ति

हारे पायन तरि रहि हों * ऐसें बातन लगाय वाके संग लाग्यौ * सांझ भई तब कुरंग आप नें आश्रम कौं चल्यौ अरु वह ऊ साथ ह्वै लियौ निदान चलतु चलतु वहां आये जहां मृग कौ मित्र काग हो * स्यार कौं देखि काग बोल्यौ मित्र यह दूसरो तिहारे साथ को है * मृग कही यह क्षुद्र बुद्धि नाम स्यार है औ मोतें मित्राई कियो चाहतु है * काग कही हितू हेग परदेसी अनजान ते सों प्रीति न कीजियै * कह्यौ है कि जाको सील सुभाव आश्रम नजानियै तासों मित्रता नकरियै अरु नीति तो यों है कि वाकों आपनें घर में वास हू नदीजै नजानियै कैसो होय * जैसें अनजानें बिलाव कौं बास दै दीन गीध पंछी मार्‌यो गयौ * मृग बोल्यौ यह कैसी कथा है * तहां काग कहतु है

गंगा जू के तीर गृध्रकूट नाम परवत तहां ऐक पाकड़ कौ रूख * वाके खोउर में ऐक

अति बूढो गीध रहै * तहां और पंछी आपनो चुनि ल्यावं तामें तें थोरो थोरो गीध कों ह बांटि दें जासों वह जीवै अरु जब वे पंछी चुगवे कों जांय तब गीध उन के छौंनानि की रखवारी कियो करै * ऐक दिन दीरघकरन नाम बिलाव पंछीन के सिसु खैवे कों वा रूख पै चढ्यो * वा कों देखि वे छौंना पुकारे तब गीध नें उनकी पुकार सुनि खोंउर तें मूड निकासि कह्यो अरे यह को है तब बिलाव गीध कों देखि डरि आपनें मन मांहिं कहनि लाग्यो कि जो ह्यांतें भाजि हों तो यह पाछें दौरि मारैगो या सों या के पास गये ही बनें * यह बिचारि सरल सुभाव होय गीध के पास आय दंडवत करि बोल्यो तुम बडे हो * गीध कही तू को है अरु इत क्यों आयो है दूर रहि नातो अब ही मारतु हों * बिलाव कही स्वामी प्रथम मेरे आंवन को कारन सुनि लेउ तापा छै जो मन मानें सो करियै

गो * मैं ने ब्रह्मचर्य्य ब्रत पालन कियो है अरु चांद्रायन ब्रतकौ नेम है मेरै * अब हीं गंगा जू स्नान किये आवतु गेल में पंछीन के मुखतें तिहारी बड़ाई सुनी कि तुम ज्ञान चरचा में निपुन हौ * तातें तुम सों धर्म उपदेस सुनिवे कों आयो हों अरु बिचार ऐसो है कि जो कोऊ दिन ऐसे साध की संगति में रहों तो पवित्र होउं * कह्यो है (दोहा) हियतें मिटै असाधपन लहै अगाध विवेक * लालजु संगति साधकी हरै उपाध अनेक * मेरौ तौ यह मनोरथ है * या परमात्मा चाहै तौ मारौ * कह्यो है * गृहस्त कों ऐसो चाहिये कि बैरीको बैरी हू आपनें घर आवै तौ वाकी हू पूजा करै * जैसें वृक्ष कों कोउ काटनि आवै तौ वह वा हू पर छांह करै * यातें बूढे के घर बालक हू पाहुनों आवै तौ सेवा जोग है * अवस्था को बिचार कछु नाहीं * पाहुनों घर आवे ताकों सबतें बड़ो करि मानिये यथा योग्य

पूजा कीजै * जो और कछू घरमे नहोय तो मीठे बचन तृन को बिछौंना सीतल जल दे अति हित के मिलबैठे अरु इतनौं हू नकरै तो जाके घर तें अतिथि निरास जाय वाको धर्म लेजाय आप कों पाप दे जाय * यातें साध निर्गुन हू पर दया करतुहैं * जैसें चंद्रमा सब ठाम प्रकाश करै * गीध बोल्यौ बिलावकों मास तें अधिक रुच होतिहै अरु यहां पछीन के सिसु रहतु हैं तातें तोसों हों कछु कहिनाहीं सकतु पर जो तू यहां रहै तो इन छौंनानि तें कपट जिन कीजो * यह सुनि बिलाव नें भूमि में हाथ छुवाय कान हाथ धरि कह्यो * स्वामी मोतें ऐसी कबहू नहोय धर्म शास्त्र पढि सुनि मैं बिराग दसा गही है अरु जीव हिंसा बड़ो अधर्म है सब शास्त्रनि में वर्जित है * कह्योहै * साध कों ऐसो चाहिये कि परायो अपराध सहै सब कों पालै सो स्वर्ग लोक पावै यामें संदेह नाहिं क्योंकि धर्म सदा सहाय

होय अरु जाका मास खाइये सोंतो जीव ही
भीं जाय खानिवारे कों छिन ऐक जीभ ही को
स्वाद * तातें आपनें सो जीव सब काहू को जा
नियें * कह्यो है * जो बनके कंद मूल फल फूल
पात सों पेउभरे तो जीव हिंसा काहे कों करिये
ऐसें कहि प्रतीति बढाय बिलाव गीधके
समीप रह्यौ * कोऊ समय पाय द्वैचार पंछीन के
छौनानि कों पकरि ल्यायो जब वे सिसु पुकार
तब गीध बोल्यौ * अहो दीरघकरन इनबालक
नि कों तू काहे ल्यायो है * वाने कही स्वामी मेरे
बालक मोतें बिछरे हैं ताके हेतु इनतें दिन
कटी करतु हों * ऐसें कहि जद आपनों मनोरथ
साध्यो तद बिलाव ह्वांतें परायो अरु पंछियन
आय आपनें बालकनि के हाड़ चाम गीध के खो
डर समीप परे पाये तब उननि जान्यो कि हमा
रे छोंना इन पापी बिस्वासघाती चंडारि नें खाये *
ऐसें समझि सबनि मिल गीध कों जीवसों मा

रहौ * तातें हौं कहतु हौं कि बिनजानें मित्राई कबहू नकरिये

यह बात सुनि स्यार क्रोधकरि बोल्यौ * मित्र जादिन तुम हिरन सो मित्राई करी तादिन यह तिहारे कुल सुभाव कहा जानतु हौ जो मिल बैठ्यौ * यातें आपनौं परायौ कहनौं मूरखनि कौ काम है * पंडित कौं तौ सब आपनें हीहैं जैसें मृग हमारौ मित्र तैसें तुमहू अरु भलौ बुरौ तौ व्यवहार हीतें जान्यौं जातु है * हिरन कही मित्र बिबाद कौं करतुहौ जितेक मिल रहैं तितेक हीभले * काग कही भाई तुम जानौं * इतेक में सब आपनें आपनें उदर की चिंता कौं गये अरु सांझ कौं आय इकठे भये याही भांति वहां रहनि लागे * कितेक दिन पाछे स्यारनें हिरन कौं एकलौ पाय कह्यौ मित्र हौं तिहारे लये आछौ हरयौ कोमल जब कौ खेत देखि आयौ हौं तौ मेरी गैल चलौ तौ दिखा

ऊं * यारीति कपट करि वाकों कुमारग में ल्या यौ अरु वहू कुविसन कौ मार्यौ लोभ करि वाके संगही उठि धायौ * ऐसें नित वाके संग जाय जाय खाय खाय आवे एक दिन वाखेत के रख वारे ने हिरन कौं आवतु देखि फांद रोप्यौ ज्यौं ही यह चरवे कौं पैठ्यौ त्यौंही बझ्यौ तब मनमें कहनि लाग्यौ कि मित्र बिन मोहि या संकट तें को निकारि है अरु इत स्यार वाकों फंस्यौ देखि नाचि नाचि मनमें कहनि लाग्यौ कि मेरे कपट कौ फल आज मिलैगौ * जब रखवारो यांकौ मास भच्छ करैगौ तौ हाड़ चाम में जो मास ल पट्यौ रहैगौ सो हौं खाऊंगौ * यह तौ याविचार में नाचि कूद रह्यौ हो अरु मृग नें जान्यौं यह मेरोई दुख देखि व्याकुल ह्वै हाथ पांव पटकतु है पर यह नजान्यौं कि दानकौ लोभी नटुवा की भांति कला करतु है * आगे स्यारकी दसा देखि मृग कही भाई मेरे निमत्त तू ऐतौ खेद क्यों

करतु है * कह्यौ है आपदा में काम आवै सा हितू रनमें जूझै सा सूर दरिद्र में स्त्री की परिछ्या लीजिये दुखमें बंधु जाचिये * ऐसें मृगनें कह्यौ तद स्यारनें निकट जाय देख्यौ कि यह तौ कठिन बंधन में पर्यौ है तातें मेरौ मनोरथ शीघ्र सिद्धि होयगौ * ऐसें बिचारि बोल्यौ भाई यह जाल तौ तांत कौ है अरु मेरै आदितकौ उपास है सा दांतकरि कैसें काटौं जौ और ब्रत होय तौ कछु चिंता नाहीं पर रविके ब्रतकौ तौ यह बिचार है जो भंग होय ता सब पाछली काष्ठा निरफल जाय * यातें आजतौ यह बात है काल सकारे जो मोतें बनेगी सा करौंगो * ऐसें कहि वहांतें उसरि परै होय बैठ्या * इतेक में निसा बितीति भई अरु वहां सुबुद्धि नाम काग जाग्यौ * सो चिचाय करि कहनि लाग्यौ कि रात्रि मित्र मेरौ नाहीं आयौ अब कहूं खाेजौं यह कहि वहां ते चल्यौ आगे जाय देखै तौ जाल

मैं बक्तरह्यौ है * काग कही मित्र यह कहा है* उनकही हितू मैं तेरौ कह्यौ नमान्यौताही का यह फल है * पुनि काग कही वह तेरौ नयौ मित्र कहां है * इनकही वुह मेरे मासकौ लोभी ह्यांही होयगौ * बहुरि काग कही भाई साध जन आपनौं सौ सुभाव सब काहू कौ जानें अरु दुष्ट कौ जातीय सुभाव है जो वातें करै भलाई तातें वह करै बुराई * कह्यौ है दुष्ट बिन बुलाये आय पहिले पाय परै * पाछै कानावात्ती करै * हितकी रीति सौं प्रीति जनाय कपट करि कुमारग बतावै * अवसर पाय घात चलावै * जैसें माछर पीठ पाछै आय कान सौं लागि समें पाय डंकमारै* तैसें ही दुष्ट मनुष* तातें हौं कहतु हौं कि बैरी कौ विस्वास कब हू नकीजै * ऐसें हू कह्यौ है (कुंडलिया) बैरी बंदुआ वानियां ज्वारी चोर लबार * बिभचारी रोगी रिनी नगरनारि कौ यार * नगरनारि कौ

यार भूल परतीत नकीजे * सौ सौ सों हैं खाय
चित्त ऐकौ नही दीजै * कहि गिरधर कबिराय
घरै आवे अन घेरौ * हिनकौ कहे बनाय जानियै
पूरौ बैरौ

इतेक बातें सुनि मृग लांबी सांस लै
बोल्यौ जे झूठी बातें कहि और कौ बुरौ करतु हैं
तिन कौ भार पृथ्वी कैसें सहतिहे * ऐसें बतराय
रहे हे इतेकमें रखवारौ आवतु देख्यौ तब वायस
नें कुरंग तें कही अबतू आंखि फिराय मृतक
होय रहि * जब मैं पुकारौं तब उठि भजियौ *
यह सुनि उनि वैसें ही करी * रखवारौ आय
हिरन कौं देखि बोल्यौ यह तौ आपही मर रह्यौ
है याहि कहा मारौं * आगे वाहि मर्यौ जान
बंधन खोल कै चाहे कि वाहि उठावे त्यौं ही काग
बोल्यौ अरु हिरन उठि भाग्यौ तब रखवारे ने
खिस्यायकै लोठिया घाली सो स्यार के मूड में
लागी अरु लागत प्रमान ही मर्यौ * ऐसें और

हू ठौर कह्यौ है कि तीन दिन तीन रात तीन पक्ष तीन मास तीन बरष में पुन्य अरु पाप कौ फल मिलरहतु है

इतनी कथा सुनि लघुपतनक काग नें हिरन्यक चूहा सों कही मित्र जो कदाचित मैं तुम्हें खाऊं तो पेट हू नभरै यातें तुम से मित्र धरमात्मा साधु कौ बुरौ काहे करि हों क्यौं कि चित्रग्रीव सहित सब पंछी जब जाल में परे तब तुमनि सहायता करि उनके जीव बचाये * कह्यौ है कि आपने कार्य्य सिद्ध करि वे कौं सज्जन तें मित्राई करिये तो एक दिन काम आवै * तातें हों तिहारो पठंगो लियो चाहतु हों कि कब हू मेरे दुख में सहायता करिहौ या कारन आयो हों तुम और मत जानौं * पुनि मूषक बोल्यौ कि चंचल सों मित्रता कबहू न कीजै (दोहा) कागरु भैंसा कापुरुष आन भेंड मंजार * इन पांचनि के बिस्वास तें आपुनि जै

[illegible] न सबनि कैां बिस्वास कब हू न करियै * [illegible] मिल्यौ रहै ताके हितपर नभूलियै * कह्यो है * कि कसौ हू तातैा पानी हाय पर अग्नि कैां बिन बुझाये नरहै * निबल सबल नहाय अन मिल बात कबहू नमिलै * जैसें पानी में गाडी अरु भूमि पर नाव नचलै * पुनि ऐसें हू कह्यो है कि स्त्री तें मर्म की बात नकहियै जो कहियै तो बिरोधनकरियै करियैं तो जीवन की आस नराखियै * कोऊ ऐसें हू कहतु है (कुंडलिया) सांईं ये नबिरुद्धियै कबि पंडित गुरु यार * बेटा बनिता पैारिया यज्ञकरावनहार * यज्ञकरावन हार राज मंत्री जो होई * बिप्र परोसी बैद आप कैां तपै रसोई * कहि गिरधर कबिराय यहै कैसी समुझाई * इनते रह तें तरह दियै बनि आवै सांईं * बहुरिकागकही प्रीतम जो तुम कह्यो सो सब मैं सुन्यैां पर मेरे यह बिचार नाहीं जो तुम तें द्रोह करैां अरु जो तुम मोसों प्रीति

नकरिहौ तौ तिहारे वार पर उपास करिकरि प्रान तजौं गो * सोहि राम लछमन जू की आन है * क्यौं कि असाधकी मित्राई थोरेई दिननि में टूटै जैसें माटी कौ पात्र फूटि कै नजुरै अरु साधकी प्रीति ऐसें है जैसें सुवरन कौ पात्र वेग नफूटै अरु जौ फूटै तौ फेरि संधै * औ कितेक सज्जन पुरुष नारियर की भांति रहतु हैं कि ऊपर तें तौ कठिन अरु भीतर कोमल * पुनि दुष्ट जन हू की वेर की सी रहत है कि ऊपर कोमल अरु भीतर कठोर * तातें सज्जन अरु दुष्ट जन सुभाव ही तें जान्यौ जातु है कछु रहन तें नाहीं अरु पवित्र दाता सूर संकोची स्नेही निर्लोभी सत्यवक्ता * साध होतु हैं असाध नहींय * यासों तुमही कहौ कि साध जन पाप को न प्रीति करे * याफूपकी बातें सुनि हिरन्यक मूसा बिलतें बाहर निकस बोल्यौ कि तेरे बचन सुनि मैं अति सुख पायौ * जैसें कोऊ

लूत्र को ... यौ स्नानकरि चंदन सब अंगपर चढ़ाय शीतल होतु है तैसे मेरौ हियौ ठंढौ भयौ * कह्यौ है छः प्रकार तें प्रीति बढ़ति है * लैवौ दैवौ गुह्यकहिवौ सुनिवौ खैवौ खवायवौ * अरु ये स्नेह के दूषन हैं * सदा मांगवौ अप्रिय बचन कहिवौ मिथ्या भाषवौ चंचलता अरु जुआ सो तो में ऐकहू नाहीं * यासों हौं तेरौ सुबिचार देखि प्रसन्न भयौ आजतें तू मेरौ मित्र है * इतनी बात कहि कागकौं द्वार पर बैठाय मूसा बिलमें गयौ अरु ह्वांतें कछु खैवेकी सामग्री ल्याय खवाय आपहू वाके पास बैठ्यौ * ऐसें वे दोऊ ह्वां रहनि लागे * ऐकदिन काग कही * भाई मूसा या ठौर तौ अति कष्ट सों अहार जुरतु है यासों वहां चलौ जहां बहुत चुगौ सुखतें खैवे कौं मिलै * पुनि मूषक बोल्यौ मित्र कह्यौ है कि जो सयानौ होय सो आगलौ पाय धरि पाछलौ पग उठावै * तातें प्रथम ठौर बिचारौ तापाछै

ह्यांतें चलौ * वायस कही बंधु मैं ने ताकी ठाम बिचारी है कि दंडकारन्य बनमें कर्पूर नाम सरोवर तहां मंथरक नाम कछुआ मेरो मित्र है सो बड़ो पंडित धर्मात्मा है * कह्यो है औरन के धर्म उपदेस दैंन कौं सब पंडित हैं पर आप धर्म मारग में दृढ राखैं ते बिरले जन होतु हैं * तातें मित्र वह हम कौं भली भांति राखि रक्षा करि है * कह्यो है * सुनौं जा देस में आपनी बड़ाई मित्र विद्या की प्राप्ति सुसंग गुन विचार अरु तीरथ हू नहोय तौ वहां बसिवौ उचित नाहीं * मूषक कही हितू व्हां मोकौं हू साथ लै चलो * ऐसें बतराय दोऊ कछुआ पै गये इन्हें देखि कच्छप बोल्यौ मेरो मित्र लघु पतनक आयौ * इतनौं कहि आगू बढि सिष्टा चार करि आदर सों पाय पखलाय आसन पर बैठाय पूजा करनि लाग्यो तब कौआ बोल्यौ मित्र याकी पूजा बिशेष करि करौ * यह बड़ो धर्मात्मा

हिरन्यक नाम मूसा सब चूहन कौ राजा है याके गुनकी स्तुति करिवे कौं मेरौ मुख नाहीं * जौ सहस्त्र मुखतें शेषनाग जू कहैं तौ कहिसकैं * इतनी कहि चित्रग्रीव की सब कथा सुनाई तब मंथरक नें वाकी पूजा करि पूछ्यौ * आपुकौ वास कहां अरु ह्यां आवनौं कैसें भयौ * तब मूसा कहनि लाग्यौ चंपानगरी में सन्यासियन कौ मठ तामें चूराकरन नाम सन्यासी रहै सो जो भिक्षा मांगि अन्न ल्यावै वह ऊंचे आरा में राखै * वा अनाज कौं हौं कूदिकूदि खाऊं * कितेक दिन पाछै वाकौ मित्र बीनाकरन नाम सन्यासी तहां आयौ चूराकरन वासौं बात करै अरु लकरी धरती में खरकावै * तब बीनाकरन कही तू जो मेरी बात नीकै चितदै नाहीं सुनतु सु तेरौ मन कहां है * पुनि उनि कही गुरुभाई हां तौ तेरी बात हियौदै सुनतुहां पर यह निगुरौ मूसा मेरी भिक्षा कौ अन्न सब खातु है * मोहि

दुख देतु है याहि लालच लाग्यो भाईयाकौ कछु उपाय करौ * बीनाकरन बोल्यौ याकौ कछु कारन है ज्यौं ऐक तरुन स्त्री नें बूढे पुरुष कौ आलिंगन चुंबन करि जारकौं छिपायो त्यौं यह मूसा हू बिन कारन नाहीं कूदतु * चूराकरन कही यह कैसी कथा है * पुनि बीनाकरन कहनि लाग्यौ

गौड़ देसमें कौशंबी नाम नगरी तामें चंदन दास ऐक बनियां * उनबृद्ध अवस्था में धनके मद सौं लीलावती नाम और महाजन की बेटी ब्याही सो कामकी अधिकाई तें थोरेई दिननिमें जोबनवती भई * जब वह भर्त्तार वाके सुख कौं नपूजे तब वाहि अनखांवनौं लागै * जैसें बिरहिनि कौं चंद अरु घाम के तौंसे कौं सूरज न सुहाय तैसें तरुन स्त्री कौं बूढो स्वामी हू न भावे क्यौं कि बृद्धकौं दर्प कहां * कह्यौ है ज्यौं बालक कौं औषध नरुचे त्यौं वह हू वाहि नीकौ

नलागै पर दूढरा वातें अधिक प्रीति करै * पुनि
ऐसें हू कह्यौ है न उाकरा भोग कर सकै नछांडि
सकै चाटनु चूमनु रहै जैसें बिना दांत कौ कूकर
हाड़ पाय नखाय न छांडै * जब वाकी इच्छा
पूरन नभई तब वह बनियां की बेटी लीलावती
कुलकी मर्य्योद छांड़ि धर्म कौ भय नाखि लोक
लाज तजि जोबन की अधिकाई सौं ऐक और
बनियां के पुत्र तें बिभचार करनि लागी अरु
कामातर होय पिता के घर बसै यात्राकौं जाय
भर्त्तार के आगै और सौ बतराय * कह्यौ है जो
नारी पति के साक्षात और पुरुष सौं बातें करै
सो निस्संदेह परकीया होय * कहतु हैं इतनी
भांति सौं परकीया होति हैं * बाल होय जा
कौ पति बृद्ध होय कुरूप होय बिदेस होय
अशक्ति होय पासनरहै हित नकरै असंतानहोय *
नारी इतनी भांति बिभचारनी होति हैं अरु मद
पीवै कुसंग में बैठै पतिके औगुन और सौं भाषै

घर घर डोलै अति सोवै नित तन मांजे सदासिं गार करति रहै रात्रपरधाम बसै * ये नारीन के दूषन हैं अरु जिनकै सयान नाहीं ढिठाईनाहीं और पुरुष सों न बोलें लाजबहुत * तेस्त्री पवित्र जानिये * कहत हैं * नारी घृत समान अरु पुरुष अग्नि सम तातें इन कौ संग भलौ नाहीं * पुनिकह्यौ है * बाल अवस्था में पिता रक्षाकरै तरुनाईमें पति रखवारी करै बृद्धपनमें पुत्र सावधानीतें राखै तौ स्त्री कौ धर्म रहै * नातौ नष्ट होय * आगे ऐक दिन वह लीलावती बनियां के पुत्र साथ आपनें घरमें आनंद करि रही ही यामें वाकौपति बाहरतें आयौ * ताहि आवतु देखि बेगही खटिया तें उतरि सनमुख धाय आलिंगन कियौ * वाके देखिवे कौं तौ है आंख ही पर ऐक सों दीसतु नहो अरु जासों दीसतु है तापै चुंबन कौ मिस करि उनि मुख राख्यौ औ जार कौं बाहर निकारि दियौ * कह्यौ है *

कि जो वृहस्पति नें विद्या पढै पर उत्पात की ठांव वाहू की बुद्धि स्थिर न रहै अरु कछू न बनिआवे सो नारी छिन ही में उपाय करै * आगे लीलावती कों आलिंगन करति देखि ऐक कूटनी नें कारन विचारि वाहि उाढ्यौ अरु कह्यौ ऐसौ काम फेर जिनकीजो * तातें मूसा के कूदवे कौ कारन मैं जान्यौ कि याके बिल मैं माया है क्योंकि धनबिन बल नाहीं होतु * कह्यौ है (दोहा) कनक कनक तें सोगुनी मादकता अधिकाय * वह खाये बौरातु है यह पाये बौराय * एसें कहि सन्यासियन मिलकै मेरे बिल तें सब धन काढिलियौ * ताके दुख तें हौं बलहीन भयौ अरु मनमें उत्साह हू नाहीं रह्यौ क्योंकि देहमें जो बल हर्ष होतु है सो माया तें अरु धनहीन तें कछू नबनें * कह्यौ है * धनहीन पुरुष संसार में मृतक समान है * जब द्रव्य हीन भयो तब निषलाई तें मोपै चल्यौ नजाय * पुनि चूरा

करन सन्यासी मोहिदेखि बोल्यो कि यह तूषक अब सीधो भयो * जैसें ग्रीषमऋतु में नदी बल हीन होतिहै तैसो व्है गयो * कहतु हैं द्रव्य हीन की मति स्थिर नरहै जापैधन सोई बुद्धिवान पंडित ज्ञानी दानी बली चतुर कुलीन गुनी है अरु पुत्र बिन घर सून्य बिद्याबिन हृदै औ दरिद्री कौं संसार सूनौंलागतु है पुनि देखो धनगये कैसो हू सुरूप होय पर कुरूप व्है जातु है * ऐसी बाते वा गुसांई की सुनी तब मैं ने आपनें मन मांहिं विचार्‌यौ कि अब यहां रहनौं जोग नाहीं * कह्यौ है (दोहा) मंत्र मैथुन औषधी दान मान अपमान * मर्म द्रव्य गृहछिद्र ये प्रगटन लाल बखान * जो कहिये तो मिथ्या आपनों भर्म गंवैये * जब देवता असंतुष्ट होतुहै तब जो उद्यम करै सो निर्फल जाय * अहंकारी कौं है बात जैसें धतूरा को फूल कै तो भूमि पर्‌यौ सूखै कै महादेव के माथे चढै * तातें भिक्षा उपाय करि जीवौ

जोगमा [illegible] * भूपन तें मागिवो औ मरवैा समान है (कवित्त) मान सनमानकैा पयान होतु पहलेही यद्यपि निपट गुनी गिरहू तें गरुवैा * कहै कवि देव बारबार जस उच्चरतु चुटकी देतु लागे कुट कीतें करुवैा * अति ही अजान वाहु तऊ न न थोरो दीसै मनमांहि लसै जैां हिउारे का सो मरु वैा * तृनहू तें तूल हूतें फैन हूतें फूल हूतें मेरे जान सब हीतें मागवैाहै हरुवैा * पुनि चूरा करनतें बीनाकरन कहनि लाग्यैा कि पराधीन भोजन * द्रव्यदे मैथुन * बिद्याकरि हीन * प्रदेस कैा बास * कायारोगी * पराये घर सों नो * ऐसे मनुष कैा जीवन मरन समान है * कह्यैाहै * लोभ तें चित्त उलै कष्टपावै मरनहोय लोक परलोक जाय * जब वा गुसांई नें ऐसे बोल कहे तब मैं नें बि चार्‌यैा कि हों लोभी असंतोषी आत्मद्रोही हों तातें मेरी संपति गई अरु संतोषी की संपति कबहू न जाय * जे संतोष करि अघाने हैं तिन कैां

जैसे सुख है तैसौ असंतोषी कौं न... कह्यौ है जिन तृष्णा नराखी काहू की सेवा नकरी अधीन बचन नभाषे बिरह की पीरनसही अधीरता न की ऐसे पुरषनितें सो जोजन धन दूर रहतु है अरु संतोषी कौं हाथकी वस्तु कौहू आदर नाहीं* ऐसो बिचारकै हौं निरजन बन में आयौ * तिहा रौ आश्रम स्वर्ग समान पायौ * कहतु हैं यह संसार बिषयकौ रूख है यामें द्व फल मीठे कहतु हैं एकतौ काव्यरस दूजौ साधकौ संग * इतेक बातें सुनि मथंरक कछुआ बोल्यौ मित्र धनमें बड़ौ दोष है * एकतौ अनेक दुखपाय इकठौ कीजै दूजै प्राननें हू यत्न करि राखिये ऐसौ धन काहेकौ भलौ * कह्यौहि * जे आपनौं सुखछांडि परायेलये द्रव्य उपजाय राखें ते ऐसें जैसें मोटि या मोटबाहिमरैं अरु भोग औरही करैं * ऐसें तौ सब धनवान ही कहावैं क्यौं कि दान भोग में तौ नाहिं * यातें दरिद्री औ धनी समान

पर धनवान कौं ऐक और दोष कि वाहि गये कौ सोच सो निर्धन कौं नाहीं * पुनि कह्यौ है * चार बात संसार में आप मनुष तें हौंनी कठिन हैं * प्रिय वचनसहित दान * गर्व बिन ज्ञान * छमासमेत सूरता * त्याग लिये धन * याते धर्म कौ संचय करिये अति लोभ न करिये * जैसें ऐक स्यार आधिक लालच करि मार्यौ गयौ * हिरन्यक बोल्यौ यह कैसी कथा है * कछुआ कहनि लाग्यौ

कल्यान कटक नगर में भैरव नाम व्याधी सो ऐक दिन विंध्याचल के वनमें गयौहो * सो व्हांतें ऐक मृग मारि कांधे लियें आवतु हो * गैल में ऐक सूकर आवतु देखि यानें लोभ करि वापै बान घाल्यौ सो सर तौ वाकै लाग्यौ पर मरतु मरतु वानें या हू कौं आय मार्यौ * इहिं बीच ऐक दीरघराव नाम स्यार क्षुधित ह्वै आय कढ्यौ अरु इन तीननि कौं दां

परे देखि विन आपनें जी मांहिं विचारयौ कि अहार बहुत पायौ याहि अनेक दिन लौं खाऊं गौ अरु आपनी काया पुष्ट करोंगौ * यह बिचारि वह स्यार बधिक के पास जाय ज्यौं पहिले धनुष की जेह खानि लाग्यौ त्यौं हीं जेहटूटि छोर छूटि वाके कपाल में लाग्यौ अरु ततकाल प्रान देह तें निकरि भाग्यौ * जंबुक जीव सों गयौ मांस सब व्हांहीं धरयौ रह्यौ * तातें हौंकहतुहौं कि अति लोभ करि संचय नकरिये अरु जो धन पाय नखाय नदेय ताकौ द्रव्य जौलौं जीवै तौ लौं रहै मरे पर वाके धन जन के औरही गाहक होतुहैं * जीवतु भर देखि देखि मनरंजन करै * मरै पै वाके काम कछुनआवै * यातें खाइयै लुटाइयै सोई आपनौं क्यौं कि यामें स्वारथ परमारथ दोऊ रहतुहै

इतनी बात कहि पुनि कच्छप नें मूसा सों कह्यौ कि अब तुम गये द्रव्य कौ सोच

तिनकरो क्यों कि जो वस्तु पायवे जोग नहोय
ताकौ यत्न पंडित चतुर नाहीं करतु हैं * तातें
मित्र तुम चिंता मतकरो * कह्यो है * कि बिद्या
पढेतें सब पंडित नाहीं होतु हैं जे कृपावान
ते ई पंडित हैं * जैसें रोगी को रोग औषध कौ
नाम लियै नजाय * खाय तब ही जांय तैसें बिन
उद्यम * बिचार किये धनहू नआवै * आंधरे के
हाथ दीपक कहा करै * आपनी आंख की जोति
बिन प्रकाश नकरै * पुनि कह्यो है * दांत केस
नख नर स्थान छूटे तें सोभा नपावें अरु सिंह
सूर गज पान पंडित गुनवान औ जोगी ये जहां
जहां संचरैं तहां तहां आदर बढावैं * कहतु हैं *
जैसें कुआ में दादुर सरोवर में कंवल आपही
तें आवैं तैसें उद्यम किये लक्ष्मी हू आवै *
दुख सुख चक्र की भांति फिरतु है अरु जे पुरुष
साहसी सूर ज्ञानी उद्यमी हैं तिनकौं दुख नाहीं
व्यापत * कह्यो है कि कैसो हू पंडित गनी तपसी

सूर बंधु धनवंत होय पर लोभ किये अनादर ही पावै * गुनवान सुभाव ही तें बड़ौ जैसें कंचन को आभूषन जो कूकर के गरे बांधैं तो हू सुहाव नों लागै * तातें हों कहतु हों कि धन को सोच नकरिये क्यौं कि जब माता के गर्भ में बिधाता बास देतु है ताके प्रथम ही दूध स्तन में प्रगट करतु है औ पाछैं जन्म होतु है * ऐसौ बिचार यै (दोहा) जिन तोतें हरये किये स्याम काग हंस सेत * मोर विचित्रजु रंग किये सो चिंता करि देत * अरु सुनौं धन में ऐते दुख हैं * उपजतु राखतु जातु औ बढ़ुत बढे हू * धन सुख कब हू नदेय * यातें ज्यौं उपजै त्यौं दीजै खाइये तौ ही भलो नातो जैसें मांस कों ऊपर राखे पंछी खाय भूमि में स्यार कूकर पानी मांहिं कच्छ मच्छ माटी मांहि कीरा कीरी खांय * तैसें धन कों चार भय * राज भय अग्नि भय चोर भय दुष्ट भय * अरु ता हू में यह बड़ौ

दोष कि माया के लोभतें सेवक होयअधीनता करै पर भावी काहू सों नटरै * यासों प्रीतम तुम हमारी साथ अब जिन छांडो जन्म भर यहां ही रहो * कह्यो है संतोष करि रहनों दानदैनौंक्रोध नकरनों ये साधके लच्छन हैं असाध तें नहोंय * इतेकु सुनि लघुपतनक काग बोल्यो अहो मित्र मंथरक तुम कों धन्य है अरु आश्रम के जोग महंत हो * आप दा में उद्धार लेतुहो * ऐसें जैसें दहदल में परे हाथी कों हाथीही काढै अरु संसार में तेई नर स्तुति करिवे जोग हैं जे पराये दुख में सहाय ता करैं * जिन के द्वारतें सरनागत निरास न जाय * जाचक विमुख नफिरै * इतनी कहि वे तीनौं वा ठांव सुख सों खातु पीवतु क्रीड़ा करत आनंद सों रहनि लागे * ऐक दिन तहां चित्रां गद नाम मृग भेरही व्याधी को डरायो आयो ताहि आवतु देखि मंथरक जल मांहिं पैठ्यो

मूसा बिल में धस्यौ काग रूखपर उड़ि बैठ्यौ अरु वानें दूरलौं दृष्टकरि देख्यौ कि याके पाछे औरतौ कोऊ नाहिं * यह अकेलोई आवतु है * तब काग बोल्यौ भाई कछु भय नाहिं सब निकरि बैठो * यह सुनि वेऊ निकसि आये औ तीनौं मिल बैठे * हिरन इनके पास आयौ तब मंथरक बोल्यौ मित्र तुम कुशल क्षेमतें नीके आये * कह्यौ है * उत्तम पुरुषनि कौ यह धर्म है घर आये कौं पहिलै तौ कुशलात पूछै पुनि आदर करि बैठावै * फेरि अति सनमान करि भोजन कौं पूछै * यह उत्तम जनकौ व्यौहार है * इतनां पूछि पुनि कह्यौ अहो मित्र इत आवन तिहारौ कैसें भयौ * मृग कही * हौं व्याधी कौ डरायौ आयौ हौं अरु तुमतें मित्राई कियौ चाहतु हौं * हिरन्यक कही हम तुम तौ सहजही मित्र हैं औ परंपराय तुमतें हमतें मित्राई चली आवति है * कह्यौ है जो आपदा में राखै सो तौ सदाही कौ

मित्र है * तुम इत आये सो भली कीनी आपनें घरतें यहां नीकी भांति रहिहो * यह बात सुनि कुरंग नें अहार कियो अरु पानी पी रूख तरें बिसराम लियो * पुनि मंथरक बोल्यैा मित्र तुम कह्यैा कि हैां व्याधी के डरतें आयो सो या निर जन बन में व्याधी कहां * हिरन कही * कलिंग देसको राजा रुकमांगद सर्व दिस जीत चंद्रभागा नदीके कांठे आय उतरह्यैा है अरु सकारें इत आय या कर्पूर सरोवर में जारि डारि मच्छ कच्छ पकरिहै * यह बात हों धीवर के मुखतें सुनि आयो हों तातें यहां रहनैां भलो नाहीं * कह्यैा है * कष्ट आवतु देखि दूरतें टारिये * मैं तो यह कह्यैा पर अब तिहारी बुद्धि में आवै सोकरो * मंथरक बोल्यैा हों और सरोवर में जाऊं तब काग औ मृग नें कह्यैा कि पानीके जीव कैां पानी को बल ऐसें है कि जैसें राजा कैां आपनें राजको * पुनि हिरन्यक मूसा बोलिउठ्यैा

कि भाई तुमनौ बात कौ भेद न समझ ऐसौ विचार करतु हौ जैसौ ऐक बनियां के पुत्र नें अनजाने विचार कियौ अरु पाछै आपनी स्त्री कों देखि दुख पायौ * मंथरक कही यह कैसी कथा है * तब मूसा कहतु है

बीरपुर नगर वा कौ बीरसेन नाम राजा * ताकै पुत्र भयौ * जाकौ नाम तुंगबल धरयौ * जब वह सामर्थ भयौ तब राजानें राज सुत कौं दयौ * आप हरिभजन करनि लाग्यौ औ राजकुमार राज * ऐक दिन वह राजपुत्र देवदरसन किये आवतु हो वानें काहू बनियां की स्त्री तरुनि अति रूपवती गैल में देखी * वा कौ रूप चाहि यह काम कौ सतायौ निज मंदिर मांहि आयौ अरु वह लावन्यवती हू राजकुमार कौं देखि कामातुर होय आपनें धाम कौं गई कह्यौ है * स्त्रीयन कै ना कोऊ प्रिय औ ना अप्रिय जैसें बनमांहि गैयां नये नये हरे हरे

तृन चरैं औ मन संतुष्ट करै * तैसें जुवती हू नवीन नवीन नर चाहैं * पुनि राजकुमार नें एक दूती बुलाय वाकों आपनी अवस्था जनाय वाके निकट पठाई * वानें जाय राजपुत्रकी सब अवस्था सुनाई तब उनि कह्यौ हों तौ पतिव्रता हों * अरु नारी कौं ऐसो कह्यौ है कि बिन स्वामी की आज्ञा कछु काम नकरै यातें जो मेरौ भर्त्तार कहैगौ सो मैं करौंगी * कुटनी नें कह्यौ * यह तैं भली कही हों ऐसें ही करि हों * इतनौं कहि दूती राजपुत्र पै आई अरु वाकौ संदेसौ कह्यौ * राज कुंवर कही यह कैसें ह्वै है * बहुरि कुटनीकह्यौ महाराज कछु चिंता जिन करौ उपाय करि हों कह्यो है * जो कार्य उपाय तें होय सो बलतें न होय जैसें स्यारनि उद्यम करि गज कौं कीच मांहिं फंसायकै मार्‍यौ * राजपुत्र कही यह कैसी कथा है तब दूती कहति है *
ब्रह्मारन्य बनमें एक कर्पूरतिलक नाम हाथी

रहै * ताहि देखि सब जंबुक मतौ करनि लागे कि काहू प्रकार तें या गज कों मारिये तौ चौ मासे भर खैवे कौं अहार मुकतौ होय * यह सुनि तिन में तें ऐक वृद्ध स्यार बोल्यौ * या हाथी कौं हौं युक्ति करि मारि हों * इतनी कहि वह बूढौ जंबुक गज के निकट गयौ अरु धुर्तने मनमांहिं कपट करि वासों यों कह्यौ हे देव तुम मोपर कृपा करो * गज कही अरे तू को है अरु कहां तें आयौ है * इन कही सब बनबासियन मिल मोहि तुम पै पठायौ है औ बिनती करि कह्यौ है कि या बन में हमारो कोऊ राजा नाहिं बन के राजा तुम हौ सब गुन संयुक्त * कह्यौ है जो कुलवंत आचार प्रताप धर्म नीति संयुक्त होय ताकों राजा करिये अरु राजा नीको होय तौ धन स्त्री कौ संचय करिये * कहतु हैं * प्रानी कौं जैसो मेह कौ आधार तैसौ ई राजा कौ भरोसौ है क्यों कि राजा के भय तें सब धर्म रहै * दुर्बल रोगी दरिद्री पति

हू की पत्नी भूपाल के भय तें सेवा करे * यातें अब तुम बिलंब जिन करौ बेग चल्यौ * शुभ कर्म में ढील करनी जोग नाहीं * यह कहि स्यार हाथी कों ले चल्यौ * अरु गज हू राज पद के लोभ कौ मार्‌यौ वाके साथ व्हैलियौ * आगे आगे स्यार पाछे पाछे कुंजर ऐसें दोऊ चले जापि उँ मांहिं बारषा की दहदल ह्वै रही ही ताही गैल वह वाकों लैचल्यौ * आगे जाय हाथी दीमें फंस्यौ तब बोल्यौ मित्र अबहों कहा करों स्यार कही मेरी पूंछ पकरि चल्यौ आव यों सनाय पुनि जब देख्यौ यह या माहिं फंस्यौ तब इनकही तुम सोच जिन करौ हों तिहारे निकारिवे कों आपनें सजाती भाइयन कों टेरि ल्यावतु हों * इतनी कहि सब जंबुकनि बोलि लै आयौ अरु काढ़नि के मिस दांतनि तें वाकौ चाम फारि फारि खायौ गज चिचाय चिचाय कै मर्‌यौ * इतनों कहि दूती बोली महा राज उपाय तें कहा न होय यातें

अब हौं कहौं सो तुम करो * प्रथम तो लावन्य वती के पति कौं चाकर राखो पाछै जो हौं कहौं सो कीजो * यह सुनि राज कुमार नें लावन्यवती के भरतार चारु दंत कौं चाकर राख्यो *पुनि दूती नें राजपुत्र कौं सब छल छिद्र की बातें सिखाय दई तब उनि वाकी प्रतीति बढाय वाहि सब काम में प्रधान कियो * एक दिन राजपुत्र नें चारु दंत सों कह्यो कि आज तें लै हौं एक मास लौं श्री भवानी जू का ब्रत करि हौं तुम का हू सौभाग्य वती स्त्री कौं ल्यावो * आज्ञा पाय चारुदंत कहू असती स्वइच्छा चारनी कौं लै आयो तद राजपुत्र नें पवित्र होय वाहि ऐकांत लै जाय पायपख लाय भोजन करवाय केसर कपूर चंदन सों चरचि वस्त्र आभरन पहिराय अति आदर मान तें विदा कियो * तब गैल में जाय चारुदंत नें लोभ करि वा नारी सों कह्यो कि या द्रव्य तें कछु मोहू कौं बांटिदे * उन कही मोहि राज कुमार नें

दयो है मैं तोहि क्यों बांटि देऊंगी * निदान वानें धन नदियो तब चारुदंत नें आपनें मन मांहिं बिचाख्यौ कि राजपुत्र तो नित ऐक महीना लौं इतनों धन देयगो यातें आपनी स्त्री कां क्यों नल्याऊं जु इतेक द्रव्य सें तमें न आपनें घर लैजाऊं * यौं बिचारि वह निज घर आय लावन्य वती सों बोल्यौ कि हे प्रिये राजकुमार इतनों धन नितप्रत देयगो जो तू जाय तो वह सब धन आपनें गेह मांहिं आवै * लावन्यवती बोली स्वामी हों तिहारी आज्ञाकारी हों जो तुम कहो सो मोहि प्रमान है * निदान लोभ के मारे वानें आपनी नारि राजपुत्र कों आनदई * पुनि राज कुमार नें वाहि देखि मन में कहो कि जाके मिलन की अभिलाषा ही सो तो आपमिली अब आपनों मनोरथ क्यों न पूरो करै * यह समझि निराला करि वानें आपनें मनकी आस पूजी अरु धनदै वाहि बिदा कियौ तब चारुदंत बनिया

निज मंदिर में जाय स्त्री को श्रृंगार छिन्न भिन्न देखि आपनी करनी औ करतूतनें आपही पछता यो (दोहा) अर्थन समझो बात को ग्रंथ नदी नौ मन्न * नगर लोग कें देखते भयो भांड महाजन्न * इतनी कथा कथ फेरि मूसा बोल्यो अहो मित्र मंथरक जो तुम आपनी ठौरतें अनत जाय हौ तो दुख पाय हौ * आगे ईंदुर की बात नमान मंथरक भयको मारो सरोवर छांडि बन कौं चल्यो अरु वे तीनौं हू वाके साथ है लये आगे जातही ऐक व्याधी आयो तिन कच्छप को पकरि बांध्यो * कहतु हैं * जब आपदा आवे तब सुख में दुख बढ़ावे कैसो हू बलवान बद्धि वान होय पर आपदा तें नछूटै * पुनि ऐसें हू कह्यो है * कि संपत में बिपत संजोग में बि योग लाभ में हानि गुन में दोष ज्ञान में गि लान मान में अपमान हांसी में बिषाद भलाई में बुराई ये सब समय पाय आपतें आप आय

घटति हैं पर भय औ आपत्य है सो प्रीति की कसौटी है याही में सज्जन अरु दुरजन जान्यौं जातु है औ यों कहवे कौं तौ सबही सब के मित्र हैं (दोहा) सुखमें सजन बहुत है दुख में लीने छीन * सोना सजन कसन कौं बिपत कसौटी कीन * आगे मंथरक कौं बंधो देखि वे तीनौं चिंता करनि लागे तद मूसा नें हिरन सों कह्यौ मित्र तुम पंग बनि बधिक के आगे है कढौ जब यह बधिक मंथरक कौं त्याग तिहारे पाछे भजि है तब हौं याके बंधन काटि हौं * काग बोले बहुरि तुम पराइयौ * यह बात मूषक नें सुनि कुरंग ने त्योंही करी * बधिक नें देख्यौ कि मृग लंगरातु जातु है याहि दारिकै पकरि लेउं * यों बिचारि व्याधी आप नौं सरबसु जल के तीर रूख तरै राखि हिरन के पाछे दौर्‍यौ त्यों मूसा नें मंथरक कछुआ के बंधन काटे वह नीरमांहिं गिर्‍यौ काग पुकार्‍यौ भाई भागौ परमेश्वर नें

काज सुधाखो * यह सुनत ही मृग चौकरी मारि परायो व्याधी निरास ह्वै उलटो फिर आयो * वहां देखै तो कछुआ हू नाहिं तब कहनि लाग्यो कि मोहि ऐसो करनों उचित नहो जो हाथ को छोरि और कों धायो * कह्यो है * अति लालच नीको नाहीं जैसो मृग को लोभ कियो तैसो हाथ आयो कछुआ खोय दियो * ऐसें पछताय व्याधी वहां तें गयो ये चारों मित्र तहां सुखसों रहे उन के मनोरथ पूरे भये

इतनी कथा कहि विष्णुशर्मा बोल्यो महाराज कुमार सुनों या कथा के सुनें तें सज्जन सों मित्र ता होय * मन में संतोष आवे घरमांहिं लक्ष्मी बाढे राजा राजनीति सों चले प्रजा की रक्षा करै * यह मित्र लाभ प्रथम कथा कही यामें जाकी रुचि होय सो कब हू ठगायो नजाय सदा निर्मल बुद्धि तें संसारके सब काज साधै * वक्ता श्रोता को श्री महादेवजू

कल्यान करैं * इति श्री कविलाल विरचिते राजनीति ग्रंथे मित्रलाभ नाम प्रथम कथा संपूर्णं

अथ सुहृद्भेद द्वितीय कथा लिख्यते

राजकुमारनि विस्नुशर्मा सों कह्यौ अहो गुरु देव मित्र लाभ की कथा तौ हमनि सुनी अब कृपाकरि दूजी सुहृद्भेद की कथा सुनाओ * तहां विस्नुशर्मा कहतु है कि महाराजकुमार पहिलै ऐक बरध औ बाघ सों प्रीति करवाई स्यारनैं अरु पाछै बरध कौं मरवायौ वाही बाघ सों राजकुमारनि कही यह कैसी कथा है तद विस्नु शर्मा कहनि लाग्यौ कि

दच्छिन दिसा में सुवर्ना नाम नगरी * तहां ऐक बर्द्धमान नाम बनियां * सो बड़ौ धनवंत हो * काहू दिन वानें ऐक और सेठ की संपत देखि

आपने मन में विचास्यो कि काहू भांति आरहू लक्ष्मी इकठी करों तो भलो * कह्यो है * आप नें अधिक बल द्रव्य विद्या देखि काकौ मन मलीन नहोय अरु ऐसें हीं आपनी संपत की बढवार देखि को न मन मांहिं अहंकार करै क्यों कि धनाढ्य कों सब कोऊ मानें * पुनि ऐसें हू कह्यो है * कि असाहसी औ आल सीन कों लक्ष्मी आप ही त्याग तिहै जैसें वृद्ध पुरुष कों तरुन स्त्री नचाहै तैसें तिन्हें लक्ष्मी हू * अरु जे आलसी होय संतोष करि घरमांहिं बैठरहैं तिन कौं बिधाता कबहू नबढ़ावै * कह्योहै * भग वान असाहसी पुत्रहू काहू कौं नदेय * बहुरि कहनु हैं कि अनपाई वस्तु को यत्नकीजै तो प्राप्त होय अरु वाकी चिंता नकरियै तो नमिलै * ऐसें विचारि बनियां पुनि मनमें कहनि लाग्यो कि जो धन पाय नखाय नउठावै * वह धनकौन काम आवै औ बल भये शत्रु कों नमारियै तो

या बल कों लै कहा करिये अरु विद्या पढ़ि धर्म न जानिये तौ वा विद्या तें कहा लाभ * पुनि सरीर पाय उपकार न होय अरु इंद्री न जीतै तौ सरीर सों कहा अर्थ * कह्यौ है थोरौ थोरौ उद्यम करै हू धन बाढ़ै जैसें बूंद बूंद जल करि घट भरै अरु बिन विद्या औ धन जो जन सांस लेतु है सो लुहार की धवनि समान जानियै * ऐसें सोच बिचार करि वर्धमान बनियां नंदक औ संजीवक बलध रथ मांहिं जोति बहुत धन द्रव्य लादि रथ पर चढि काश्मीर की ओर चल्यौ * कह्यौ है * सामर्थी कों कहा भार व्यापारी कों कहा बिदेस मीठा बोलै ताहि कौन परायौ * आगे अथवर गैल में चलत दुर्ग नाम महा बन मांहिं संजीवक कौ पांव टूट्यौ बरध गिर्‍यौ पाछार खाके * वाहि गिर्‍यौ देखि माहा जन कहनि लाग्यौ कि कोऊ कितेक उपाय करि मरै फल बिधाता के हाथ है * ऐसें बिचारि बरध कों वहां ही छोरि

बनियां आगे कौं चल्यो * बरध हां रह्यौ किनेक दिवसमांहिं वह हरे हरे तृनखाय निर्मल जल पी अति बलवान भयो अरु ऐक समय परमानंद करि दडुक्यो * वा ठौर ऐक पिंगल नाम बाघ राज करतु हो पर वाहि काहू नें राजतिलक न दयौ हो * कह्यौ है * आपनें बलकरि सिंह मृगराज ही कहावे * सो नाहर वाही काल जमुना तीर नीर पीवनि गयो * वहां जाय संजीवक के दडुकवेकौ शब्द सुनि मनहीं मन भैयमान होय पानी अनपिये ही आप नी ठाम आय बैठ्यो * तहां दमनक औ करटक द्वै स्यार रहैं * सो यह चरित्र देखि दम नक नें करटक नें कह्यो कि मित्र तुमकछू देख्यो जु आज यमुना तीर पे जाय बाघ बिनपानी पिये आपनी ठांव सुचिंतो होय आनिबैठ्यो * ताकौ कारन कहा * करटक कही * बंधु मेरो तो यह बिचार है कि जाकी सेवा नकरिये ताकी बात पूछेतें कहा प्रयोजन * कहतु है * जागांव नजानों वाकौ पैंडो

पूछवेते कहा काम * मोहितौ अब याकी सेवा करत हू लाज आवति है पर अहार के लोभतें करतु हं * कह्यौ है * जे सेवाकरि धनचाहतु हैं ते आपनौं शरीर परा ये हाथ बेचतु हैं अरु जे श्रीर के हेतु भूख प्यास घाम सीत बर्षा सहतुहैं तिन की तपस्या में खोट जानिये क्यों कि परा धीन परबस कौ जीवन मृतक समान है * कहतु हैं (कवित्त) दैनौं भलौ सुपथ कुपथ पै न ऊं न्नौं भलौ सूनौं भलौ भौंन पैनखल साथ करिये * संतन कौ लघु संग जडि कौ गुरु छांडि साधु कौ सहज श्रौ असाधु कृपा उरिये * थोरिये सरा फी नफा बहुत जुवाकौ छांडि परिकै सुसंगआप बलसोंसपरिये * हारि मानि लीजै पै न रारि कीजै नीचनि सों सरबस दीजै पैनपरबस परिये * मृतक कौं न कौं कहतु हैं कि जा सेवक कौ ठाकुर नचा है अरु कहै इततें उतजा बोलै जिन ठाढौ रह ऐसें अविज्ञा करि वाकौ मान मर्दन करै ... हू

मूरख धनके हेतु पराधीन रहै * जैसें वेस्या पर पुरुष के निमित्त सिंगार करै तैसें मूरख हू पढ़ि गुनि परायौ आधीन होय * यातें मेरे जान सेवक के समान मूरख जगत में कोऊ नाहिं * दमनक कही मित्र तुम यह बात जिन कहौ * कह्यौ है * बड़ौ जतन करि भलौ ठाकुर सेइयै जासों मन कामना पूरन होय छत्र चमर गज अश्व आदि सब लक्ष्मी के पदारथ मिलें जो न सेवियै तौ कहां सों पाइयै तातें सेवा अवश्य करियै * बहुरि करटक कही * हितू जो तुम कह्यौ तासों हमें कहा प्रयोजन * कह्यौ है बिन समझे बूझे काहू के बीच परै सो मरै जैसें ऐक बनचर मर्‌यौ * दमनक कही यह कैसी कथा है * तहां करटक कहतु है *

मगददेस में सुभदत्त नाम कायथ तिन धर्मारन्य बन में क्रीड़ा की ठौर बनावनकौ आरंभ कियौ * तहां कोऊ बढ़ई काठ चीरतु चीरतु वामांहिं

लकरी की कीलदै काहू काम कौं गयौ अरु ऐक बन कौ बानर चपलाई करतु करतु कालबस वाही काठपर कीलपकरि आय बैठ्यौ अरु वाके अंडकोष वा काठ की संधि मांहिं लटकि परे* ज्यौं उनि चंचलता सों युक्ति करि कील काढ़ी त्यौं काढ़त प्रमान अंडकोष चपे औ मर्‍यौ तातें हौं कहतु हौं कि बिन स्वारथ चेष्टा नकरियै* दमनक कही* मित्र जो प्रधान होय सो सब काम करै* सेवक कौं ऐसौ बिचारनौं जोग नाहीं* करटक बोल्यौ* भाई आपनौं काम छोरि और के काम में परनौ उचित नाहीं अरु जो परै तौ वैसें होय जैसें पराये काज में परि बिचारौ गदहा मार्‍यौ गयौ* दमनक कही यह कैसी कथा है* तब करटक कहतु है

वारानसी नगरी मांहिं कोऊ कर्पूरपाट नाम धोबी रहै सो तरुन स्त्री व्याह ल्यायौ वाके साथ ऐक दिन रात कौं क्रीड़ा करि सुख नीद मांहिं सोवतु हो*

वाकें घरमें चोर पैठे अरु ताके अंगना में ऐक गदहा औ कूकर हो सो गदहा चोरनि कों देखि कूकर नें बोल्यौ * अरे यह तेरौ काम है कि ठाकुर कों जगाय दे * उनिकही अरे मेरौ अकाज जिनकर तू जानतु नाहीं जु यह मोहि खिवेकौं नाहीं देतु सुनि * कह्यौ है * जबलौं ठाकुर पै आपदा नपरै तबलौं सेवककौ आदर हू नकरै * पुनि गर्दभ कही * सुन रे बावरे जो काम परे मांगे सो कैसो चाकर * उनि कही जो काज परे सेवक कौं चाहै सो कैसो ठाकुर * सेवक औ पुत्र समान है इनकौ पोषन भरन करनौं स्वामी कौं उचित है * गदहा बोल्यौ * अरे तू तौ पापी है जो स्वामी कौ काज नाहीं करतु अरु मेरौ नाम स्वामिभक्त है तातें जामें स्वामी जागि है सो उपाय करि हौं * बहुरि स्वान कही रे सूरज कौं पीठ दे सेइये अग्नि आगै धरि तापिये अरु स्वामी सों आगे पाछै शुद्ध भाव रहिये पर यह स्वामी

पैसो नाहिं अरु जो तू मेरे काज मांहिं पायधर गो तो मेरो मौन तोहि लागि है * वाकी वात सुनि गदहा व्हांतें उसरि धुबिया के निकट जाय कान सों मुंह लाय रेंक्यो तब वा रजक नें नींदसों चौंकि क्रोधकरि गदहा कों लुहांगियन मारयो वामार तें वह मरयो

तातें हों कहतु हों कि औरके अधिकार मांहिं कबहू नपरिये * हमारो काम तो यह है कि अहार खोजनों पै आज हमें याहू को सोच नाहीं क्यों कि काल्ह को मास बहुत धरयो है यातें हम अनेक दिन पेटभरि काढि हैं * दमनक कही * जो तू आहार ही के लिये सेवा करतु है तो यह भलो नाहिं * राजा की सेवा करनों सो तो स्वारथ परमारथ के निमित्त कि जाकी सेवा तें मित्र साधनि कौ उपकार करिये औ शत्रु दुष्टनि कों मारिये * यह मन में वासना रहति है केवल उदर भरन के लिये नाहीं सेवतु * कह्यो है * संसार

में जाके आसरे अनेक लोग जीवें तारी को जीवन सुफल है * सब सेवक समान नहांय सेवक सेवक में हू बड़ो अंतर है * जैसें ऐक पांच कोरी कों हू अकरो औ ऐक लाखनि तें हू नपा इये * कहतु हैं * घोरा हाथी काठ पाथर कपरा स्त्री पुरुष अन्न इनके मोल मोल में बड़ो भेद है * देखो कूकर चोरीई मास हाड़ तें लपक्यो पावै तो वाही माहिं संतोष करि रहै अरु सिंह आगें स्यार ठाढ़ो रहै तो हू वह वाहि छांडि गज कों ही मारै * तातें हों कहतु हों कि जे बड़े हैं ते बड़ोई काम करतु हैं * पुनि कूकर पूंछ हिलावै पेट दिखावै तब टूका पावै अरु हाथी स्थान बंध्यो केते जतन उपाय करि घने आदर सों अहार को ग्रास लेय * कह्यो है * जगत मांहिं ज्ञान पराक्रम जस अहंकार सहित ऐक घरी [illegible] हू भलो अरु मान रहित कागकी भांति [illegible] खाय अनेक दिन जियो तो कहा * जो आपनों

ही सेट पालि जियो तो वा मनुष औ पशु में कहा अंतर है * पुनि करटक कही * कछु हम तुम या राजा के सेवक नाहिं * बहुरि दमनक कही * भाई समे पाय मंत्री ह्वैबे को यत्न करिये बड़ो पाथर कष्ट करि उठाइये पै गिराइये सहज में औ आपनी प्रतिष्ठा राखिवे कों उपाय सदा करिये * पुनि करटक कही बंधु तुम कछु जानतु हौ कि सिंह आज काहे डर्यो * दमनक बोल्यो भाई यामें कहा जानवो है पंडित बिन कहे ही जाने अरु कहेतें तो पशु हू पिछाने पर जाकों जो भावे सो भलो * मेरे जान तो राजा की सेवा मांहि रहिये औ जब राजा पकारै यहां कोऊ है तब कहिये महाराज कहा आज्ञा होति है दास बैठ्यो है * वा भांति जद पुकारै तद याही रीति उतर देइ अरु जो कछू कहे सो सावधान ह्वै सुनि लिइ * कह्यौ नउक्तं * क्षिन भर साथ नछा... छांई की भांति लग ... करटक कही

हितू कह्यौ है अन ओसर नृपति के निकट जाय तौ निरादर होय * दमनक बोल्यौ तौ हू सेवक स्वामी कौं नछांडे * कह्यौ है * लोगनि के भय उद्यम औ अजीरन के डर भोजन नकर नौं कपूत कौ काम है * कैसौ हू अकुलीन मलीन विद्या हीन पुरुष राजा के समीप रहै तासौं हित करै * कहतु हैं * अग्नि स्त्री * राजा लता ये निकट वर्त्ती सौं लगचलतु हैं यामें संदेह नाहीं * करटक कही * तू राजा सौं पूछैगौ तुम कौं डरै * इनि कही प्रथम जाय हौं राजा कौं देखि हौं प्रसन्न है कै उदास * इनकही यह तू कैसें जानैं गौ * पुनि इनि कह्यौ * जो ठाकुर सेवक कौं दूर तें आवतु देखि प्रसन्न होय आपही तें बतराय निज सेवकनि मांहिं गनें * थोरी सेवा देखि बहुत कृपाकरै * दिन दिन आदर देइ तौ जानिये ठाकुर संतुष्ट है अरु जब राजा सेवक कौं आवतु देखि आंख चुरावै * औ दैवे कौं आजकालह करि

आसा बढ़ावै * काहू बात मांहिं चित न देइ * मन में औगुन काढ़ै तब जानिये राजा असंतुष्ट है * तातें तुम चिंता कछु जिनकरो मैं जैसें राजाकौं देखि हौं तैसी ही बातकरि हौं * कह्यौ है * जो सयानौं मंत्री होय सो अनीति में नीति औ बिपत्त में संपत करि दिखावै * बहुरि करटक कही भाई समय बिन बृहस्पति हू कहै तौ अपमान ही पावै मनुष की किन चलाई * पुनि दमनक बोल्यौ * अहो मित्र तुम जिनडरो हौं बिन औसर नकहि हौं * कह्यौ है * जब कोऊ कुमारगमें चलै तब वाकौ हितू होय सो बिनकहे नरहै औ समें असमें मंत्र नकहै तौ मंत्री काहे कौ क्यौं कि औसर पर ही बड़ाई पाइयतु है (दोहा)
समय चूक कै सकल नर फिर पाछै पछितात *
ना यह रहै न वह रहै रहै कहनि कौं बात * इतनी कहि फेर दमनक बोल्यौ * अब जो मोहि कहौ सो करौ * करटक कही तात आपनी भ[illegible]

जानौं सो करौ * यह सुनि दमनक पिंगल राजा के नेरे गयौ दंडवत करि कर जोरि सन्मुख ठाढ़ौ रह्यौ। तब राजा ने हंसि के कह्यौ * दमनक तू मोपास बहुत दिन पाछै आयौ * इतनौं कहि बैठायौ पुनि दमनक ने राजा की अंतरगति पाय वाकों भयमान जानि ऐसें कह्यौ कि पृथ्वीनाथ तिहारे हमारौ काम तौ नाहीं पर हम सेवक हैं हम कौं यह जोग है कि समय असमय आयौ चाहैं क्यौं कि ऐक समें दांत कान कुरेदबे कौं तृनहू कौ काम परतु है तातें सेवक बेला कुबेला काज न आवै तौ पाछै वह कौन काम कौ * यद्यपि बहुत दिन भये तुम मोसों कछु मंत्र नाहीं पूछ्यौ पर मेरी बुद्धि नाहीं घटी * कह्यौ है जो मनि पाय बांधिये औ काच सिर तौ हू काच सौ काच अरु मनि सो मनि * पुनि अपमान कियेहू जाकी बुद्धि स्थिर रहै सो पंडित * यासों महाराज तुम कौं सदा विवेक करनौं उचित है * संसार

में उत्तम मध्यम अधम तीन प्रकार के लोग हैं जाकौं जैसौ देखिये ताकौं तैसौ अधिकार सौंपिये अरु सेवक की सेवा बूझिये * जो सेवक की सेवा राजा नबूझै तौ सेवक मन मांहिं महा दुखी रहै * तातें महाराज आभरन औ सेवक जहांकौ होय तहां हीं सोभा पावे * अरु राजा मंत्री की बुद्धि तें चलै तौ अनेक सेवक आवैं * कह्यौ है अश्व शस्त्र शास्त्र बीन नर नारी ये सब भले के हाथरहैं तो भले रहैं औ बुरे के हाथ बुरे * पुनि कह्यौ है जो राजा सुबुद्धी पर कुमाया करै तौ वह याके निकट नरहै * जो सुबुद्धी राजा के ढिग न रहै तौ नीतिजाय नीतिगये लोग दुखी होंय * अरु भूपति मया करै तौ सबही मानें नीकी बात सब कौं सुहाय पै मीठौ बोलनौं महा कठिन है * इतेक बातें जब दमनक नें कहीं तब बाघ राजा बोल्यौ * [illegible] दमनक [illegible] हमारे मंत्री के पुत्र ह्वै कै हम [illegible] कबहू नआये

ऐसो तुम्हैं न बूझिये अब आवन कैसे भयो * दमनक कही कि महाराज हों तुम तें कछु पूछवे कौं आयो हों आप की अज्ञा पाऊं तो पूछों * सिंह कही दमनक तुम हम तें निसंदेह पूछो* पुनि दमनक बोल्यौ महाराज तुम पानी के तीर जाय बिन नीर पिये सुचित व्है आप के स्थान पै आय बैठे सो ताको कारन कहा यह कृपा करि मोहि कहौ तौ मेरे मनकौ संदेह जाय * उनि कही भाई मेरे मनकी बात काहू सों कहवे की नाहीं परतू मेरे मंत्री कौ पुत्र है यांतें हौंतोतें कहतु हौं तू काहू सों या बात कौं जिन कहियो * कि जब आज हौं जल पीवे कौं गयो तब ऐक अति भयानक शब्द सुन्यौं ताके भयकौ मार्यौ व्हां तें बगदि यहां आय बैठ्यौ हौं अरु जी में बिचार तु हौं कि या बनमें कोऊ महाबली जंतु आयो है तातें या बन तें अनत जाय बसियै सो भलो पर यहां रहनौं जोग नाहीं * यह सुनि दम

नक बोल्यो * महाराज कछु कहिवे की नाहिं * वह शब्द मैं नें हू जब तें सुन्यों है तब तें मारे भय के थरथर कांपतु हौं पर मंत्री कौं ऐसौ नचा हिये जु पहले ही ठौर छुड़ावै कै लरावै * औ राजा नि कौं यह उचित है कि आपदा में इतनें न की परिक्षा लै य* सेवक स्त्री बुद्धि बल कौं कि इनकी कसोटी विपत है * नाहर कही मेरे मन मांहिं अति संका है तब दमनक नें निज मनमें कह्यौ कि तुम कौं संका न होती तौ हम सौं काहे कौं बतराते ऐसें मन में समझ पुनि बोल्यो कि धर्मावतार जौलौं हम जीवत हैं तौ लौं तुम भय कछु जिन करौ हौं करटक आदि सब सेवक बलाय लेत हैं* नीतिमें ऐसौ कह्यौ है कि आपत्य के समय राजा आपनें सब सेवकनि कौं बुलाय. ऐक मतौ करि अधिकार सौंपै * इतनी कहि दम नक करटक कौं बुलाय ल्यायौ औ राजा सो [illegible] लायौ * पुनि राजानें इन दे[illegible]न कौं बागे पहि

राय पान दे वा भय की शांत कों बिदा किया * आगे उगर में जात करटक नें दमनक सों कह्यौ कि भाई तुम बिन समुझे राजा कौ प्रसाद लियौ सो भली नकरी कहा जानें हमतें वा भय कौ निवारन ह्वै सकै कै नाहिं * कह्यौ है * काहू की वस्तु बिन समुझे नलीजियै पर राजा कौ तौ प्रसाद विशेष करि नलीजै क्यौं कि जौ कबहू काज नहोय तौ राजा क्रोधकरै अरु नजानियै कहा दुख देय * ऐसें हू कह्यौ है कि राजा की दया में लक्ष्मी बसतु है अरु पराक्रम में जय क्रोधमें काल * औ सब देवतानि कौ तेज भूपाल में है तातें नर नरपति की आज्ञा मांहिं रहै तौ ही भलौ क्यौं कि प्रथ्वीपति मनुष रूप कोऊ बड़ो देवता है * बहुरि दमनक कही मित्र तुम चुपके रहौ या बात कौ कारन हम जान्यौ कि यह बरध के बोलवे कौ शब्द सुनि कै डर्यौ है * अरु बैल कौं तौ हम हू मारि सकतु हैं सिंह कौ वह

कहा करि है * पुनि करटक कही भाई जो ऐसीही बात है तो राजा सों कहिकै उन के मन कौ भय काहे न दूर कियौ * दमनक कही हितू यह बात प्रथम ही नरपति तें कही होती तौ हम तुम कों अधिकार कैसें मिलतौ * कह्यौ है सेवक स्वामी कों निचंत कबहू नराखै जो राखै तौ दधिकरन बिलाव की भांति होय * यह सुनि करटक कही यह कैसी कथा है तब दमनक कहतु है

अर्बुद परवत की कंदरा में एक महा बिक्रम नाम सिंह रहै * जब वह वहां सोवै तब एक मूसा बिल तें निकरि वाके केस काटै जद वह जागै तद बिल में भजिजाय * कह्यौ है छोटे शत्रु बडेनि तें नमरैं * वा मूषक की दुष्टता देखि बाघ नें निज मन में बिचाह्यौ कि या की समान कौ कोऊ ल्याऊं तौ यह माह्यौ जाय नतौ या के हाथ तें सोवन नपाय हौं * यह बिचारि गांव में

लाय एक दधिकरन नाम बिलाव कों अति आदर सों ल्यायौ अरु राख्यौ * वह हू वा कंदरा के द्वार पर बैठ्यो रहै अरु बिलाव के भय तें मूसा बिलसों बाहर न निकरै * सिंह सुख नींद सोवै यातें मूसा के डरतें बाघ बिलाव कौ अति आदर करै * आगे कितेक दिन पाछे एक दिन वा मूसा कों दाव पाय बिलाव नें मारि खायौ * तब सिंह नें मूषक कौ शब्द न सुन्यौं तब उनि मनमांहि बिचार्यौ कि जाके कारन याहि ल्यायौ हो सो काम तौ सिद्ध भयौ अब याहि राखिवे तें कहा प्रयोजन * बाघ नें ऐसें बिचारि वाकौ अहार बंद कियौ तब बिलाव वा ठौर तें भूख्यौ मरि मरि परायौ * यातें हों कहत हौं कि ठाकुर कौं कब हू निचलौ न राखियै *

इतनै कहि दमनक करटक कौं एक वृक्ष तरै ऊंची ठौर बैठाय केतेक जंबुक वा के निकट राखि आप एकलौ संजीवक

के पास जाय बोल्यो तू कहां तें आयो है * जब उनि आपनी सब पूर्व अवस्था कही तब इन कही या बन को राजा सिंह है तुम यहां कैसें रहि हो * पुनि भयमान होय ब्रषभ कही तुम काहू भांति मेरी सहायता करो * बहुरि दमनक नें आपनी घांतें वाहि निर्भय करि कह्यो कि मेरो बडो भाई करटक राजा को मंत्री है प्रथम उनतें तोहि मिलाऊं गो * पाछैं राजा तें हू भेट कराऊं गो * ऐसें कहि दमनक नें वा बलध कों करटक के समीप लैजाय वाके पायन पार्यो * तब करटक ने बैल की पीठ ठोकि कै कह्यो अब तुम या बन मांहिं अभय चरतु फिरो अरु काहू भांति की चिंता निज मन में जिन करो * ऐसें वाको भय मिटाय साथ लै राजपौर पर आय बैठे कह्यो है * बलतें बुद्धि बड़ी देखो बल बिन बुद्धि सों गज बस करतु हैं * पुनि संजीवक सों करटक कही अब तुम यहां बैठो हम राजा पै होय

आवैं तब तुम हू कों ले जांयगे * इतनौं कहि वे दोऊ सिंह पास गये औ प्रनाम करि कर जोरि सनमुख ठाढे भये * तब राजानें उनितें अति मधुर बचन सों पूछ्यौ कि जा कार्य के लये गये हे वाकौ समाचार कहौ * तहां दमनक हाथ जोरि नीचा मूंड करि कहनि लाग्यौ महाराज हमं वाहि देख्यौ सो अति बलवंत है पर हमारे सम आय वेतें वह आप सों मिल्यौ चाहतु है हम वाहि अबही लै आवतु हैं पै आप सावधान ह्वै बैठिये* वाके शब्द तें न डरिये शब्द कौ कारन विचारि ये जैसें शब्द कौ कारन बिचारि कुटनी नें प्रभु ता पाई * राजा बोल्यौ यह कैसी कथा है तब दमनक कहतु है

श्री पर्वत में ब्रह्मपुर नाम नगर अरु वा पहाड़ की चोटी पै ऐक घंटाकरन नाम राक्षस रहै सो वा नगर के निवासी सब जानें क्यों कि वाकौ शब्द सदा सुन्यौं करें ऐक दिन नगर में तें चार घंटा

चुराय शिर पर लिये जातु हो ताहि तहां बाघनें मारि खायौ अरु वह घंटा बानर के हाथ आई * तब वह बजावै तब नगर निवासी जानें कि राक्षस डोलतु है * काहू दिन कोऊ वा मरे मनुष कौं देखि आयौ तिन सबनें कह्यौ कि अब घंटाकरन रिसायकै नर खानि लाग्यौ * यह मैं प्रतक्ष देखि आयौ * वाकी बात सुनि मारे भय के नगर के सब लोग भजवे लागे * तबकराल या नाम ऐक कुटनी नें वा घंटा के बजवे कौ कारन जानि राजा सों जाय कह्यौ कि महाराज मोहि कछु देउ तौ घंटाकरन कौं मारि आऊं * यह सुनि राजानें वाहि लाख रुपैया दिये अरु वा के मारिवे कौं बिदा कियौ * तब वानें धन तौ निज मंदिर मांहिं राख्यौ अरु बहुत सी खैवे की सामा लै बन की गैल गही * व्हां जाय देखै तौ ऐक मरकट रूख पर बैठ्यौ घंटा बजावतु है वाहि देखि यानें ऐक ऊंचे पर सब सामा बिथ

हाथ दई * वह बंदरा देखनु ही ब्रच्छ तें कूदि वहां आयौ * पकवान मिठाई फल मूल देखि घंटा पटकि खैवे कों जों उनि हाथ चलायौ त्यों घंटा अलग भई तब यानें घंटा लै आपनी गैल गही* नगर में आय वानें वह राजा के हाथ दई अरु यह बात कही कि महाराज हों वाहि मारि आई यह सुनि औ घंटा देखि राजाने वाकी बहुत प्रतिष्ठा करी अरु नगर के लोगन हू वाहि पूज्यौ

तातें हों कहतु हों कि महाराज केवल शब्द ही तें न डरिये प्रथम वाकौ कारन बिचारिये पुनि उपाय करिये * यह तौ श्रीशिव जू कौ बाहन है औ तुम पार्वती के यातें वह तिहारौ आश्रम जानि निर्भय गाजत है * तुमकों वाकी आगता स्वागता करि सेवा करनी जोग है क्यों कि आज वह तिहारौ पाहुनौं है वाकी सेवा तें ईश्वर पार्वती प्रसन्न होंयगे * यह सुनि दमनक तें सिंह बोल्यौ कि

तुम सिष्टाचार करि वाहि मोतें मिलाओ वह तौ हमारो भ्राता है * पुनि दमनक नें संजीवक बरध कों पिंगल बाघ सों मिलायौ दोऊनि मिलि अधिक सुख पायौ * कछुक दिननि पाछै उन मांहिं अति प्रीति भई * आगे ऐक दिन सित करन नाम सिंह राजा कौ भाई तहां आयौ तब संजीवक नें यह टेरि सुनायौ कि महाराज आज तुम निजो मृग मार्‌यौ हो वा कौ मास कहां है * सिंह कही भाई करटक दमनक जानें पुनि संजीवक बोल्यौ कि महाराज तुम उन तें पूछो ता सही है कै नाहिं * बहुरि नाहर उत्तर दियौ कि हमारें यही रीति है * जो ल्यावें सो उठावें फेरि संजीवक बोल्यौ महाराज मंत्री कों ऐसौ न बूझिये कि जो आवै सो उठावै कै राजा की आज्ञा बिन काहू कों देइ यह नीति नाहीं * कह्यौ है * आपदा के अर्थ धन राखिये औ मंत्री ऐसौ चाहिये जो राजा के धनकौ संग्रह करै फेरि

उठावे बहुत गेरै * राजा को भंडार प्रान समान है * सब कोऊ धन के निमित्त राज सेवा करतु हैं *धनहीन भये घरकी नारी हू नमाने * और की तो कहा चली * या संसार मे धन ही की प्रभुता है जाके पास धन सोई बड़ो * ये प्रधान के दूषन हैं अति खरचै प्रजाकी रक्षा नकरै अनीति अधर्म करि भंडार भरै राजा के सन मुख झूठ बोलै तो अल्प दिननि में ही राज भ्रष्ट होय * क्यों कि बिन सोचे बिचारे काम करै तें काज कबहू न रहै * संजीवक नें जब यह बात कही तब सितकरन बोल्यो * भाई तें इन स्याम कों अधिकारी कियो सो भली करी पर हम प्राचीन लोगनि तें सुन्यों है * कि ब्राह्मन छत्री संबंधी उपकारी औ मित्र इन कों अधिकार नदीं दिये क्यों कि ब्राह्मन धन खाय तो राजा दंड नदेसकै * अरु छत्री जब बल पावै तब राज दबाय लेय * पुनि संबंधी अहा नमाने * उप

कारी सबकुछ जाने * मित्र राजा सम आप
कौं गने * ताते इन कौं अधिकार कब हू नदी
जिये * बहुरि ऐसें हू कह्यौ है कि चट प्रधान
कौं ततोरिये * सहज सहज निचोरिये जौं स्नान
कौ चीर * जद वानें याहि भरमाया तद या हू
के मन मांहिं कपट छायो * कहतु हैं * वेस्या का
की स्त्री औ राजा काकौ मीत (कबित्त) सांप
सुसील दयाजुत नाहर काग पवित्र औ सांचौ
जुआरी * पावक सीतल पाहन कोमल रैन अमा
वस की उजियारी * कायर धीर सती गनिका
मतवारौ कहा मतवारौ अनारी * मोतियराम
सुजान सुनौं किन देखी सुनी नरनाह की यारी *
पुनि राजा बोल्यो कि भ्राता तुम सांच कहतु हो *
ये दोऊ मेरौ कह्यौ नाहीं मानतु औ मोहि दुख
देतु हैं * बहुरि सितकरन कही भाई कह्यौ है
कि अहंकार तें जस जाय कुविसन तें ज्ञान
आलस्य तें धन कृपा बिन कुल औ लोभ तें

धर्म * पुनि ऐसें हू कह्यौ है (दोहा) आज्ञा भंग नरेंद्र की विप्रनि कौ अपमान * भिन्न सेज नारीन कौं बिना शस्त्र बध जान * अरु नीति तौ यों है कि पुत्र हू कह्यौ नमानें तौ राजा वाहू कौं दंड देय * पनि चोर अरु लोभी प्रधान तें प्रजाकी रक्षा करि पुत्र की भांति पालै अरु सुनि भाई आज मैं तेरौ अन्न खायौ है तातें हौं तेरे हित की कहतु हौं * यह संजीवक बडौ साध है शुभ चिंतक औ सुकृति की खान है * यातें आपनौं भलौ चाहौ तौ याहि अधिकारी करौ * यह बात राजा नें भाई की सुनि संजीवक कौं अधिकारी कियौ औ दमनक करटक तें अधिकार खोस लियौ * तब दमनक नें करटक तें कह्यौ * मित्र अब कहा करिये यह तौ हमारौई कियौ दोष है * जैसें चित्रलिखे कौं छूवत कंदर्पकेतनें औ मणि के लोभ तें महाजन नें अरु आपनी करतूतनें दूती नें दुख पायौ तैसें हम हू आप

नै किये कौ फल पायौ * पुनि करटक बोल्यौ यह कैसी कथा है * तब दमनक कहतु है

कंचन पुरमें बीर विक्रमादित्य नाम राजा हो * वाके सेवक ऐक नाऊकों मारनि लेचले * तहां कंदर्पकेतु संन्यासी अरु साहुनें वाहि देख्यो तब संन्यासी नें राजा के चाकरनि सों कह्यौ कि या नौआ कौ कछु अपराध नाहीं * सेवकनि कही याकौ व्यौरौ कहौ * पुनि संन्यासी बोल्यौ कि प्रथम मेरौ दोष मोहि लाग्यौ सो सुनौं * सिंहल दीप कौ जंबुकेतु राजा ताकौ मैं पुत्र हौं अरु कंदर्पकेतु मेरौ नाम है * ऐक दिन ऐक व्यौपारी मेरे नगर में आयौ अरु उत्तम पदारथ उनि मोहि आनि दिखायौ * जब मैं नें वासों पूछ्यो कि तैं ने यह कहांतें पायौ तब उनि प्रसंग चलायौ कि महाराज हम व्यौपारी लोग समुद्र के तीर बनज कों जातु हैं तहां बरस वें दिन सागर में तें ऐक वृक्ष निकरतु है तापै अति सुंदरि

नवजोबना रतन जटित आभूषन पहरें ऐक नाव का बैठी बैठी आछे आछे पदारथ भेज भेज देति है अरु महाजन बीपारी सब लेत हैं औ देस देस बेचत फिरत हैं * इन नी बात जब वानें मोसों कही तब मैं वाहि साथ लै समद्र तीर गयौ अरु वहां जाय वाहि देखत प्रमान समद्र में कूद्यौ* कूदत ही मोहि ऐक कंचन कौ मंदिर दृष्ट आयौ तद हों हू उठि वामांहिं धायौ * मोकौं देखि वानें ऐक दूती पठाई सो चली चली मेरे ढिग आई मैं ने वासों पूछ्यौ यह को है उनि कही यह कंदर्पकेल विद्याधरनि कौ राजा ताकी पुत्री है अरु रतनमंजरी याकौ नाम है * यह बात सुनि मैं ने आगे बढि वाके निकट जाय अधिक सुख पायौ * तद उनि कह्यौ स्वामी स्व इच्छा तें तुम यहां रहौ पर यह चित्रलिखी विद्या कबहू मत छुइयौ * आगे गंधर्व विवाह करि हौं वहां कितेक दिन रह्यौ * ऐक दिन वाकौ कह्यौ नमानि ज्यौं

वह बिया में छुई त्यों उनि मोहि ऐक लात ऐसी दई कि हों मगध देस में आनि पर्यो ता दिना तें वाही के वियोग में सन्यासी भयो डोलतु हों * आज तिहारी नगरी में आय रात हों अहीर के घर मांहिं रह्यौ सु व्हां देख्यो कि वह घोस आपनी घुसायन कों जार के साथ बतराति देखि क्रोध करि थांभ सों बांधि मतवारो होय सोय रह्यो अरु जब आधी रात बाजी तब ऐक नायन कुटनी वाके पास आय बोली कि सुनरी तेरे बिरह तें वह बापरो मरतु है वाकी दया बिचारि हों तोपि आई हों * अब तू बिलंब जिनकरै * मोहि याथांभ तें बांधिजा अरु वाको भलो मनाय आ * वाकी बात सुनि उनि वैसें ही करी तब अहीर जाग्यो औ वासों कहनि लाग्यो कि अब तू जार पास क्यों नजाय * जद वह नबोली तद उनि वाकी नाक उतार लई अरु मदको मातो पुनि सोयरह्यो * इतेक में घुसायन नें आय

नायन सों पूछी कि अरी कुशल है * उनि कही बीर तूतो कुशल तें आई पर मैं नें हां आपनी नाक गंवाई * यह सुनि ग्वालनि आप बंधगई अरु वानें नायन कैां बिदा दई * जब नायन आप नें घर आई तब फेर घोस लाग्यैा औ जो कछु वाके मुख आयो सो कहनि लाग्यैा वा समें अहीरी बोली तू मेरो धनी है मार बांध जो चाहै सो कर * और ऐसैा को है जो मोहि कलंक लगावै मेरो कर्म औ धर्म अष्ट लोकपाल चांद सूरज धरती आकाश अग्नि जल पवन रात्रि दिन दोऊ संध्या जानति हैं अरु प्रानी जो कर्म करतु है ताकी उन कैां गम्य है * अब हैां आपनें धर्म सत सों कहतिहैां कि हे सूर्य देवता जैा में आप नें सत धर्म तें हैां तैा मेरी नासिका कटी न जनाइयो * यह बात सुनि अहीर वाके ढिग जाय देखै तैा नाक ज्यैां की त्यैां बनी है * देखत प्रमान वह वाके पायन पै गिर्‌यैा औ बोल्यैा कि तू

मेरौ अपराध छमाकर मैं तोहि बिन अपराध सतायौ * पुनि वह वाके कंठ लागि बोली कि स्वामी यामें तिहारौ कछु दोष नाहीं यह मेरे ही कर्म कौ फल है * आगै नायन निज घर जाय नाक हाथ माहिं लिये बैठी ही कि भोर भये वाके भर्तार नें पेटी मांगी * इन ऐक छुरा वाके हाथ दियौ उनि क्रोधकरि याकी ओर फैंकौ तद यह पुकारी किहाय इन निर्दई नें मेरी नाकपै छुरा मारयौ * याकी पुकार सुनि तुम बाहि बिन सोच बिचार किये पकरि ल्याये औ मारन कौं लिये जातु हौ पर याकौ कछु अपराध नाहीं * अरु साध महाजन मेरे संग है ताकी बात सुनौं कि यह बारह बरस बिदेस कमाय धन लिये आप नें घर कों जातु हो सो या नगर में आय रात बेस्या के घर रह्यौ * वा सामान्या नें आपनें द्वार पै ऐक काठ कौ बैताल बनाय कल लगाय वाके मूंड पर ऐक रत्न जड़ि राख्यौ हो * यह साध लोभ कौ

माखौ आधीरात कौं उठि बैताल के निकट जाय हाथ बढाय ज्योंही अन्न लयौ चाहै त्योंही वाकी कल छूटि याके दोऊ कर बंधे * कल छूटबे कौ शब्द पाय वह बारबिलासनि याके ढिग आय बोली कि तू मलयागिर तें मुक्तानि की जो माला ल्यायौ है सो मोहि दे नातो भोर तोहि कोटवार के यहां जानौं होयगौ अरु वहां तें जीवत न फिरैगौ * इतनी बात यह वाकी सुनि भय खाय आपनौं सब धन वाहि दै मेरे संग आय लाग्यौ है * यह बात सन्यासी तें सुनि राजा के सेवकनि न्याय बिचाख्यौ औ वाहि छांडि वेस्या तें साधकौ धन दिवाय यथा योग्य दंड दै सब कौं छांडि दियौ * तातें हौं कहतु हौं कि ज्यों उननि आपनें दोष तें दुख पायौ तैसें हम हू आपनें किये कौ फल पायौ पर भाई कर इक अब जो भई सो भई परंतु तुम जिन सोच करौ * सुनौं जैसें मैं नें इन

तें प्रीति कराई तैसें ही अब बैर करवाय हौं * कह्यो है* जे चतुर हैं ते झूठी बात कों हू सांची करि दिखावें जैसें ऐक अहीरी नें झूठ कों सांच करि स्वामी के देखतु जारकों घरतें निकास्यो * करटक कही यह कैसी कथा है * पुनि दमनक कहतु है

द्वारिका नगरी में ऐक घोसकी नारि बिभचारिनी ही सु कोटवार औ वाके मोंडातें रहै * ऐक दिन रात्रि की बेला कोटवार के छोहरा तें भोग करि रही ही तामांहिं कोटवार आय बारपर पुकास्यो तब यानें वाके ढोटा कों कोठी में लुकाय द्वारखोल दियो अरु ता हू कों भलो मनायो * इतेक में वाको धनी आयो तब इन कोटवार कों यह सिखायो कि हौं तौ बार उघारनि जाति हौं पर तुम लोठिया कांधेपै धरि क्रोधकरि घरतें निकरो ता पाछै हौं बात बनाय लैउंगी * उनि वैसें ही करी तब अहीर नें

घरमें आय आपनी स्त्री तें कह्यौ कि आज कोट
वार हमारे घरतें रिसाय के क्यों गयो * अहीरी
बोली कोटवार हमारे घरतें क्यौं रिसाय गो *
वाकौ पूत वातें रिसाय मेरे घर माहिं आय
छिप्यौ है सु वह आप नें मौंडा कौं मोसों मांगतु
हो इतेक माहिं तुम जो आये सो तुम्हैं देखि चल्यौ
गयो * यह कहि घुसायन नें कोटवार के पुत्र
कौं कोठी तें निकारि कह्यौ कि तू कछू भय मत
करै * मैं तोहि बाहर निकारि देति हौं जित तेरे
सीं गसमांय तित चल्यौ जा * ऐसें कहि वाहि
घर तें निकारि दियौ * कह्यौ है (दोहा) पुरु
षनि तें दुगनी क्षुधा बुद्धि चौगुनी होय *
काम आठ साहस छः गुन या विधि तिय सब
कोय
तातें हौं कहत हौं काम परे जाकी बुद्धि फुरै सोई
पंडित * बहुरि करटक बोल्यौ भाई इन दोऊन
में तौ अति प्रीति है तम कैसें बिगार करवाय

है * फेरि दमनक बोल्यौ कि मित्र जो काज उपाय
नें होय सो बलतें नहोय जैसें ऐक सांप कौं
का हू काग नें मरवायौ तैसें हौं हू याहि मरवांऊं
गौ * करटक कही यह कैसी कथा है * तहां दम
नक कहतु है

उत्तर दिसा में बिद्याधर नाम पर्वत
वहां ऐक तरु पर काग कागली रहै अरु वाकी
जर में ऐक सांप हू * जब कागली नें अंडा
दये तब सर्प नें रूख पर चढि खाय लिये अरु
अंडानि के लालच सों नित बृक्ष पे चढि वाके
खोंधा में जाय जाय बैठै * पुनि कागली गर्भ
सों भई तौ उनि वायस नें कही रे स्वामी या तर
वर कों तजि अनत जाय बसिये तौ भलौ क्यौं कि
कह्यौ है * जाकी नारी दुष्ट मित्र सठ सेवक बादी
घर में नाग कौ बास ताकौ मरन निस्संदेह होय
या सों यहां कौ रहनौं उचित नाहीं * काग कही
हे प्रिये अबजिन डरै क्यौं कि मैं नें या नाग

कौ अधिक अपराध सह्यौ पर अब न सहौंगौ *
कागली बोली तुम याकौ कहा करौगे * काग
कही प्यारी जो काम बुद्धि तें होय सो बल तें
न होय जैसें ऐक ससा ने बुद्धि करि महा बली
सिंह कौ मार्‌यौ तैसें हौं हू याहि बिन मारें न छांडि
हौं * कागली बोली यह कैसी कथा है तहां काग
कहतु है

मंदरगिरि पै दुर्दंत नाम ऐक सिंह
हो सो बहुत जीव जंतु मार्‌यौ करे * ऐक दिन
बन के सब जीवनि मिल बिचार कर आपस
में कह्यौ कि यह सिंह नित आय ऐक जंतु खातु
है औ अनेक मारतु है तातें याके पास चलि कै
ऐक जंतु नित देनों कहि आवें अरु बारी बांधि
पहुंचावें तौ भलौ * ऐसें वे आपस में बनराय
सिंह के पास गये औ कर जोरि प्रनाम करि मर्याद
सों याके सनमुख ठाढे भये * इन्हें देखि नाहर
बोल्यौ तुम कहा मांगतु हो * इननि कही स्वामी

तुम अहार के लयै नित जातु हौ अधिक मारतु हौ अल्पखातु हौ * यातें हमारी यह प्रार्थना है कि हम तिहारे खवे कों ऐक जंतु नित्त यहां हीं पहुंचायजैहैं तुम परिश्रम जिन कियौ करौ उनि कही अति उत्तम * ऐसें वे बाघ नें बचन करि आये * आगे जाकी बारी आवे सो जाय वह खाजाय * ऐसें कितेक दिन पाछें ऐक बूढे ससा की बारी आई तब वानें आपनें जी में बिचाय्यौ कि मेरौ सरीर छोटौ है यासों वाकौ पेट न भरैगौ तब हमारे और भाइयन कों खायगौ तातें हमारौ कुल तौ ऐक दोइ बार में ही पूरौ करैगौ यातें आपनें जीवनु ही याकौ नास करौं तौ भलौ * यह बिचारि आप नें स्थान तें उठि हरवे हरवे चलि वह सिंह के पास आयौ तब वह याहि देखि क्रोध करि बोल्यौ * अरे तु अबेरौ क्यों आयौ पुनि ससा नें कर जोरि यह बचन सुनायौ स्वामी मेरौ कछु दोष नाहीं हौं चल्यौ आवतु हो तुम पाहीं गैल

माहिं दूजौ सिंह मिल्यौ तिन मोसों कह्यौ रे तू कित जातु है चल्यौ * मैं कही कि हौं आपने स्वामी पास जातु हौं * उनि कह्यौ या वन कौ स्वामी तौ मैं हौं और स्वामी रहां कहां तें आयौ * पुनि मैं कह्यौ कि आज छुराय तौ तुम कौं यहां कब हू न देख्यौ हो * इतनी बात के सुनत ही वानें क्रोध करि मोहि बैठाय राख्यौ तव मैं वासों कह्यौ कि यह सेवक कौ धर्म नाहीं जु स्वामी के काज में बिलंब करै * तुम मोहि रोक्यौ है सु मेरौ ठाकुर न जानैगौ वरन मेरौ कह्यौ झूठ मानैंगौ अरु निज मन में कहैगौ कि यह घर जाय सोय रह्यौ औ मोसों आय मिथ्या भाषतु है * यातें तुम मोहि जिन अटकाओ * हौं आपने स्वामी पास होय आऊं * वह मेरी बाट जोवतु होयगौ * तुम्हैं यह बचन दिये जातु हौं कि मैं स्वामी कौं कहि उलटे पायन बगदि आवतु हौं * या बात के कहेतें उनि बचन बंध करि

मोहि बिदा कियौ तब मैं तिहारे पास आयौ स्वामी यामें मेरौ कहा दोष है * इतनी बात सुनि सिंह बोल्यौ * अरे मेरे बनमें और सिंह कहां तें आयौ * तू मोहि वाहि अबही दिखाव मैं वाकों बिन मारे आज भोजन नकरि हों * ऐसें बातें करि वे दोऊ व्हांतें चले * आगे आगें ससा पाछें पाछें सिंह जब चलतु चलतु बनमें कितनी एक दूर पहुंचे तब ससा एक कुआ के ढिग जाय ठाढ़ौ भयौ * तहां सिंह बोल्यौ अरे वह तोहि रोकनिवारौ कहां है * ससा नें ऊतर दियौ कि स्वामी वह तिहारे भयतें या कूप मांहिं पैठ्यौ है * इतनी सुनि सिंह नें क्रोधकरि कुआ के मनघटा पर जाय ज्यों जल मांहिं देख्यौ त्यों वाहि वाकौ ही प्रतिबिंब दृष्ट आयौ * परछांई देखत प्रमान वह जल में कूद्यौ औ डूब मर्यौ तब ससा नें आपने स्थानपर आय सब बनबासियन कों सुनायौ कि हों सिंह कों मारि आयौ मैंने तिहारौ

जन्मजन्म कौ दुख दूर कियौ * यह सुनि सब बन बासियन वाहि आशीर्बाद दियौ *

इतनी कथाकथ काग नें कागलीतें कह्यौ कि हे प्रिये तू देखि जो काम बुद्धिनें भयौ सो बलतें कबहू न होतो * पुनि कागली बोली स्वामी जामें भलौहोय सो उपाय करौ तद वायस वहां तें उडि आगे जाय देखै तौ एक राजपुत्र काहू सरोवर के तीर पै बस्त्र शस्त्र आभूषन राखि वा में स्नान करतु है * ताकी मोतिन की माल यह लै उड्यौ अरु आपनें खौंदा पै जाय वह माल सांप के कंठ में डारि अलग होय बैठ्यौ * याके पाछैं लागे वा राजा के सेवक हू देखतु चले आये हे * तिननि जब काग की चोंच में हार नदेख्यौ तब विन में तें एक रूखपर चढ्यौ ताने देख्यौ कि खोउर में कारौ नाग वह माला पहरै बैठ्यौ है * यह देखि राजाके वा किंकर नें निज मन मांहिं बिचार्ह्यौ कि माला तौ देखी पर अब कछु बिन उपाय

हाथ नऐहं यासों कछु यत्नकीजै * इतनौं कहि
दानें सर्प कौं तीरनि तें मारि माला राजपुत्र कौं
ल्याय दई * तातें हौं कहतु हौं भाई उपाय किये
कहा नहोय * बहुरि करटक कही भाई तुम जो
जानौं सो करौ * आगे दमनक नें ह्वांतें उठि
पिंगल सिंह के पास जाय कह्यौ कि महाराज
यद्यपि तिहारे पास हमारौ कछु काम नाहीं
पर समय असमय आप के निकट हमकौं आव
नौं उचित है * कह्यौ है कि जब राजा कुमारग में
चलै तब सेवक कौ धर्म है जु राजा कौं चिताय
देइ औ न जतावै तौ सेवक कौ धर्म जाय * आगै
राजा मानौं कै जिन मानौं पर वा कौं कहनौं
जोग है * महाराज राजा भोग करिवे कौं है औ
सेवक सेवा करनि कौं * पुनि कह्यौ है * जो राजा कौ
राजबिगरै तौ मंत्री कौ दोष ठहरै राजा कौं
कोऊ कछू न कहै * यातें प्रधान कौं चाहिये आपने
स्वामी के काज कष्ट पाय धन तन देइ पर राज

नजानि देइ अरु जो प्रधान राज काज बिगरत
देखि राजा सों नकहै सो कैसो सेवक * औ जो
राजा समय असमय किंकर की बात नसुनें सो
कैसो ठाकुर * पिंगल बोल्यो तुम कहा कह्यो
चाहतु हो सो कहो * दमनक कहनि लाग्यो
पृथ्वीनाथ यह संजीवक तिहारी निंदाकरतु हो अरु
कहतु हो कि अब यह राजा प्रताप हीन भयो
प्रजा की रक्षाकरी चाहिये * या बात में महाराज
मोहि ऐसो समझ पर्यो कि अब वह आप राज
कियो चाहतु है * यह बात सुनि राजा चुप है
रह्यो * पुनि दमनक बोल्यो धर्मावतार तुम ऐसो
प्रचंड मंत्री कियो कि जो राजकाज का मतो
तुम तें नपूछि ऐका ऐकी आपही राज करनि
लाग्यो सो भलो नाहीं * जैसें चानक मंत्री नें
राजा नंदक कों मार्यो कहूं वैसें नहोय * राजा
पूछी यह कैसी कथा है तहां दमनक कहतु है
काहू देस में नंदक नाम राजा थाको

चानक नाम मंत्री सु राजा वा मंत्री कौं आपनैं राजकाज कौ भार दे आप निश्चंत होय आनंद करनि लाग्यौ अरु मंत्री राज * एकदिन वह राजा प्रधान कौं लार ले अहेर कौं गयौ बनमें जाय ऐक मृग देख्यौ वाके पाछै विननि घोरा दपटे तद और लोग हू झपटे पर इनके अश्वन की समान काहू कौ अश्व न पहु`चौ पुनि सब लोग अटपटाय पाछै रहे औ वि दोऊ आगे गये * जब हिरन खपरि उनके हाथ तें बनमें पैठ्यौ तब राजा हू घाम प्यास कौ मार्‍यौ घोरातें उतरि ऐक रूख तरै बैठ्यौ * निदान वह महीपति आपनैं हय प्रधान कौं थंभाय तृषा कौ मार्‍यौ व्हांतें उठि जल खोज तौ चल्यौ * कितेक दूर जाय देखै तौ ऐक वापी निर्मल जल भरी वाहि दृष्ट परी * वह जीवतु प्रामान प्रसन्न ह्वै वा में नीर पीवन उतर्‍यौ * जलपी फिरनि लाग्यौ तौ वानें ऐक पाथर में यह लिख्यौ

बांच्यो कि राजा औ मंत्री तेज अरु बल में स
मान होंय तौं द्वै में तें ऐक कौं लक्ष्मी त्यागै *
यह बांच वह पाहन पै कादौ लपेट मंत्री के ढिग
आयो * पुनि मंत्री हू जल पीवन वा बावरी में
गयो औ उनि देख्यौ अरु कह्यौ कि यह तौ कोऊ
अबही पाहन पै गार लथेर गयो है * बहुरि
उनि पाथर धोय लिख्यौ पढि निज मन में कह्यौ
कि राजा नें मोसों दुराव कियो * ऐसें समझि
पानी पी मंत्री राजा के पास आयो * राजा सोयो
तब मंत्री नें हन्यौ * या तें महाराज हौं तुमसों
कहतु हौं कि जो बलवान प्रधान होय सो आपही
कौं राजा करि मानें * अरु जौ राजा ऐकही मंत्री
कौं अधिकार सौंपै तौ वह गर्व करै औ गर्व तें
अज्ञान होय अज्ञान भयें वाहि धर्म अधर्म कौ
बिचार नरहै * कह्यौ है बिष मिल्यौ अन्न दियो
दान अरु दुष्ट मंत्री इन कौं निकट कब हू नरा
खिये * महाराज जो सेवक कौ धर्म हो सो मैं

तुम सों कहि सुनायो आगे आप की इच्छा मांहिं
आवै सो करो * संसार में ऐसे लोग थोरे हैं
जिन कों राज औ धन की लालसा नाहिं तातें
मैं तुम सों अब पष्ट कहि देतु हों कि वह तिहारो
राज लियो चाहतु है आगे तुम जानों * सिंह
बोल्यो संजीवक मेरो बडो मित्र है वह मेरो बुरो
कबहू नचीतैगो क्यों कि जो प्रिय है सो अप्रिय
नहोय * कह्यो है अग्नि घर जरावै तौ हू अग्नि
बिन नसरै * बहुरि दमनक कही कि महाराज
कोऊ कितेक करो पर दुरजन औ गंवार आपनो
जातीय सुभाव नछांडै * ज्यों कूकरा की पूंछ
तेल मसल सेकिये तऊ टेढी की टेढी रहै त्यों
नीच कौ सनमान करिये तौ हू भलो नमानें
अरु नीम कों मधु दे सींचिये पर वाको फल
मीठो नहोय * कह्यो है प्रीतम सो जो आपदा
निवारै * कर्म वह जातें अपजस नहोय * स्त्री
अरु सेवक सो जो आज्ञाकारी रहै * बुद्धिवान वह

जो गर्व नकरै * ज्ञानी सो जो तृस्ना नराखै * पुरुष वह जो जितेंद्री होय * अरु महाराज मंत्री वह जो हितकारी होय * संजीवक तिहारी सुखदेवा नाहिं यह दुख कौ मूल है या कौ शीघ्रही नास करौ * कह्यौ है * जो राजा धनांध कामांध होय आपनौं भलौ बुरौ नजानें सो इच्छा मानौ रहै अरु जब अहंकार तें दुखपावै तब मंत्री कौं दोष लगावै * या बात के सुन्ने तें सिंह नें जीमें बिचाय्यौ कि बिनसमझे बूझे काहू कौं दंड देनौं उचित नाहीं * पुनि दमनक कही पृथ्वीनाथ संजीवक आजही तिहारे मारिवे के उद्यम में लाग्यौ है तुम वाहि बुलावौ अरु भेद दुरावौ * कह्यौ है मंत्र औ बीज गुप्त राखिये जो गुप्त नराखिये तौ वाकौ फल नहोय अरु दुष्ट कौ यह सुभाव है कि पहिले मीठी मीठी बातें कहि मन धन हाथ करलेइ पाछै दुष्टता करि वाकौ सर्वसु खोयदेइ * जैसें शकुन नें दुर्यौ

धन कौं कपट सिखाय महाभारथ करवायो * पिंगल कही वह हमारो कहा करि है * बहुरि दमनक बोल्यो कि महाराज तुम यह जिन जानों कि हम बलवान हैं * कह्यो है समयपाय छोटोहू बड़ो काज करै जैसें एक टिटोर नें समुद्र कौं महा व्याकुल कियो * राजा पूछी यह कैसी कथा है तब दमनक कहवे लाग्यो

समुद्र के तीर एक टिटोर औ टिटीहरी रहैं जब टिटीहरी गर्भ सों भई तब वानें आपनें स्वामी सों कह्यो कि रे स्वामी मोहि अंडा राखिवे कौं ठौर बनाव * उनि कही यह तो नीकी ठौर है * पुनि टिटीहरी नें कह्यो यहां तो समुद्र की तुंग तरंग आवति है वह हमें दुख दैहै * टिटोर कही जो यह हमकों दुख दैहै तो हम हू याको उपाय करिहैं * बहुरि टिटीहरी हंसिकै बोली कहां तुम औ कहां समुद्र यासों प्रथम ही विचार करि काज करो तो पाछैं दुख न होय * पुनि टिटोर

कह्यो तुम निचिंताई सों अंडा धरौ फेर हम समझ लैहैं यह बात सुनि वानें वहां अंडा दये अरु समुद्र हू वाकी सामर्थ देखिवे के लये लहरिसों अंडा वहाय लैगयो * तब टिटीहरी बोली रे स्वामी अंडा तौ सागर वहाय लैगयो अब कहा करैगो सो कर टिटोर कही हे प्रिये तू कछू चिंता जिनकरै हौं अबही लै आवतु हौं * इतनौं कहि वह सब पंछियन कौ साथ लै गरुड के पास गयो अरु गरुड नें श्री नारायन सों जाय कह्यो * श्री नारायन जूनें समुद्र कौं दंडदै आज्ञा कारी विन अंडा पाछे दये तब वह सब पच्छी समेत अंडा लै आपने घर आयो * तातें महाराज हौं कहतु हौं कि बिन काम परे काहू की सामर्थता जानी नजाय * बहुरि राजा कही हम कैसें जानें कि वह हम नें लरिवे कौं आवतु है * दमनक बोल्यो महाराज वाकौं तौ सींग कौ बल है जब सींग साम्हनें करै तब जानि यौ अरु जो तुम तें हांसकै

सो करियो

इतनी बात कहि व्हांतें उठि दमनक संजीवक बरध के निकट गयो औ मुख सुखाय वाके सनमुख ठाढ़ो भयो तब उनि यातें कुशल पूछी * इन उत्तर दियो मित्र सेवक कों काहे की कुशल क्यों कि वाको तो मन रात्रि दिन चिंताही में रहतु है अरु बिशेष राजा को सेवक तो सदासर्बदा भयमान रहतु है * कह्यो है द्रव्य पाय कानें गर्व न कियो * संसार में आय कानें आपदा न भुगती * काको मन स्त्री के बस न भयो * कालके हाथ को न पर्‍यो * राजा काको मित्र भयो * वेस्या काकी स्त्री भई * बैरी के फंद को न पर्‍यो * जब दमनक नें ऐसी ऐसी उदासी लिये बातें कहीं तब संजीवक बोल्यो कि मित्र तुम पर ऐसी कहा गाढ़ परी जो ऐसे उदास बचन कहतु हो तुम मो सों तो कहो * दमनक कही हितू मैं बड़ो अभागी हों जैसें कोऊ समुद्र मांहिं बूडतु सांप

कों पाय नपकरि सकै न छांडि सकै तैसें हौंहू ऐक बात है ताहि नकहि सकौं नकहे बिन रह सकौं * क्यों कि कहों तौ राजा रिसाय औ नकहौं तौ मेरौ धर्म जाय तातें दुख समुद्र में पर्यौ हौं * संजीवक बोल्यौ मित्र जो तिहारे मन में ह सो कहौ * इन कही भाई हौं कहतु हौं यह बात अप्रगट राखियो अरु जो तिहारी बुद्धि में आवै सो कीजो क्यों कि तुम यहां हमारी बांह तें आये यातें अपजस सों उरि आपनौं परलोक संवार वे कों तुम्हें सावधान किये देतु हौं * तुम चौकस रहियो राजा की आज तुम पर कुदृष्ट है * उन नि मो सों कह्यौ कि आज संजीवक कों मारि स कल परिवार कों तृप्त करि हौं * यह बात सुनि संजीवक नें अति दुखपायौ तब दमनक बोल्यौ कि प्रीतम तुम दुख जिनकरौ अब जो बुद्धि में आवै सो करौ * बहुरि संजीवक कही कि यह काहू नें सांच कह्यौ है जो कृपन के धन होय*

मेह ऊसर में बरसै * सुंदर स्त्री नीच सों रति करै * राजा कुपात्र कौं बढावै * इतनी कहि उनि निज मनमें बिचाखी कि यह आपसोंकहतु है के राजा नें ऐसी बिचाखी है * यों सोचि पुनि मनही मन कहनि लाग्यौ कि उज्जल के संग मलीन मलीनता करि सोभा नपावै जैां काजर तें नेत्र सोभा पावें पर काजर सोभा न पावै * तातें याकी कहा सामर्थ्य है जो यह आप नें कहै उन हीं कही होयगी * मैं तो सावधानी सों सेवाकरतु हौं * राजा नें ऐसी मेरो कहा अपराध देख्यौ जो मन मैलो कियो * पुनि बूझ्यौ कि या हू में अचरज नाहिं क्यों कि जैसें कोऊ देवता की अति सेवा करै अरु वह वाहि थोरे ही दोष में भस्म करि डारै तैसें राजा हू नेंक दोष में मारै अब याकौ कछु उपाय नाहिं * ऐसें संजीवक नें आपनें मन माहिं समझि बूझि दमनक तें कही भाई मैं नें राजा को ऐसी कहा

काम बिगाखौ है जो उनि ऐसी बिचारी * अब हौंवाकी सेवा नकरौंगौ क्यौं कि राज सेवा करनौं महा कठिन है * जो भलौ काम करै बुरौ मानें ताकी सेवा करनी जोग नाहीं अरु राजा की प्रीति और लों नाहों रहति * कह्यौ है असाध कौ उपकार करनौं औ मूर्ख कौं उपदेस दैनौं बृथा है * पुनि ज्यौं चंदन में सर्प पानी में सि वार आपतें आप आवति है त्यौं सुख में दुख हू आय घटतु है * पुनि दमनक बोल्या मित्र दुष्ट जन प्रथम दूरतें आवतु देखि जो आदर करि बैठाय हितसों प्रियबचन कहै सो नजानिये कि वह पाछे कहा दुष्टता करै * कहत हैं समुद्र तरिवे कौं जहाज * अंधकार कौं दीपक * गरमी कौं बीजना * माते गज कौं आंकुस * ऐसें बिधाता नें सबके उपाय बनाये है पर दुष्टजन के मनकौ कछु यत्न नकरि सक्यौ * बहुरि संजी वक कही भाई हौं धानपानी कौ खानिहारौ होय

याके बस क्यौं रहौं * कह्यौ है राजा के चित्त में मित्र भेद पर्‌यौ मिटतु नाहीं * ज्यौं स्फटिक कौ पात्र टूटि फेरि नजुरै त्यौं नरपति कौ मन हू उचटि फेरि नमिले * कहतु हैं राजा कौ क्रोध बज्रतुल्य है पर ऐक समय बज्रसों बचै पै भूपाल के क्रोध सों कबहू नबचै तातें अब दीन होय मारखानौं नीकौ नाहीं बरन संग्राम करि मरनौं भलौ क्यौं कि सूरातन में दोय बात जीतै तौ सुख भोगवै औ मरै तौ मुक्ति पावै * यासों या समय युद्ध करनौं ही उचित है * फेरि दमनक बोल्यौ अहो मित्र तुमतें हौं कहेदेतु हौं कि जब वह कान पूंछ उठाय मुख पसारै तावेर तुम तें जो पराक्रम बनि आवै सो कीजो वामें काहू भांति कसर जिन कीजो * कह्यौ है बलवंत होय आपनौं बल नप्रकासें तौ निरादर पावै * जैसें तेज हीन अग्नि कौं सब कोऊ उठावै तैसें निबल मनुष कौं सब सतावैं * इतनौं कहि दमनक

बोल्यौ भाई अवही यहबात मनमें राखौ कामपरे बूझी जायगी * ऐसें कहि दमनक संजीवक सोंबिदा होय करटक के ढिग गयौ * तब उनि पूछ्यौ हितू तू कहा करि आयौ * इनकही में दोउअन मांहि बैर कराय आयौ पुनि करटक कही यामें संदेह नाहीं * कह्यौ है दुष्टजन कहा नकरि सकै छिमा तें कोन पंडित कहा वै पुनि कैसौ हू बुद्धिवान होय पर असाध की संगति तें बिगरै ही बिगरै क्योंकि दुष्ट के संगतें जो नहोय सो थोरौ* जैसें अग्नि जहां रहै तहां ईं जरावै * ऐसें दोऊ बतराये पुनि दमनक पिंगल के निकट गयौ कर जोर सनमुख ठाढौ भयौ अरु बोल्यौ महाराज सावधान होय बैठौ पशु युद्धकरवे कों आवतु है * ज्यों ही सिंह संभल बैठ्यौ त्यों हीं बिजार क्रोध भर्यौ वा बनमें पैठ्यौ * पुनि जिम वाहि देखि सिंह उठि धांयौ तिम या नें हू पहुंच के सींग चलायौ * अरु दोऊ पशु यथाशक्ति लरे नि

दान सिंह के हाथ तें बरध मास्यो पस्यो तब सिंह पछतानि लाग्यो कि हाय मैं यह कहा कियो जो राज औ धन को लोभ करि बापरे तन अन्न खानिहारे बिजार कौं मारि महा पाप सिर लियो * या संसार में धन के भागी अधिक हैं पर पाप बंटावनिहारो को ऊ नाहिं * कह्यो है सिंह राजा सो जो गजराज कौं पछारै * पुनि दमनक बोल्यौ महाराज यह कहां की रीति है जु तुम शत्रु कौं मारि पछतातु हो * राज धर्म में कह्यो है * कि पिता भ्राता पुत्र मित्र जो राज लैन की इच्छा करै ताहि नरपति बिन मारें नरहै * जो बडो धर्मी होय तो हू दया न करै पुनि ज्यौं सन्यासी कों छिमा भूषन है त्यों हीं राजा कों दूषन * बहुरि नीतिशास्त्र में कह्यो है * दयावंत राजा * सर्वभक्षी ब्राह्मन * कामातुर स्त्री * सेवक शत्रु * दुष्टमित्र * असावधान अधिकारी औ गुन नाशक आदि जितने हैं तिन्हें ततकाल त्यागिये * पुनि

ऐसें हू कह्यौ है कि जैसी वेस्या तैसौ राजा * कहूं लोभी कहूं दातार कहूं सांचौ कहूं झूठौ * कहूं कठिन कहूं कोमल कहूं हिंसिक कहूं दयाल अरु सदा अधिक धन जन चाहै या भांति दमनक नें राजा सिंह कौं समझाय बुझाय वा कौ शोक मिटाय राज पाट पर बैठायौ अरु पुनि आप मंत्री ह्वै सब राजकाज करनि लाग्यौ इतनी कथा कहि बिस्नुशर्मा नें राज पुत्रनि कौं आसीस दई कि महाराज कुमार तिहारे शत्रुनि कौं मित्र भेद होय अरु मित्रनि कौ कल्यान * इति श्रीलाल कवि विरचिते राज नीति ग्रंथे सुहृद्भेद द्वितीय कथा संपूर्ण

अथ विग्रह तृतिय कथा लिख्यते

बिस्नुशर्मा जब और कथा कौ आरंभ करनि लाग्यौ तब राजपुत्रनि कही अहो गुरुदेव अब

विग्रह सुनिवे की लालसा हम कौं है सो कृपा करि सुनाइये * विष्णुशर्मा बोल्यौ महाराजकुमार तुम शांत सुभाव होय सुनौं हौं विग्रह की कथा कहतु हौं * एक हंस औ मोर बल बुद्धि राज प्रताप में समान हे पर ऐक कागनें विस्वास घात करि हंस कौं हरायो अरु मोर कों जितायो राजकुमारनि कही यह कैसी कथा है तब विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ

कर्पूर द्वीपके मांहिं पद्मकेल नाम ऐक सरोवर है * काहू समें तहांके सब पंछियन मिल ऐक हिरन्यगर्भ नाम हंस कौं राजा कियो * सो वो राज करनि लाग्यो * कह्यो है * जहां राजा नहोय तहां की प्रजा सुखसों नरहे जैसें समुद्र में विन केवट नाव नचले तैसें संसार में हू राजा विन धर्म ननिभे * राजा प्रजाकी नित नित अधिकाई चाहै निज पुत्रकी समान जानें अरु जो राजा प्रजाकों पालन करि नबढावे सो जगत में

प्रतिष्ठा हू नपावे * आगे ऐक समय वह राजा हंस रत्न सिंहासन पर सभा मांहिं बैठ्यो हो तहां कोन हू द्वीप तें ऐक दीरघमुख नाम बगुला आयो औ दंडवत करि हाथ जोरि राजा हंस के सनमुख ठाढो भयो * तब राजा नें वाहि आदर करि बैठाय पूछ्यो कि अहो दीरघमुख जादेस तें तुम पधारे तहां के समाचार कहो * उनि कही महाराज याही बात के लये तो हों तिहारे ढिग आयो हों कि जंबूद्वीप में विंध्याचल नांम ऐक बड़ो परवत है तहां के सब पंछियन को राजा मयूर है सो वा ठाम बसतु है तिन मोहि बचननि में चतुर देखि पूछ्यो कि तू कहां तें आयो औ को है * तब में कही कि कपूर द्वीप तें तो में आयो अरु व्हां के महाराज हिरण्यगर्भ को सेवक हों तिहारो देस देखिवे कों व्हां आयो हों * तब उनि पच्छियन कही कि तिहारे हमारे देस औ राजानि में कोन भलो है पुनि

मैं कही कि तुमकहा कहतु हो * अरे कर्पूर दीप तो स्वर्ग समान अरु आज राजा हंस दूसरो इंद्र है * या बुरे देस मे तुम क्यों परे हो चलो हमारे देस मे बसो * जब यह बात मैं कही तब उनि पखेरुअन मोपै अति क्रोध कियो * कह्यो है कि जैसें सर्प कों पय प्याये अधिक विष बढै तैसें पंडित कौ उपदेस मूरख के मनमें नआवै बरन वह उलटो वाही कों सता वै * जो बानर कों उपदेस दे बिचारे पछियन आपनों कियो आप पायो * राजा पूछी यह कैसी कथा है तब बक कहनि लाग्यो

नरमदा नदी के तीर ऐक पर्वत ताके तरे ऐक सेमल कौ रूख तपै पंछी आपनें घोंसुआ बनाय सखसों रह्योकरै ऐक बेर बरखाकाल में भादों की अंधियारी रात्रि समय दामिनी दमकि दमकि घटा घिर घिर आ ईं अरु बडी बडी बूंदनि घनगरज गरज जल

मूसल धार लाग्यो बरसन ताही काल ऐक बानर वा पहार ते भीजतु उतरि सीतको मार्‌यो थरथर कांपतु ताही रूख तरे आय बैठ्यो वाहि दुखित देखि दयाकरि पछियन कह्यौ अरे बनचर तू देखि तो सही कि हमनि आपनी चोंच सों तृन आनि घर कियो है तोहि तो भगवान नें हाथ पाय दये हैं तें नें क्यों न घर बनायो जो तें घर बनायो हो तो तो यासमें सुख सों पाय पसारि सोतो * यह सु ने वा मरकट नें जान्यो कि ये पच्छी या समें निज घर में सुख सों बैठे हैं ताही तें मो पंडित कों मूरख जानि उपदेस देतु हैं * यह समझ वह हंसकि बोल्यौ अरे बरषा बीतें तुम मेरो कियो देखियो * इतनों कहि वह क्रोध करि मष्ट मारि बैठ्यो * इतेक मांहि भोर भयो अरु मेह उघरि गयो * जब श्री सूरज देवनें प्रकास कियो तब वह वा रूख पर चढि सब पंछियन के अंडा भूमि में पटकि घोंसुआ खसोट के बोल्यौ * अरे

मूढ पक्षियों जे पंडित हैं ते कहा घर करवे कौं असमर्थ हैं तिन कौं तो सुभाव ही है कि घर नाहीं करनु * यह वाकी बात सुनि बापरे पखेरू मोन साध रहे तातें हों कहतु हों कि मूरख कौं उपदेस कब हू न दीजे * पुनि राजा बोल्यौ आगे कैसी भई सो कहो * बगुला बहुरि कहनि लाग्यौ महाराज पुनि उनि पक्षियन मो सों रिसायके कह्यौ अरे तेरे हंस कौं राजा किन कियौ * मैं कह्यौ रे तेरे मयूर कौं किन राज दियौ * या बात के सुनें तें वे मोहि मारन कौं उठे तब मैं हू आपनौं पराक्रम दिखायौ * कह्यौ है मनुष कौं औरसमें छिमा बूझिये पर जब शत्रु लरवे कौं आवे तब पराक्रम ही करनौं उचित है जैसें नारी कौं लाज आभरन है तैसे रति समें ढिठाई हू आभूषन है * राजा हंस कही जो आप नौं औसर न देखि क्रोध करै सो अति दुख पावे अरु ऐसें ही जो आपनी सामर्थ न जानि देश

करै सोऊ * ज्यों आपनी सामर्थ नजान बाघको चाम ओढि ऐक गदहा मार्‌यो गयो * बक बोल्यो यह कैसी कथा है तहां राजा हंस कहतु है

हस्तिना पुर में ऐक बिलास नाम धोबी रहै ताके घर ऐकगदहा * वापै बोझ लादतु लादतु जब वाकी पीठपर चांदीपरी तब वह धुबिया गदहा कें रात्रि के समय बाघ को चाम उढ़ाय काहू जवके खेत मैं छोडि आयो वाखेत को रखवारो ताहि देखतही परायो * याही भांति यह नित नित वाको खेत खाय खाय आवै तब वा रखवारे नें नाहर मारवे को यत्न कियो औ वाही खेत की पगार के निकट भूरी कामरी ओढि धनुष चढाय आप हू काहू कूउ तरे दब कि रह्यो * है पहर रातके समें अंधेरे में गदहा आयो औ याकी भूरी कामरिया कें देखि गदही जानि वह कामांध होय रेंकतु धायो * पुनि रखवारे नें जान्यों कि यह तो गदहा है पर बाघ को

चाम ओढि आयौ है * ऐसें कहि क्रोधकरि रखवारे नें वाहि लोठियन लौठियन मारिगिरायौ वाकौ प्रानगयौ * तातें हौं कहतुहौं कि आपनें बल बिचारि काज कीजै

इतनी कथा कहि पुनि राजाहंस बोल्यौ आगे जो भई सो कहौ * बगुला कहनि लाग्यौ * महा राज उन पछियन मोसों कही अरे दुष्ट बगुला तू हमारे देस में आय हमारेई राजाकी निंदा करतु है * इतनों कहि उननि मोहि चोंचनि सों मार्यौ अरु कह्यौ अरे जैसें कुआ कौ दादुर कुआ ही कों सराहै तैसें तू है अरु तेरौ राजा * यह सुदेस छुड़ाय तू हमकों वा कुदेस में जैवे कों कहतु है * रे मूर्ख कह्यौ है चेष्टा करि बडौ रूख सेइये जो फल नमिलै तौ सीरी छांह बैठवे कौ तौ हू मिलै अरु ओछे की संगति तें प्रभुता जाय * जैसें कलाल के हाथ में दूध कौ बासन होय तौ हू जो देखै सो कहै या में मदिरा होगी

अरु बडे के नाम तें हू बडाई पाइये जैसें चंद्रमा के नाम तें ससा सुखी भये * यह सुनि मैं उनि तें पूछी यह कैसी कथा है * पुनि विन मैं तें ऐक पच्छी कहनि लाग्यौ

ऐक समें बरषा काल बिन बरसे बन में पानी की अति खेंचभई तब व्हां के हाथियन आप नें यूथ पति सों कही * स्वामी व्हां बिन पानी प्यास के मारे मरतु हैं * यह सुनि गजराज नें ऐक सरोवर पहार में बतायौ * वाके तीर ससा बहुत रहैं * जब गज वहां जल पीवन कौं गये इन के पायन तरे बहुत से ससा चांपेगये * तब ऐक सिलीमुख नाम ससा हो वानिं बिचाख्यौ कि जो या भांति ये हाथी इत आय हैं तो ऐक हू सजाती हमारो यहां जीवतु न रहै गो * यह बात सुनि ऐक विजय नाम अति बृद्ध ससा बोल्यौ अहो तुम अब भय जिन करौ मैं या उपाध कौ यत्न करि हौं * इतनी कहि वह वहां

नें उठि चल्यौ औ गैल में चलत चलत वानें मनमांहिं कह्यौ कि हाथियन के निकट कैसें जैहों वे तौ छूवत मारैं * इतनीं सोच वह ऐक पर्वतपै चढि दिखाई दियौ अरु इन जद उनतें रामरामकरी तद विन में तें ऐक गज गर्व करि बोल्यौ अरे तू को है* इनकही रे हों चंद्रदूतहों* औ तिहारेपासआयौ हों * पुनि उननिकही आप नें आवनको प्रयोजन कहौ * इन कही मोहि चंद्र महाराज नें यह कहि तुमपास पठायौ है कि आज तुमनि आय हमारे या चंद्रसागर में पानी पियौ सो तौ भली करी पर तिहारे पायन तरे हमारे ससा चांपिगये यातें हम तुमतें अति अप्रसन्न भये क्यौं कि हमारी ओर तें ससा ही या सरवर के रखवारे हैं मैं इन की रक्षा करतु हों याही तें मेरौ नाम लोग ससी कहत हैं * यह सुनि गजराज बोल्यौ कि भाई तू यह सांच कहतु है * पनि ससा नें कह्यौ कि

यह धर्म दूत कौ नहोय जो मिथ्या भाषै * कह्यौ है * दूत कौं कोऊ मारिवेकौं हू लै जाय परवह झूठ नबोलै * ऐसें सुनि गजराज भयमान होय बोल्यौ कि आज हम इन अनजानें आय कढे पर बहुरि नआय हैं * पुनि ससानें गजपति सों कह्यौ कि तुम निज मन में कछु जिन डरौ हौं तिहारौ अपराध चंद्रदेव सों कहि क्षमा कराय हौं * ऐसें वाकौ संबोधन करि रात्रि भयें गज राज कौं सर के तीर लैजाय चंद्रमा कौ प्रतिबिंब दिखाय हाथ जुरवाय आप पुकारिकै बोल्यौ हे चंद्र महाराज ये बापरे गज तिहारे सरोवर पै अनजानें आयकढे हे इन कौ जो अपराध भयौ है सो आप क्षिमा कीजे पुनि इनतें ऐसौ कबहू नहोय गौ * इतनौं कहि वानें हाथियन कौं बिदा कियौ औ तिननि हू जल मांहिं प्रतिबिंब देखि सत्य जान्यौ कि चंद्रमा सरोवर में आयौ है * तातें हौं कहतु हौं कि बडे के नाम हीतें कार्य सिद्ध

हाेय * यह सुनि महाराज पुनि मैं कही अरे हमारो राजा बडो प्रतापी है * यह सुनि वे पच्छी मोहि पकरि राजा मयूर के निकट लैगये * मोसों दंडवत करवाय हाथजुरवाय वा के सनमुखठाढो राखि विन पच्छियन राजा सों कह्यो * महाराज यह दुष्ट बगुला हमारे ही नगर में रहि हमारी ही निंदा करतु है * राजा कही अरे यह को है औ कहां तें आयो है * पच्छियन उतर दियो महाराज यह कहतु है कि हौं कर्पूरद्वीप के हिरन्य गर्भ राजा को सेवक हों औ वाही देस तें आयो हों * यह सुनि वा राजा को मंत्री गीध बोल्यो कि तेरे राजा को मंत्री को है * मैं कही सर्वज्ञ नाम कछुआ सोई सबराज काज में प्रधान है * गीध बोल्यो कि कह्यो है * जो सदेसी कुलवंत युद्ध बिद्या में निपुन धर्मात्मा आज्ञाकारी प्राचीन प्रसिद्ध पंडित गुनगाहक द्रव्यउपायक उपकारी हितकारी होय ताकों राजा मंत्री करे * पुनि एक

सुआ बोल्यौ पृथ्वीनाथ या जंबूद्वीप केही मांहिं
कर्पूर द्वीप है अरु व्हां आप कौ ई राजा है या बात
कों सुनि वह राजा बोल्यौ कि तू सांच कहतु है
सो हमारे ही देस में है * कह्यो है * राजा बा
लक उनमत्त धनवंत औ स्त्री ये पांचौं अनपावनी
वसुलैन कौं हू हठकरें * पुनि मैं कही कि जो
बातन ही प्रभुताई पाइये तो हौं हू कहतु हौं कि
हमारो राजा हिरन्य गर्भ ही सब जंबूद्वीप को राजा
है * बहुरि कीर कही यह कैसें जानिये * पुनि
मैं कह्यौ युद्ध किये ही जानि हौ * फेरि वह राजा
बोल्यो कि तू आपने राजा कों जायकह हम आ
वतु हैं * तब मैं कही आपनों वसीठ पठावौ *
राजा नें कह्यौ कौंन कौं पठाइये * मैं कही कि
ऐसें कह्यौ है * जो स्वामिभक्त गुनवान पवित्र
चतुर ढीठ बिसनरहित क्षमायुक्त धीर गंभीर
सदेसी पराये मनकी जाननिहारो जाकौ उत्तर
नफुरे ऐसौ होय सो दूत केजोगहै ताही कौं

भेजिये * राजा बोल्यौ ऐसे तो हमारे यहां बहुत
है पर कह्यौ है ब्राह्मन कों पठाइये क्यों कि बिप्र
सत्यबक्ता औ अहंकार रहित होतु है * पुनिमैं
कही कि महाराज प्राधीन लोगनि के मुख सुन्यौं
हैं कि निज स्वभाव कोऊ नाहीं तजतु जैसें
कालकूट बिषनें महादेव कौ कंठपायौ पर स्याम
ता नत्यागी * पुनि मैं कह्यौ कि महाराज सुआ
कों पठाइये * तब राजा मयूर नें सुग्गातें कह्यौ
कि कीर तुम याबगुला के संग जाऔ * अरुराजा
हंसतें हमारौ संदेसौ कहि आऔ * सुक बोल्यौ
महाराज की आज्ञा मूडपै पर यादुष्ट बककी गैल
हौं नजैहौं * कह्यौ है दुष्ट जन के साथ रहे
साध जन हू दुखपावै * जैसें रावन के समीप
रहि बापरौ समुद्र बांध्यौ गयौ * पुनि ज्यौं
काग के संग रह हंस औ बटेर मारीगई * राजा
पूछीयह कैसी कथा है तब सुक कहनि लाग्यौ *
महाराज उज्जैन नगरी की गैलमें एक बडौ

पीपल कौ रूख तापर ऐक काग अरु हंस रहे * ग्रीषम ऋतु की दुपहरी मांहिं ऐक बटोही घाम कौ मार्यौ वाकी छांह तरै आय शस्त्र खोल सीरक पाय सोयो * जब घरी चार पाछै वाके मुखपर घाम आई तब हंस दया करि वाकेमुख परछांह करि बैठ्यौअरुकाग दुष्टता करि वाकेमुंह पे बीटकरि भाग्यौ* त्योंहीबटोही जाग्यौ औ वानें हंस कौं तीरतें मार्यौ * आगै ऐक समें सब पक्षी मिल गरुड की यात्रा कौं चले तामें ऐक बटेर हू कागके साथ चली * तहां गैल में ऐक अहीर दहेंडी लियें जातु हो सो दहेंडी काग झुठाय भाग्यौ अरु बापुरी बटेर व्हां मारी गई तातें हों कहतु हों महाराज दुष्ट कौ संग काहू भांति करनौं उचित नाहीं * पुनि मैं कही भाई सुआ तुम ऐसी बात कौं कहतु हौ हमारे तौ जैसे राजा तैसे तुम * महाराज इतनौं सुनि वह प्रसन्न भयो * कह्यो है मूर्ख कौ अपराध करि

स्तुति कीजै तौ वह प्रसन्न होय जैसें ऐक खाती स्तुति कियें जार सहित स्त्री की खाट माथेल नाच्यौ * यह सुनि राजाहंस कही यह कैसी कथा है पुनि बगुला कहनि लाग्यौ

श्रीनगर में मंद बुद्धिनाम ऐक खाती रहै सो आपनी नारी कौं बिभचारिनी जानें पर वाहि जार समेत कबहू नपा वै * ऐक दिन वानें वाके जार कौं पकरवे के लिये वासौं कह्यौ कि आज हौं गांव जातु हौं सु तीन चार दिनमें आयहौं * इतनौं कहि वह बाहरजाय फेरि घरमें आय खटिया तरै छिप रह्यौ * वाकी स्त्री नें ताहि गांव गयौ जानि निज जार कौं बुलायौ अरु क्रीडा के समें कछु आहट पाय जान्यौ कि यह मेरी परीक्षा लैन कौं खाटिया तरै लुक्यौ है * यौं जानि वह मनमें चिंतति भई अरु जब जार कही रमति क्यौं नाहीं तब वह बोली आज मेरे घरकौ धनी घर नाहीं यातें मेरे भायें आज गांव सूनौं

बनखंड सो लगतु है * पुनि जार कही जो तेरी वासों ऐसोही सनेह हो तो वह तोहि काहे छांडि गयो * उनि कही अरे बावरे तू यह नाहीं जानतु मुनि * कह्योहै कि स्वामी स्त्री कों चाहै के नचावै पर नारी को यह धर्म है जु पति कों एक पलहू नबिसारे अरु भर्तार की मार गारी सिंगार जानें सो धर्म कों पावे औ कुलवंती सती कहावे * धनी घरमें रहै कि बाहर पापीहोय के पुन्यात्मा पर नारी वाहि न बिसारै * क्यों कि स्त्री को अलंकार भर्तार है पति हीन अति सुंदरी हू नीकी नलागै * औ तू जार है सो तो पान फूल के समान एक घरी को पाहुनों दैवके संजोग आनि मिल्यो कर्मकी रेख मेटी नजाय बिधाता सों काहू की कछु नबसाय * अरु वह मेरो स्वामी हों वाकी दासी जौ लौं वह तोलों मेरो जीव है वाके मरे हों सती होंउगी * कह्यो है * जो सती होय सो प्रथम तो आपने कुकर्म तें छूटै दूजे के

सो हू वाको भर्त्तार दुष्कर्मी पापी होय तो हू जेते देह में रोम हैं तेते वर्ष वह निज स्वामी कों साथले स्वर्ग भोग करै औ जैसें गारडू सांप कों मंत्र की शक्ति करि पाताल तें बुलावै तैसें ही सहगामिनी आपने पति कों नर्क सों काढि परमगति दिवावै * यह बात सुनि वह खाती आपनें जीमांहिं कहनि लाग्यो धन्य मेरे भाग जु ऐसी नारी पाई कि आप तरै औ मोहि तरावै वह ऐसें बिचारि उछाह कौ मारयो उन दोउअन समेत खाट माथेले नाच्यो * तातें हों कहतु हों कि मूरख दोष देखि हू स्तुति किये प्रसन्न होय* पुनि राजा हंसकही आगे कैसी भई* तब बगुला कहनि लाग्यो *महाराज उनि दूत बिदा कियो है सो मेरेपाछै आवतु है यह जानि जो बूझियै सो करो * या बात कों सुनि वा राजा को मंत्री चकवा बोल्यो कि धर्मावतार यह बगुला दुष्ट है यह काहू को सिखायो आयो है * कह्यो है बैद्य रोगी चाहै

पंडित गुनगाहक ढूंढ राजा सूरसेवक खोज अधि
कारी ठाकुर को विग्रह मनावे * पुनि राजा कही
या बात को बिचार जो करनौं उचित होय सो
करौ * मंत्री कही महाराज प्रथम एक जासूस
पठाय उनको कटक औ बिचार जानिये क्यों कि
राजा की आंख जासूस है * जा राजा के जासूस
रूपी नेत्र नाहिं सो आंधरो है अरु जा के आछे
जासूस हैांय सो नरपति घर बैठ्यो सब संसार
की बिभो देखे * कह्यो है तीरथ आश्रम देवा
लय तो शास्त्र तें जानिये औ गूढ बात जासूस
तें * तातें महाराज जो जासूस जलथल में जा
सकै ताहि पठाइये औ अबही यह बात गुप्त
राखिये क्यों कि जो मंत्र फूटै तो आगलो साव
धान होय * यातें हैं कहत हैं कि नीको जासूस
पठाये युद्ध जीत हो * राजा औ मंत्री ऐसें बतराय
रहे हे कि पोरिया बोल्यो महाराज एक सुआ
जंबूद्वीप तें आयो है स पोरि पे ठाढो है वाहि

बांहा आज्ञा होति है * यह सुनि राजानें चकवा की ओर देख्यौ * तद चकवा बोल्यौ महाराज पहिलेवाकों डेरा दिवओ पाछे बूझी जायगी * इतनी बातके सुनतेही द्वारपाल वाहि डेरादेन गयौ * बहुरि राजा कही अहो बिग्रह तौ उपज्यौ चकवा बोल्या महाराज मंत्री कौ यह धर्मनाहीं जो स्वामीकों लरावै कै भगावै * कह्यौ है बिचार कै युक्त सों बलकरै तौ थोरे पराक्रम हीतें कार्य सिद्धहोय जैसें मनष काठकी सांग तें भारी पाथर उठावै तैसें नरपति हू युक्ति किये जै पावै पुनि कहतु हैं यों तौ सबही सूर हैं पर और कौ बलदेखि नडरि मन स्थिर राखै ताही कों बलबान कहियै * बहुरि जो समें पाय काम करै तौ बेगही सिद्धहोय ज्यों बरषा कालकी खेती * अरु महत के गुन सुभाव येहैं कि समें बिन दूरतें डरावै * औसर पाय नेरे आय सूरातन करै * आपदा में धीरज राखै * सब बातकी

सिद्ध में उतावली नकरै * कह्यौ है धीरै पानी परबत फोरै * महाराज चित्र बरन राजा बडो बली है बलवान के सनमुख युद्ध करनौं जोग नाहीं जो निबल सबल के सनमुख होय लरै तौ दीप पतंग की भांति होय * कै जैसें कोऊ चैंटी कौं पाथरन मारै तैसें माखौ जाय * पुनि कह्यौ है सनमुख युद्ध करिवे कौ काल नहोय तौ कछुआ केसे पाय सकेल वैठिये समय पाय नाग कौ सौ फन निकारियै क्यौं कि समौं जानि छोटौ हू उपाय करै तौ बडे कौं मार ज्यौं बरषा काल पाय नदी कौ प्रवाह ठाढे रूख कौं गिरावै त्यौं समैं लहि सब काम हाथ आवै * यातें सनमुख लरवे कौ बिचार नकरि गढ संवारियै तौ लौं वाके दूतकौं बिरमाय राखियै * कह्यौ है कोट ऊपर कौ एक जोधा सहस्त्र सौं लरै पुनि जा राजा के देस मांहिं गढ नाहिं ताकौ राज शत्रु बेगही लेय कोट बिन राजा कौ राज स्थिर नरहै तातें महाराज

अब कोट बनाइये * कह्यौ है नदी के तीर गढ़ रचिये तरे खाई खनाइये चारौं ओर निबिड़ बन राखिये औ पैठवे निकसवे कौं गैल * भांति भांति के अस्त्र शस्त्र यंत्र गोला भरिये अरु अन्न रस धन जनकौ संचय सदा करिये * राजा बोल्यौ गढ़ साजवे कौ काज कौन कौं दैय * मंत्री कही जो चतुर होय ताकौं देउ * पुनि राजा कही याकाज मांहिं तो सारस निपुन है * प्रधान कही वाही कौं दीजिये * बहुरि राजा नें सारस कौं बुलाय करि कह्यौ कि तुम नीकी ठौरि देखि गढ़ रचो * उन कही महाराज मैं या सरोवर कौं अनेक दिन तें तकराख्यौ है कि याहि मांहिं राखि गढ़ रचिये तो भलौ क्यौं कि याके तीर अन्न अधिक होतु है [illegible] मेंही तें सबकछु होतु है * कह्यौ है रत्न औ कांचन सब वस्तु सों उत्तम है पर मनुष कौं अन्न बिन नसरै * जैसें लौन बिन सब फीकौ तैसें अन्न बिन कछू नीकौ * पुनि राजा

नें सारस सों कह्यौ तुम बेग जाय गढ़रचौ *
इतेक मांहि पौरिया आय बोल्यौ कि धर्मावतार
सिंगल दीपतें ऐक काग मेघबरन नाम आयौहै
सु आप के दरसन की अभिलाषा किये द्वारपै
ठाढ़ो है मोहि कहा आज्ञा होति है * राजा कही
काग दूरदर्शी होतु है यातें वाहि राखबौं उचित
है * मंत्री बोल्यौ महाराज तुम भलीं कही पर
मेरे ज्ञान याहि राखनौं जोग नाहीं क्यों कि यह
थल को बासी औ हमारे शत्रु कौ साथी है यातें
याकौ रहनौं क्यों हू नीकौ नाहिं * कह्यौ है जो
राजा आपनौं पंथ छांडि पराई चाल चलै सो
राजा कूकर दमनक की भांति मरै * राजा पूछी
यह कैसी कथा है तब मंत्री कहनि लाग्यौ *
ऐक समै काहू स्यारकौं नगर के निकट कूकरनि
आनिघेर्यौ सो भयमान होय भाग्यौ औ गांव
में जाय ऐक नीलके कुंड मांहिं गिर्यौ * जब
नीलवारे नें वाहि मर्यौ जानि वासों काढि गेल

में डारि दियो तब वह शृगाल भयकौ मार्‌यो नगरकी गली मांहिं मृतक व्हैरह्यौ * तहां पनहारियन वाहि पर्‌यो देखि आपस में पूछ्यो आली यह कौन जंतु है * काहूनें कह्यो बीर यह स्यार है पुनि ऐक उन मेंतें बोली अरी याकौ कान काटि बालक के कंठ में बांधै तौ डाकिनी नलागे * दूजी बोली बहनि याकी पूंछ काटि मौडा के गरे में डारैं तौ भूत पिशाच नलागै * तीजीमें झट काटही लये तब चौथीने कह्यो याके दांत तोरि छोहराकी गुदी में राखै तौ कछू रोग नहोय * यह बात सुनि वा स्यारनें आपनें मनमें कह्यौ कि या गांव के लोग बडे पापी हैं कान पूंछ काटि अब दांत तोर्‌यो चाहतु हैं यातें यहांतें भ[illegible] तौ बचिये * यह बिचारि वह स्यार व्हांतें पराय बनमें आय सोचन लाग्यौ कि अब मेरौ नील बरन भयौ जामें आपनी प्रभुता होय सो करौं * यह बिचारि वानें सब स्यारनि कों आनि

कह्यो कि आज या बनके देवताओंनें निज हाथनि ओषधीननें अभिषेक करि मोहि या बनको राज दयो है तुम मेरो बरन देखो * यह सुनि विन स्यारनि वा को बरन देखि ताकी बात मानि सबनि हाथ जोरि कह्यो कि अब जो कछु महाराज की आज्ञा होय सो करैं * तब उनि कही तुम सब मेरे पास रहो पुनि वेऊ रहनि लागे ऐसें जब उनि आपनें सजातीन में आदर पायो तब औरहू बनके जीव बाघ चीता आदि सब आज्ञा कारी भये * पुनि उनि स्यार खेददये तद वे स्यार सब जुरि चिंता करि कहनि लागे कि अब काहा करैं * बहुरि विनमें तें ऐक बूढो जंबुक बोल्यो अरे तुम जिन पछताओ मैं याको भेद पायो है कि यह गांव में तो पूं[illegible] कटाय आयो अरु यहां आय इन आपनो नाम राजा कूकरदमनक धरायो ये सिंह चीता अन जानें याकी सेवा करतु है * तातें मैं ऐक उपा

य बिचाखो है कि सांझ समें सब स्यार इकठे हे।
य याके सनमुख पुकारे तब यह हू जाति कौ
सुभाव नछांडि उनमें बैठि बोलि है * कह्यो है
जौ कूकर कौं राज होय तो हू वह टूटी पनही
चबाय निज जात कौ सुभाव नतजे * ऐसें बूढे
स्यार की बात सुनि उननि वैसें ही करी * तब
राजा कूकरदमनक नाहर चीतानि में बैठ बोल्यो
तब उननि वाहि मारि खायो * तातें हों कहतु
हौं कि महाराज आपनौं पंथ कबहू न छांडिये
औ घर कौ भेद बात कौ मरम काहू सों नकहि
ये * कह्यो है खोउर की आग तरु कौं जरावै
यातें महाराज बिदेसी कौं भेद कबहू नबताइये
न घरमें राखिये * पुनि राजा कही अहो बाततौ
ऐसें ही है पर दूरतें आयो है तातें वाहि बुलाय
कै देखिये जो राखिवे जोग होय तो राखिये ना
तो बिदा करिये * चकवा कही महाराज अब ति
हारो गढ साज्यो गयो चित्रबरन राजा के दूत

कों बुलाय बिदा कीजे * कह्यौ है भूपाल और
भूपाल के बसीठ तें ऐकलौ नमिलै तासों आपनी
सभा के सब लोगन कों बुलाय बैठारियै तब
सुआ कों बुलवाइयै अरु वाके साथ काग कों दू*
यह सुनि राजानें वैसें ही करि विनदोऊन कों
बुलाय आसन दे बैठाये तब सीस झुकाय कीर
[illegible] अहो हिरन्यगर्भ राजाधिराज तुम कों
श्री महाराज राजा चित्रबरन नें कह्यौ है जो
आपनो प्रान राख्यौ चाहो तो हमारीसरन आ
औ नातो आपनें रहनि कों अनत ठौर करो *
यह बात सुनि राजाहंस क्रोध करि बोल्यौ हेरे
कोऊ जो या बसीठ कों मारै * इतेक सुनि वह
काग बोल्यौ महाराज मो कों आज्ञा होय तो या
दुष्ट कों मारों * चकवा कही धर्मादनाथ इन
राजा को मुख है तातें या कों कछु [illegible]
जैसें व्हां सुनी तैसें यहां आनि कही यह मिथ्या
नभाषै अरु बसीठ के कहे कछु आपनी हानि

न वाकी प्रभुता तासों याकों मारनें काहू भांति
उचित नाहिं * कह्यौ है जा सभा में बूढो नहोय
सो सभा न सोभै सो बूढो नाहिं जो धर्म नजानें
वह धर्म नाहिं जहां सत्य नहोय वह सत्य हूना
हि जहां दया न उपजै * ऐसें समझाय मंत्रीनें
राजा को क्रोध निवारन कियौ पु[illegible]
उठिचल्यौ तद मंत्रीनें वाहि मनाय [illegible]
वस्त्र अलंकार दिवाय राजा तें बिदा करायौ *
जब वह आपनें राजा के पास गयौ तब रा[illegible]
चित्रबरननें वातें पूछी सुक कहो वहदेस कैसो है*
सुआ कही महाराज पहले युद्ध की सामा करो
पाछै हौं कहतु हों * राजा बोल्यौ हमारे लराई
को सब सामान इकठो है तुम कहो * पुनि सुआ
[illegible] भाख्यौ महाराज कर्पूरद्वीप सातवें स्वर्ग
समान है अरु मोपै बरन्यौं नाहीं जातु * यह
सुनि राजानें आपनें सब मंत्रियन कौं बुलाय के
कह्यौ अहो कीर कहतु है कि राजा हंस तें युद्ध

बरी सो तुमतें पूछतु हैां कि अब कहा करनो उचित है अरु मेरो हू मनोरथ यह है कि युद्ध करैां * कह्यो है असंतोषी ब्राह्मन लाजवती वेस्या कुलवती निर्लज्ज औ राजा संतोषी होय तो येसब थोरेई दिन मांहिं नष्ट होय * यह सुनि राजाको मंत्री दूरदर्शी नाम गीध बोल्यौ महाराज आप ने मंत्री मित्र कटक प्रजा आदि सब ऐक मत होंय अरु शत्रु के मित्र मंत्री औ प्रजा में विरुद्ध होय तो युद्ध करिये यह नीति है * राजा कही मेरो दलमें सबदेख्यो यह खानिवारो है पर काहू काम को नाहिं यातें तुम वेग जोतषी बुलाय महूरत देखो * गीध कही पृथ्वीनाथ शीघ्रही यात्रा नबूझिये * कह्यो है शत्रु बिनबिचारे वाकी भूमिमें आइये तो नान्हों हू बडे कों जीतै * सुनि राजा कही जो परभूमि लियो चाहे सो कैान भांति तें लेइ यह तुम कहो * मंत्री बोल्यौ महा राज उद्योग करे मनकामना पूरन होय अरु

बिनउद्योग कछूनहोय * जैसें औषध खायेरोग जाय वाकौ नाम लिये नजाय * अब महाराजकी आज्ञा प्रमान परभूमि लेवेकी रीति कहतु हैं जो राजनीति में कही है * प्रथम तो राजा आप नें मंत्री जोधा महाजन मुखियान कौं बुलाय सनमानकरि साथ लेय अरु शस्त्र [illegible] धन गज घोरा निज लोगन कौ [illegible] जोग होय ताकौ तैसौ सनमान करै पाछै कटक साथलै चलै अरु जहां पर्वत बन उरकी ठांव होय तहां सेनापती कटक इकठौ करि चलै भले भले सूर साथ राखै औ रनवास ठाकुर भंडार नान्हें लोग व्योपारी बीचमांहिं * पुनि राजा औ मंत्री सब पै दृष्ट राखै औ बनवासी पर्वतनिवासी [illegible] आगै धरलेय बहुरि जहां विषम भूमिहोय क बरखाकाल होय तो राजा हाथीपर चढिचलै* कह्यौ है गजकी देहमें आठशस्त्र हैं चारपांव द्वै दांत एक सूंड औ माथौ या तें राजा हाथीअधि

क राखै तौ भलौ क्यौं कि मर्याद चलनौ कोट है
अरु जो घोरानि पै चढि लरैं तिनतें देवता हू
डरै औ पयादेन कौं बल सदा राखै * पुनि पर
भूमि में जाय राजा सदा सावधान रहै काहू कौ
विस्वास कबहू न करै जोगेस्वर की नींद सोवै
अरु राजा आपनें साथ द्रव्य राखै क्यौं कि धन
प्रान तुल्य है बिनधन प्रभुता नाहीं लक्ष्मी पाय
कौ न जूझै मनुष द्रव्यके हेतु सेवाकरतु है *
कह्यौ है नर धनतें बडौ औ धनहीतें छोटौ * पुनि
शत्रु कौ देस लूटि खसोटि कै उजारै क्यौं कि ता
तें अरि दुर्चितौ होय अरु वाकौ अन्न रस ईंधन
न्यार जो पावै सो लूटि ल्यावै औ गढ गढी सर
कूप वापी फोरि नाखै * बन उपबन बारी काटि
डारै * ऐसें अनेक अनेक भांति की पीडा शत्रुकौं
उपजावै औ आपनें लोगनि तें सदा प्रसन्न होय
बतरायौ करै जा तें लोग जानें कि हमारौ स्वामी
हमसौं संतुष्ट है * कह्यौ है ठाकुर के सनमान औ

हितवचन तें जैसो सेवक काजकरै तैसो धनदि
है अरु कटुवचन तें नकरै * पुनि जब सेवक
काजकरिआवै तब वाहि प्रसाद देय अरु जो प्र
साद नदेय तौ वाकी जीविका दूनी करदेय औ यहू
नहोय तौ ताको कमायौ पैसा चुकाय देय * अरु
जो स्वामी सेवक को महीना देत आ... ...
टारै ताको किंकर उदास रहै औ असमय पर
कानीदेय ता तें जो राजा शत्रु कों जीत्यो चाहै सो
दासनि औ सेवकनि कों प्रसन्न राखै तौ जहां
जाय तहां बिजय पावै * अरु या बात कों सुनि
अरिके सेवक भूखे टूटे होंय ते आपतें आप आ
य मिलें तौ लरनौ हू नपरै * बहुरि रिपु के
जीतवे कौ एक बडौ उपाय कह्यौ है कि वाकेभाई
... भतीजान सों भेद उपाय करि तिन को
आदर मान कीजे अरु मंत्री प्रजा कों हू अपनाय
लीजे औ जे लरें तिन को नास कीजे अरु जे स
रन गहें तिनकौ भय मिटाय दीजे * अरि को देस·

उतारिये* आपनों बनाइये* शास्त्रमें कह्यो है या प्रकार नें राजा चलै तो युद्ध जीतै * पुनि राजा बोल्यो मैं जान्यों जातें आपनी जीत औ शत्रु की हार होय ताकी यह रीति है पर शास्त्र के पैंडे तें मनकी उमंग को पंथ न्यारो है मनकी उमंग में जो शास्त्र बिचारै तो न बनै * जैसें अंधकार औ तेज इकठो न रहै * इतनों कहि राजा नें जोतसी बुलाय शुभ मुहूर्त ठहराय भली लग्न में दिगबिजय यात्रा करी * तब राजा हंस के दूत नें आय आपनें राजासों कही कि महाराज राजा चित्रबरन नें मलयाचल परबत के हेठ आय डेरा करे तुम आपने गढकी रक्षा करौ औ आप नों पराये चीन्हों वाकौ मंत्री अतिचतुर है मैं वा की बातसों जान्यों कि उनि हमारे गढ [illegible] कौं आपनौं मित्र काग पठायो है * बहुरि राजा हंस को मंत्री चकवा बोल्यौ महाराज या काग कौं न राखिये * राजा कही जो यह काग वाको पठायो

होनि तौ वा सुआ कों मारनि नउठतौ अरु उन तोता के गये पाछें युद्ध का मता कियो है यह वा तें प्रथम आयो हो * मंत्री बोल्यो महाराज तऊ नये आयेनें डरिये * राजा कही अहो जो नयो आयो आपनों उपकार करै ताहि मित्र जानिये अरु बंधु मित्र होय आपनें काम न... ताहि शत्रु करि मानिये * जैसें बनकी औषधी तुरनकी आई रोगी के रोग कों दूर करि सुखदेइ तैसें कोऊ कोऊ मनुष हू नयो आयो उपकार करि जस लेइ पुनि ज्यों शूद्रक राजा के वीरबर सेवक नें अल्पदिननिही में सहायता करी * चकवा बोल्यो महाराज यह कैसी कथा है पुनि राजा कहतु है

...द्रक नाम ऐक राजा वाकी क्रीडा कौ ऐक सरोवर तामें कर्पूरकेलि नाम राजहंस हो वाकी बेटी को नाम कर्पूरमंजरी तापै आसक्त होय मैं वहां रह्यो * तहां वीरबर नाम ऐक राजपूत काहू देस

तें उद्यम के लिये आय राज द्वार पै ठाढो भयौ अरु उनिं पौरियन तें कह्यौ मोहि राजा सें मिला औ हौं सेवा करनि के हेतु आयो हौं * द्वारपाल यह बात जाय राजा सों कही तब राजानें वाहि बुलायकै पूछ्यौ तुम दिनप्रति कहा लेउगे * उनि कही चारसौ तोला सुबरन * सुनि राजा बोल्यौ और तिहारे साथ को है * उनिकही द्वै हाथ तीजो खडग * राजा कही इतेक हमतें नदियो जायगो * यह सुनि बीरबर जुहार करि चल्यौ तदमंत्रीनें राजासों कही महाराज चारदिन तौ या हि सुवरन दै राखिये औ याको पराक्रम देखिये इतेक जोग है कै नाहिं * मंत्री की बात मानि राजा नें वाहि सोनौं दै राख्यौ * वा दिन कौ कंचन लि वानें आपनें घर जाय आधो तो ब्राह्मनन कौं संकल्प करि दियो अरु वाको आधो भूखे भिखा री भिच्छुकन कौं बांटिदियो औ एक भाग निज भोजनार्थ राख्यौ * याही भांति वह पुत्र पत्नी स्त्री

सहित व्हां रहनि लाग्यौ जब सांझ होय तब खांडे
परी लै राजसेवामें जाय उपस्थित होय * एक
दिन कृस्न चतुर्दशी की आधी रात कौं घनघुम
डि मेंह मड्यौ ता समें काहू नारी के रोवन कौ शब्द
सुनि राजा बोल्यौ कोऊ है * बीरबर कही महा
राज कहा आज्ञा होति है * राजा कही देख तो
कोरोवतु है * राजा की आज्ञा पाय बीरबर चल्यौ
तब राजा नें आपनें मन में बिचार्‌यौ कि मोहि
ऐसौ नबूझिये जु या अंधेरी रैन मांहिं रजपूत
कौं एकलौ पठाऊं * तातें याके पाछें पाछें जाय
देखौं तौ सही यह कहा करतु है या प्रकार राजा
मनमें बिचारि ढार तरवार गहि वाके पाछें ह्वै
लियौ * आगें जाय बीरबर देखै तौ एक नारी नव
जोबना अति रूपवती सब आभरन पहरें ठाढ़ी
धायमार मारि रोवति है इन वासों पूछी तू को
है * उनि कही हौं राज लक्ष्मी हौं पुनि इन कह्यौ
तू रोवति काहे * उनि कही मैं बहुत दिन या राजा

की भुजानिकी छांहमें बिश्राम कियो अरु अब या राजा कों छांडि जाउंगी या दुखतें रोवति हौं इन कही तू काहू भांतिहू रहै * उनि कही जो तू निज पूत कों बलदेइ तोहीं रहों अरु यह राजा अनेक दिन अखंडराज करे * पुनि बीरबर कह्यो माता जो लों मैं आपनें घर है आऊं तौलों तुम यहां रहौ ऐसें कहि घरजाय बीरबर पुत्र औ स्त्री कों जगाय लक्ष्मी केकहे बचन कहिवेलाग्यो तो पुत्री हू जागी * यह बात सुनि सब चुप रहे तद पुत्र बोल्यो धन्य भाग मेरो जु यह देह देवीके निमित्त लागै अरु स्वामी को काजसरै यामें पिता जू बिलंब जिनकरो क्योंकि कबहू तो या काया को बिनासहोय तातें काहूके काज लागै सो तो भलोही है * कह्यो है बिद्या धन प्रान पराक्रम ज्यो को पराये काम आवे ताही को संसारमें जन्म ले नों सुफल है * पुनि बीरबरकी पत्नी बोली जोतुम यह कार्य नकरोगे तो राजा के अन्न तें कैसे उऋन

होउगे* ऐसें बतराय सबदेवीके मंदर पैगये अरु पूजा करि हाथ जोरि इतनौं कह्यौ माता हमारौ राजा चिरंजीव होय राजकरै * यहकहि पुत्र कौ मूंड काटि बीरबर नें देवी कौं दयौ अरु आपनें मनमांहिं कह्यौ कि राजा के अरनतें तौ उतरन भयौ पर अब निपूतौ होय जगतमें जी वनौं उचित नाहिं* यह समझि आपनौं हू सीस काटि भवानी के आगू धर्‌यौ * इनदोउअन कौं मर्‌यौ देखि वाकी स्त्री ने बिचार्‌यौ कि संसार में रांड निपूती ह्वै जीनौं जोग नाहिं* ऐसे ठानि वा हूनें निज माथौ चढायौ * तिनतीननि कौं मर्‌यौ देखि वाकी पुत्रीनें बिचार्‌यौ कि निगोडी नाठी ह्वै जगमें जीवनौं भलौ नाहिं * यह समझि विनहू मस्तक काटि देवीके सन्मुख राख्यौ * यह चरित्र देखि नरपतिनें जी माहिं बिचार्‌यौ कि मोसे जीव अनेक पृथ्वी मे उपजतु खपतु हैं पर ऐसे सूरनर होंने कठिन हैं *तातें अब याका कुटुंब नास

कहि मोहि राज करनों जोगनाहिं * यह सोच स
मझि ज्यौं भूपाल निज मूंड उतारनि लाग्यौ त्यौं
ही देवीनें आय कर गह्यौ अरु कह्यौ राजा तू
साहस जिनकरै अब तेरे राज में भंग नाहिं *
राजा कही माता मोहि राजतें कछु प्रयोजन ना
हिं * पुनि देवी बोली हौं तेरे धर्म औ सेवक के
कर्म पर संतुष्टभई अब तू जो बर मांगै सो
देउं * राजा कही मा जो तुम तुष्ट भई हो तो इन
चारन कौं जीवदान देउ * तब उन पाताल तें
अमृत लाय बिन चारन कौं जिवायौ तब राजा
चुपचाप वहां तें चलि निज मंदिरमें आयौ औ बीर
बर हू उन तीनौं कौं घर राखि आप राजा के स
मीप पंहुच्यौ * नरपति नें वाहि पूछ्यौ तुम गयेहे
तहां कहा देखि आये * पुनि कर जोर उन कही
महाराज एक नारी रोवति ही जो लौं हौं वहां
गयौ तो लौं वह चुपरही मैं वाहि नपायौ पुनि
मैं बगद आपके ढिग आयौ * ऐसें सुनि राजा

नें मन में कह्यौ कि यह कोऊ बडो सिद्ध पुरुष है याकी स्तुति हौं कहांलों करौं * कह्यौ है दया वंत दानी तपसी सत्यबादी औ [illegible] जो आपनी ब डाई नकरै तौ वाहि सिद्ध पुरुष [illegible] गनिये * आगै राजा नें प्रात भये पंडितनको सभ[illegible] बैठि रात्रि कौ सब बृतांत कह्यौ अरु संतुष्ट होय बीरबर कौं करनाटक देसकौ राज दयौ * ताते हौं कह तु हौं सब नये हू बुरे नहोंय संसार में तीनप्रकार के मनुष होतु हैं उत्तम मध्यम अधम * बहुरि चकवा बोल्यौ महाराज यह काज करै जो गना हिं आगे महा राज की इच्छा * कह्यौ है पराई रीस पंडित चतुर कबहू नकरै अरु जो करै तौ वैसें होय जैसें एक छत्रीनें आपनी तपस्यातें धन पा [illegible] वाकी रीस करि एक नाऊनें निज प्रान गंवायौ * नरपति कही यह कैसी कथा है तब चक्रवाक कहनि लाग्यौ

अयो[illegible] [illegible]मांहिं एक चूडाकरन नाम छत्री रहै

तिन धनके निमित्त अति कष्ट करि श्री महादेव जू की सेवा करी तब सदाशिव जूने वाकों स्वप्नमें दरसन दे कह्यो अरे आज पाछली रात्रि समें क्षौर होय स्नानकरि लोठिया कर धरि आपनी पोरि मांहिं कपाट के पाछे लुक रहियो * जब कोऊ भिक्षा कों आवे तब वाहि लकुटनि मारि घरमांहिं लहियो वह सुवरन भर्यो कलस व्हे है तातें तू जबलग जीवेगो जबलग सुखी रहेगो * यह वरपाय विन दूजे दिन नाऊ को बुलाय वेसें ही कियो जैसें भोलानाथ नें कह्यो हो * जद वह भिखारी सुवनर घट भयो तद इनले घर में धर्यो * यह चरित्र देखि वा नौआ नें विचार्यो कि धन पायवेकी जो यही रीति है तोहों हू क्यौंन करों * ऐसें समझि निज घर आय उन हू ऐक सन्यासी मार्यो तब वाहि राजा के सेवक नि पकरि लैजाय सन्यासी के पलटे मार्यो * तातें हों कहत हों कि और कीरीस कबहू न करि

ये * पुनि राजा कही पाछली बात जिन कीजै आगे जो करनौ होय सो करौ मलया गिर पर्वत के नरे राजा चित्रबरन को डेरा है आगे कहा करियै सो कहौ * मंत्री बोल्यो महाराज हम हू सुन्यो है कि वह लरवे कौं आयौ है पर तुम कछु चिंता जिन करौ हम बाहि मारतिहैं क्यौं कि बानें आपनें मंत्री कौ कह्यौ नाहीं मान्यौ * कह्यौ है कि जोशत्रु लोभी कूढ आलसी कायर झूठो औ अधीर होय अरु धन राख न जानें काहू कौ कह्यौ नमानें ताहि बिन कष्ट मारियै * महाराज जौलौं वह हमारो गढ नगर कटक औ घाट बाट नदेखै तौलौं वाके मारिवे कौं सैना पठाइ ये * ऐसें और हू ठौर कह्यौ है कि दूर कौ आयो थक्यौ भूखौ प्यासौ भयमान असावधान रात्रि कौ जाग्यौ औ परबत तरे बस्यौ होय ऐसे शत्रु कौं दौरि मारियै * यातें उचित है कि अबही ह मारो सेनापति वाके दलकौं जाय मारै तौ भलौ

यह बात मंत्री तें सुनतप्रमान राजा नें सेना पती कौं टेरि आज्ञा दई कि तुम याही समें राजा चित्रबनर की सैना कौं जायमारो * उनवैसें ही करी जब चित्र वरन के जोधा अनेक मारेगये तब वह चिंता करनि लाग्यो पुनि वाको मंत्री गीध बोल्यौ अबकाहे चिंता करतु हो * बहुरि राजा कही बाबा जू अब काहू भांति हमारी सैनाकी रक्षा करो * ऐसें भयमान राजा कौं देखि गीध बोल्यौ महाराज कह्यौ है कि गर्वतें लक्ष्मी टरै बुढापो पौरष हरै चतुर संदेह मिटावै अभ्यास करै विद्या आवै न्याय प्रताप बढावै विनयतें अर्थपावै अरु मूर्ख राजाहोय तौ पंडितन की सभातें सोभा * जैसें नदीके तीर रूख हर्यौ रहै तैसें आछी सभा तें राजा कौ मनहू उहउह्यौ रहै * इतनौं कहि पुनि गीध बोल्यौ महाराज तुमनें आपनौं कटक देखि गर्व करि साहस कियो अरु मेरो कह्यौ नमान्यौ तो अनीति कौ यह

फलहै * कह्यौ है * जो राजा मंत्रचूकै तो ताकौ नीति कौ दोषहै जैसें कुपथ्य तें रोगहोय रोग तें मरै * तैसें धनतें गर्व होय औ गर्वतें दुख * पुनि निर्बुद्धी कां शास्त्र यों ज्यौं आंधरे के हाथ आरसी * यह समझि हम हू मौनगहि रहे * इते क बातें सुनि राजानें हाथ जोरि गीधसों कही बाबाजू मोतें अपराध भयौ क्षमाकीजै अरुअब काहूभांति जो कटक बच्यौहै ताहि साथलै निज घर की बाटलीजै * पुनि गीधकही महाराज ऐसौ कह्यौ है कि राजा गुरू ब्राह्मन बालक बृद्ध स्त्री रोगी इनपै ज्यौं क्रोध पडजै त्यौं ही जाय तातें तुम डरौजिन धीरज धरौ * कह्यौहै मंत्री ताही कौं कहियै जो बिगर्‍यौ काज सुधारै औ वैद्य सो जो सन्यपात निवारै यातें तुम कछु चिंता मत करौ हौं तिहारे प्रतापतें वाकौ गढ तोरि कटक समेत आनंदसों घरलै चलिहौं * राजा बोल्यौ थोरौ कटक रह्यौ अब गढ कैसें बिजय

करिहौ * गीध कही महाराज जो संग्राम जीत्यो चाहो तो बिलंब जिनकरौ आजही चलि वाको को ट छेकिये * यह बात सुनतही बगुला नें राजा हंसतें जाय कही कि महाराज राजा चित्र बरन थोरेही कटक तें तिहारो गढ़ छेक्यो चाहतु है यह बात मैं वाके मंत्रीतें सुनि आयो हों * यह बात सुनि राजा हंसनें आपनें मंत्रीसों कह्यो कि अब कहा करियै * चकवा बोल्यो महाराज आप नों कटक देखो यामें कौंन भलो है औ कौंन बुरो भलो होय ताहि धन वस्त्र घोरा हाथी शस्त्र दीजै औ बुरो होय ताहि गढ़ कटक तें बा हर कीजै * कह्यो है जु राजा ऐकसमय तो दाम कों लाख करिमानें अरु ऐक काल लाख कों दा मकरिजानें तो वा राजा कों लक्ष्मी नछांड़े पुनि यज्ञ दान विवाह आपत्य औ शत्रु मारिवेमें जो धन उठावतु है सोई स्वार्थकहै अरु मूरख थोरे देनतें उरि सबही गंवावे * राजा बोल्यो तुम कों

ऐसी कहां की आपदा है * मंत्री कही महाराज कह्यौहै जु लक्ष्मी रिसाय तौ आयौ धनजाय तातें दान कीजिये जो धर्मके आधीन व्है लक्ष्मी रहि बहुरि राजनीति में हू कह्यौ है कि विग्रह के समय राजा आपनें जोधान कौ समाधन करै जो जैसो ताको तैसौ* क्यों कि जे उत्तम प्रवीन कुलीन सीलवंत सूर वीर धीर नीकै पोखे होंय ते पांचे पांच सौनें लरैं * अरु अकुलीन अप्रवीन अधम अधीर कायर निर्लज्ज होंयतें पांचसौ पांचनें परांय * महाराज पुनि जा राजा कौ मंत्री असावधान होय ताको हू राज नरहै अरु जो राजा आप नौं परायौ नजानें मंत्री की प्रतीत नमानें सेवक कौ दुखसुख नगनें सो राजा बकहू निचंतौ नरहै * औ जो राजा आप नौं परायौ बूझै सेवक कौ दुखसुख विचारै ताके लिये सेवक धन तन प्रानदे सहायता करै * राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हे कि ताही समें मेघ

बरन काग आय जुहार करि बोल्यौ महाराज शत्रु युद्ध करिवे कौं गढके बार आयो है मोहि आज्ञा होय तौ बाहर निकरि संग्राम करौं अरु आपके लौन उतरन होंउ मंत्री कही बनतें निकस्यौ सिंह अरु स्यार समान है यातें गढतें ननिकसियै * कह्यौ है जो राजा आप ठाढौ रहि युद्ध देखै तौ कायर सिंह समान होय लरै तातें अरहो कोटके बार जाय युद्ध करनौं जोग नाहिं * इधर तौ राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हैं अरु उत चित्रबर राजानें दूजेदिन गीध सों कह्यौ कि बाबाजू जो प्रतिज्ञा करीही ताको निर्वाह करौ गीध बोल्यौ सुनौं महाराज आगरेके योरे जोधा होंय कै राजा मूर्ख औ मंत्री कायर होय तौ गढ उतावलौ टूटै सोतौ वहां ऐको गति नाहिं ताते वहां के लोगनितें भेद उपाय करियै कै घेरौ ना खि अन्न रस रोकि सब मिल साहस करैं तौ गढ पावैं कह्यो है जैसो बल होय तसो जतन

करियै इतनौं कहि पुनि मंत्रीनें राजा के का
में कह्यो कि महाराज कछु चिंता जिनकरौ ह
रौ काग वाके गढमें है सो काम करि है * आ
गे प्रात होत राजा चित्रबरन स लै गढकी
घेरि जाय लाग्यौ * इत समय काग लाय
लगाय गढ लियौ लियौ करि पुकाह्यौ तब तहां
के जीवनके पग छूटे वे सब दौरि पानीमें पैठेऔ
राजा हंस सुकमारता तें पराय न सक्यौ तद ए
सर्वमित्र नाम कूकडौ राजा चित्रबर कौ सैना
पति तिन आय हंस कौं छेक्यौ * तब सारस वा
के सनमुख होंनि लाग्यौ तहां हंस बोल्यौ तुम
मेरे निमित्त जिन जूझौ हौं ह्यां रहौं तुम मेरे
पुत्र चूरामन कौं लैजाय राजकरौ * सारस कही
महाराज आप ऐसीबात जिन कहौ जौलौं चंद्र
सूरज तौलौं तुम अखंड राज करौ हौं आप के प्र
ताप सौं गढमें सब शत्रुनि मारि बिछावतु हौं *
कह्यौ है छिमावंत दाता गुनगाहक सुखदाय

सा धर्मात्मा ठाकुर कहां पाइयै * राजा कही भक्ति
वंत निष्कपट चतुर सेवक हू कहां पाइयै * पुनि
सारस बोल्यौ महाराज संग्राम तज तौ भा
जियै जौ मृत्यु न होय अरु जौ निदान मृत्यु ही है
तौ आपनौं जस मलीन करि काहे मरियै * बहु
रि जौ या अनित्य सरीर सों जगत मैं नित्य जस
पाइयै तौ यातें कहा उत्तम है या मैं तुम तौ
हमारे स्वामी ही हौ * राजा कही यह तुम भली
बिचारी हमहू ऐसौ ही करि है * सारस बोल्यौ
महाराज आप ऐसौ बिचार जिन करौ क्यौं कि
स्वामी के देह छांडे प्रजा अनाथ होय अरु सेवक
कौ तौ यह धर्म ही है कि जौलौं बनै तौलौं स्वा
मि राखिवे कौ यत्न करै स्वामी के उदै तें या कौ
उदै अरु अस्त तें अस्त * इतनी बात कहत कहत
जब कुक्कुट नें राजा हंस कौं आय गह्यौ तब सा
रस नें वासों छुडाय पीठ पर चढाय नीर में जाय
छोड्यौ अरु आप आय अनेकन कौं मारि गढ

मांहिं जूझ मस्यौ * पुनि आप राजा चित्रबरण नें सब गढकी मांया लई अरु बंदीजनके पाव न की बेरी हथकरी काट दई * इतनी कथा सुनि राजपुत्रनि विस्नुशर्मासें कह्यौ अहो गुरुदेव राजा हंसके सेवकनि में वह बडौ सोउजु हौ जिन राजाकौं बचाय आपप्रान दियै * विस्नुशर्मा बोल्यौ महाराजकुमार सुनौं उनबडौ काज कियौ देखौ रे कतौ संसार में जसपायौ दूजैस्वर्ग * कह्यौ है जोसे वक स्वामी के लिये रन में प्रान देइ सो परम गति पावै औ जो साथ छोडि भाजै वह नर्कमें पडै औ जगत मांहिं कलंकी होय * इति श्री लालकविविरचिते राजनीति ग्रंथे विग्रह नाम त्रितीय कथा संपूर्णम्

अथ संधि कथा लिख्यते

विस्नुशर्मा बोल्या महाराजकुमार तुमनि विग्रह

तो सुन्यौं अब हौं संधि कथा कहतुहौं * कि जब दोऊ राजा संग्राम करि सैना कटाय रहे तब गीध अरु चकवा ने जा भांति उन कौं मिलायो ताई रीति सो कथा कहतुहौं * राजपुत्रनि कही अहो गुरुदेव हमनी कै चितदै सुनतु हैं आप आज्ञा कीजै * पुनि विष्णु शर्मा कहनि लाग्यो किजद राजा हंस नें चकवा सों पूछ्यौ कि तुम यह जानतु हौ गढ में आग हमारे लोगनि लगाई कै शत्रुके तद चकवा बोल्यौ महाराज तिहारो मेघवरन काग दीसतु नाहीं ताते जान्यौं जातुहै कि होय न होय यह वाही का काम ह * इतनी बात सुनि राजा चिंता करि कहनि लाग्यो कि मैं जान्यौं यह मेरे ही अभाग तें काम बिगर्यौ या मांहिं कछु तिहारा दोष नाहिं मेरे कपाल ही को दोषहै * मंत्री कही महाराज और हू ठौर ऐंसें कह्यो है कि जब देव कोपतु है तब मनुष पर आपदा आ

धनुह अरु कर्म के बस होय अनीति करै हितू
को कह्यो न मानें * जैसें एक कछुआनें आप
नें हितू को कह्यो नमानि काठतें गिर दुख उ
ठायो तैसें कष्ट पावै * राजा [illegible]यो यह कैसी
कथा है तहां चकवा कहनि ला[illegible]

मगध देस में फुल्लोत्पल नाम सरोवर तहां
विकट सकट नाम द्वै राजहंस रहै तिन को मित्र
ऐक कंबुग्रीव कछुआ हू वहां रहै * ऐक दिन
तहां धीवर आये अरु आपस में बैठि बतराये
कि आज रात्रि को यहां बसि माछरी कछुआ पक
रिहैं * यह सुनि कमठ ने हंसनि सों कही मित्र
तुम धीवर की बात सुनी अब हों यहां न रहिहों
और सरोवर में जैहों * हंसनि कही अबही रहो
आगे उपाय करिहैं * कछुआ बोल्यो बंधु तुम जो
कही कि आगे उपाय करिहैं सो आगे की बात
नाहिं * कह्यो है आपदा बिन आये उपाय करै
सो सुख पावै औ नकरै तौ दुख उठावै जैसें

जदभव्य माछरी नें दुख पायौ * हंसनि कही यह कैसी कथा है * बहुरि कमठ कहतु है

पहिलें या सरोवर पर एक बार धीवर आयौ हो तब यहां तीन माछरी रहति हीं ऐक आगति बिधाता दूजी उत्पन्नमति तीजी जदभव्य * जब धीवर आयौ तब आगतिबिधाता नें कह्यौ अब यहां रहनौं उचित नाहीं इतनौं कहि वह और सरोवर में गई * दूसरी बोली जद काजआय परि है तद उपाय करिहौं * कह्यौ है जो उपजी बात कौ उपाय करै सो चतुर जैसें ऐक बनियां की वेटी नें पति के देखत जार कौं चूंबा दै मिसकियौ * तीसरी नें पूछ्यौ यह कैसी कथा है पुनि उत्पन्नमति कहतिहै

बिक्रमपुरमें समुद्रदत्त नाम बनियां ताकी स्त्री कौ नाम रतनमंजरी सो आप नें सेवक सों रहै * कह्यौ है स्त्री के कौंन बडौ कौंन छोटौ आपनें काम सों काम * आगै ऐक दिन वह आप

नें सेवक कौ मुख चूंमतिही वाही समें वाकौ खामी नें आय देख्यौ तब उनि दौरि पति सौं कही साहजू या सेवक बजमारे कों घरमांहिं जिन राखौ यह देमारौ चोर है याही यानें घ्रतौ चुराय खायौ में या कौ मुह सूं घ्यौ सुघृत की गंध आवति है * यह बात सुनि सेवक रूस्यौ अरु कहनि लाग्यौ कि जा घर की धनियानी मुख सूंघै तहां रहनौं भलौ नाहीं * पुनिसमुद्र दत्त नें उनदोऊन कौं मनायौ तातें हौं कहति हौं कि आपत्य समय जाकी बुद्धि फुरै सोई चतुर * बहुरि जदभव्य बोली जो भावै सो होय चिंता को करै * आगें धीवर नें आय जार वा सरोवर में नाख्यौ अरु वे दोऊ बज्यौं तब उत्पन्नमति मृतक ह्वैरहो वाकौं मर्यौ जानि धीवर नें जा रतें वाहर काढि राख्यौ पुनि औसर पाय वह पानी मांहिं जाय गिरी * जदभव्य कौं भावी को भरो सो हो सो धीमर के बस परी तातें हौं

कहतु हौं जो आगत विधाता की भांति उत्पात तें पहिलें भाजि सो भलौ * बहुरि हंसनि कही तुम कैसें चलि हौ * उनि कही मित्र तुम दोऊ ऐक लकरी दोऊ घांतें पकरौ औ हौं बीचतें ग हौं तब लै उडौ * पुनि हंस बोले बंधु तुम नीकी कही पर हमारे जानि जैसें बगुला के उपायतें बालक पन लखायौ तैसें तुम हू करतु हौ * कमठ कही यह कसी कथा है तहां हंस कहनि लाग्यौ

उत्तर दिसा की गैल में कावेरी नदीकेतीर गंधमादन पर्वत पे ऐक रूख तापर ऐक बगुला रहै वाके नीचे बांबी तामें कारौ नाग * जब वह बक अंडा देइ तब सो सांप रूखपर चढि खायलेइ ऐकदिन वह चिंताकरि रह्यौ हो कि काहू बूढे बगुला नें वासों पूछ्यौ कि रे तू ऐसौ दुचितौ क्यों है * इन वासों सब भेद कह्यौ तब उनि कह्यौ कि अरे तू ऐक उपायकर कि बहुतसी माछरी ल्याव औ

न्यौरके बिलतें ले सांपकी बांबी लौं पांति सी ल गाव * जब वह माछरी खात खात आय है तब वा सर्प कौं हू खायहै * यह सुनि उनि वैसें ही करी औ न्यौरनें आय नागके बांबी पर साथ ही पेडपै चढि वाके अंडाहू खा जातें हैं कहतु हैं कि ऐसौ यत्न जिन करौ जा आपनें बिना स होय * जौ तुम लकरी पकरि लटकि चलौ औ कोऊ कछू कहै वाकेर तुम रिसायकै ऊतर देउ औ मुहतें लकरी छूटे औ नीचे गिरौ तौ ह म कहा करैं सो कहौ * उनि कही हौं कहा बावरौ हौं जु बोलि हौं इननि कही भाई तुम जानौ * इतनौं कहि वेदोऊ हंस वाकौं वाही भांति लै उडे * कछुआ कौं लौठिया में लटकत देखि अहेरी बोले दखौरे या कछुआ कौं द्वै पच्छी लिये जातु हैं * एक बोल्यौ जौ यह गिरपरै तौ भूंजिखांउ दूजेनें कही मैं घर लै जांउ यह सुनि कछुआ सों रह्यौ न गयौ तब क्रोधकरि बोल्यौ तुम पथरा

खाउ * इतनी कहत लकरी तें छूटि तरे गिर्‌यो अहेरियन मारि भक्षन कियो तातें हों कहत हों जो मंत्री को कह्यो नमानें सो दुख पावै * आगे ऐक बगुला आयौ तब चकवा बोल्यौ महाराज यह वही बगुला है जाहि पहिले पठायो हो * यह कहतु है गढमें आग मेघबरन कागनें लगाई अरु वह गीध को बठायो आयो हो * बहुरि राजा हंस कही शत्रु के उपकार औ प्रीति की प्रतीति क बहू नकरिये जो करिये तो जैसें रूख को सोवन हारो गिर कै पछताय तैसें पछताइये * बहुरि ब गुला बोल्यौ महाराज द्यंनिं तब मेघबरन गयो तब चित्रबरन नें कह्यो अरु मेघबरन कों कर्पूर द्वीप को राज दीजे अरु या को दुख दूर कीजे * कह्यो है जो सेवक कष्टपाय स्वामी को काज करि आवै ताको तबही भलो कीजै * मंत्री कही महा राज यह उचित नाहिं याहि और कछु देउ अरु मेरी बात सुनिलेउ * कह्यौ है ताको जितनो मान

ताकों तिननें दान नीचकौ उपकार करनें औ बा
रू माहि घी ढारनें समान है पुनि जो नीचकों
बढाइये तो मुनेश्वर की भांति होय * राजा कही य
ह कैसी कथा है तब गीध कहनि लाग्यौ
गौतम ऋषि के तपोवन मांहि महातपी नाम
एक मुनि रहे ताके आश्रम मे काग के मुखतें छू
टि मूसा कौ सिसु गिरयौ * वाहि देखि दया करि
मुनि नें आपनें निकट राखि कन खवाय बडौ
कियौ तब एक बिलाव वाके खैवेकौ घात में आ
यौ करे * यह देखि मुनि नें मंत्रकरि वाकों बिला
व कियौ फेरि एक स्वान आवन लाग्यौ बहुरि या
नें वाहि स्वान कियौ पुनि एक सिंह आयौ करै
तब तिन ताहि सिंह बनायौ पर निज मन मां
हिं मूसाही करि जानें * यह चरित्र देखि गांव
के लोग कहनि लागे देखो रे यह मूसातें सिंह
भयौ सो या मुनिकौ प्रसाद है * या बात कौं सुनि
वा सिंहनें निज मनमें विचारयौ कि जौलौं यह

मुनि रहेगो तौलौं सब लोग मोहि ऐसें ही कह
त रहेंगे तातें या मुनि कों मार खाऊं तौ यह
कलंक छूटै * ऐसें वह जीमें ठानि मुनिके खा
नि कों चल्यो तद मुनिनें वाकी अंतर गति जान
पुनि वाहि मूसा को मूसा बनायो तातें हों कहतु
हों कि महाराज नीच कों ऊंच पद कबहू नदीजै *
यहबात सहज नाहिं सुनों जैसें एक बगुला नें
माछरीखात खात नये मास खानकी इच्छा करि
आपनों गरो कटायो कहूं तैसें नहोय * राजा क
ही यह कैसी कथा है पुनि गीध कहतु है

मालव देस में पद्मगर्भ नाम सरवर तहां एक
बूढो बगुला असमर्थ आप कों ऊदेगी सो जना
परयो करै * वाहि दूरतें देखि एक केंकडानें पू
छ्यो कि भाई तू दुखी क्यों है अरु अहार छोडि
उदास व्है काहे बैठि रह्यो है * उनकही बंधु मेरौ
जीवन तौ माछरीतें सो धीमर कहतु है कि काल
सकारे आप या सरोवर की सब माछरी मारि हैं

या दुरुलतें मैं आजही तें अहार तज्यौ * यहै सुनि वा तडाग की माछरियन आपस में कह्यौ कि या समै बगुला हमारो हितू सी जनातु है अरु अबयाही सों आपनों बचाव हू दीसत कह्यौ है जो उपकार करै तौ शत्रुहू तें बंध करि ये क्यों कि उपकार है सो मित्राई को कारनहै * आगै माछरियन बगुला सों कह्यौ कि तुम काहू भांति हमें राखिलेउ * उनकही तिहारे राखिबे को एक उपाय है कि जो मैं तुम्हें और सरोवर में लैजाऊं तो बचौ * तिननि कही सोई करौ * पुनि वह बगुला एक माछरी मुख मैं लैजाय औ वाहि खाय आवै बहुरि लैजाय ऐसेंही सब माछरी खाई तब एक केंकडा नें हू बगुला सों कह्यौ मोहू कों लैचल * यह नयो मास खान को मनोरथ करि वाहू कों लैचल्यो अरु जहां बैठि माछरी खाई ही तहां लैजाय धस्यो * माछरीन के कांटे व्हां उरे देखि कैं कडा नें बिचास्यो कि मृत्यु

तौ दीसति है पर ऐसौ कह्यौ है जौलौं डरिये जौलौं भय अरु जब भय आयौ तब मरिये के मारिये क्यौं कि जू ऊ मरिये तौ मनमें पछतावौ नरहै * ऐसें बिचारि बिन बलकरि बगुला कौ गरौ काटि डार्‌यौ बक मर्‌यौ तातें हौं कहत हौं कि अपुरस बात करनौं कबहू न बिचारिये खोटौ खुटौ ई नहीं तजतु * पुनि चित्रबरन कही अहो मेरे मनमें ऐसौ आयौ है कि मेघबरन कों यहां कौ राजदीजै तौ घरबैठे आछी पदारथलीजै * गीधकही महाराज अनभई बात कौं बिचारि जौ सुखमानें सो दुखपावै जैसें कुम्हार के भांडे फोरि ब्राह्मन नें दुखपायौ राजा कही यह कैसी कथा है तहां गीध कहतु है

कोटर नगर में एक देवशर्मा नाम ब्राह्मन रहै तिन मेष की संक्रान्ति में काहू यजमानतें एक करुआ सातू कौं भर्‌यौ पायौ सो लैकरि रात्रिकौं काहू कुम्हार के घर रह्यौ अरु करुआ वाके बास

तनि पर धरयौ तब निज मन माहिं बिचारनि लाग्यौ कि या सातू कौं बेचि सात दमरी पाऊंगौ ताकौ कछु और ल्याऊंगौ वाहि बेचि और और बेचि और * या भांति सब धन बधै [illegible] नारियर सुपारी ले बडौ ब्यौपार करि धन बढाय चार बिवाह करि हौं * कह्यौ है ब्राह्मण चार बिवाह करै औ चारौं बरन को है क्षत्री तीन वैश्य है शूद्र एक को है * सुनि जब वे स्त्री आपस मे लरिहैं तब हौं जाकौ औगुन देखि हौं ताके माथे कौं ऐसे लौठिया शत्रू [illegible] * यह कहि ज्यौं लौठया घाली त्यौं सतुआ के करवा समेत उनि कुम्हार के भांडे फोरे * [illegible] कहनि लाग्यौ कि हाय मेरौ कियौ कराया धर गयौ * आगे भांडे फूटे देखि कुम्हार हू नें वाके सब कपरा खोस वाहि [illegible] करि हाते निकारिदियौ ताते हौं [illegible] आगे कौ मनोरथ करै सो दुख पावै [illegible] राजाने गीधसों पूछी कि अब

कहा करनौं उचित है सो कहो * गीध बोल्यौ म
हाराज जो मंत्र राजा चूकै तौ मंत्री मूरख कहा
वैजैसे सांकरी गली में हाथी नचलै तब महा
वत कूं कहावै तातें हौं कहतु हौं कि गढ तौ ति
हारे पुन्य प्रताप तें औ हमारे उपाय सौं हाथ
आयो अरु तिहारी जीत हू जगतनि मानी पर
अब आपने देस कौं चलौ तौ भलौ ताते बरषा
काल मूं उपर आयो औ बैरी बराबर कौ है याते
जो अब अटकि हौ तौ पराई भूमि में तें निकस
नौं कठन ह्वै है * तातें मेरे जानि राजा हिर
न्यगर्भ तें मखसों मिलि हलमलकरि निज
देस कौं पधारिये * कह्यौ है जो मंत्री धर्म राखै
सो राजा कौं सहानी अन सुहानी कहै औ राजा
हू विचारे अन विचारे प्रमान करै * तौ मंत्री
राजा कौ हितकारी जानिये पुनि कह्यौ है जो
आपने समान होय तासौं प्रीति करिये क्यौं कि
लरनौं खांडेकी धार है यह दोऊ ओर तकतु है*

पुनि युद्धमें जूझिवे के समें मित्र धनजन कौ त औ अपनपौ शत्रु केसनमुख मृत्युके हाथ दे होतु है * पुनि राजा कही जो यह बात ऐसे ही तो तुम प्रथमही क्यों न कही जो बरही ते * मंत्री बोल्यो महाराज हमारे बचन आदि अंतलों नमान्यौं मेरो बिचार बिग्रहवारनि का नहो क्यों कि राजा हिरन्यगर्भ के गुन प्रीति करिवे जोग हैं वासों बैर नबूझिये * कह्यो है जो सत्यवंत बलवंत धर्मात्मा प्रतिष्ठित औ अनेक संग्राम जीत्यो होय के जाके भाई बंधु अधिक होंय ताते युद्ध नकरिये क्यों कि सत्यवंत आपनें बोल निबाहे * बलवंत पै कछु बलनचलै * धर्मात्मा जीत्यो नजाय आपसमें वाका धर्म होयसहाय * प्रतिष्ठित कें नामहीतें लोगपरांय * जिनअनेक युद्ध जीते होंय ताकी धाकही सों सब डरजांय औ जाके भाई बंधु अधिक होंय वह कबहू नहारे * यातें हों कहत हों कि महाराज अब संधि करिये

क्यौं कि येसब गुन राजा हिरन्यगर्भ में हैं * इ
तनी बात सुनि राजा हंसके दूतनें आपनें राजा
तें जौं की त्यौं जायकही तब चकवानें दूतसों
कह्यौ कि भाई यह तो तुम अति मंगलकी बात
सुनाई पुनि जाय समाचार ल्यावौ * दूत गयौ
तब राजा हंसनें चकवा सों पूछी कि तुम काहे
कौ मंगल मान्यौं सो कहो * मंत्री कही कि महा
राज कह्यौ है इत नें न लें संधि नकरिये बालक
बृद्ध रोगी लोभी कायर बैरागी देवगुरुनिंदक *
क्यौं कि बालक कौ तेज अति अलप तातें दंड औ
प्रसाद नकरसकै यातें वाकी साथ कोऊ नदेइ *
बूढौ औ रोगी उछाह बुद्धि हीन रहै ताहि सहज
ही मारिये * लोभी अंत अधिकरै यह जानि वा
के संग कोऊ न लरै * कायर आपही रनतें भा
जै * बैरागी सबतें उदास रहै काहू बातमें मन
नदेइ सो आपही हारै * देवगुरु निंदक अधर्म
नें आपही आप नष्ट होय तातें ऐसे रिपु कौं

युद्ध करि मारिये * पुनि कह्यो है जो राजा बिद्या
वानहोय शस्त्र बिद्या जानै देस काल पहिचानै
आपनौं परायौ मानै गुन औगुन मनआनै छमा
मा सहित रहै जहां जैसौ उचित तहां तैसौ करै
नीतिकरि सांच भाषै न्यायमें काहूकी का न न
करै मंत्र सदा गुप्त राखै सो राजा समुद्रांत
पृथ्वी कौ राज भोगै * इतनौं कहि बहुरि च
कवा बोल्यौ महाराज जौ हू गीध मंत्रीने संधि
करबेकी कही पर राजा चित्रबरन अति अभि
मानी है वह वाको कह्यौ नमानि है * कह्यो है
कि भय बिन प्रीति नहोय अरु संधि किये दोऊ
ओर कुशल है * यासों मेरे मनमें एक बात आ
ईहै सोहोय तो भलै कि सिंगलदीप कौ राजासा
रस मेरौ परम मित्र है महाबल वाकौ नाम ता
कौं हौं लिखौं कि वह चित्रबरन के जंबूद्वीप पै
जाय मउराय अरु यहां तुम आपनी सेना कौ
जोरि याकी सेना कौं पीर उपजाओ दिन सात उ

ठत बैठत निकरत पैठत दबाओ तौ जै पाओ *
कह्या है दोऊ नाते होंय तो मिलें लोह की भां
ति * राजा कही नीको जानों सो करो तद रुकरा
नें विचत्र नाम बगुला कों पत्र दै संगलदीप पठा
यो अरु वहां पाती पावत प्रमान सारस चढि
धायो * आगे गीध मंत्रीनें राजा चित्रबरन सों
कह्यौं कि महाराज यह मेघवरन काग गढमें
अनेक दिन रह्यो याहि पूछौ जु राजा हंस प्री
ति करवे जोग है कै नाहिं तब राजानें काग सों
कह्यो कि अहो राजा हंस औ वाको मंत्री कैसो है *
काग बोल्यो महाराज राजा हंस साच्छात युधि
ष्ठिर है अरु मंत्री चक्रवाक की समान चतुर दूजो
पृथ्वीमें नाहिं * राजा कही तें वाहि कैसें ठहकायो
अरु ह्वां कौन प्रकार रहन पायो * काग बोल्यो
कि महाराज राजा जाकी प्रतीत करै ताहि ठहका
बनों किंतेक बात है जैसें जाकी गोदमें सोवे औ
सोई मारे तो सोवन वारे कौ कहा बसाय * चक

दा नें मोहि देखतही पहिचान्यो हो पर राजा हंस नें मंत्री को कह्यो न मान्यो ताही तें मैं वाहि ठग्यो अरु ह्यां रहनि पायो महाराज राजा हंस बडो साहसी औ सत्य वादी है * कह्यो है जो आप सत्य वक्ता होय सो और कों हू आपसो जानें जैसें एक सत्यवक्ता ब्राह्मननें और की बात सत्य मानि बोकरा खोयो * राजा कही यह कैसी कथा है तब काग कहनि लाग्यो

गौतमारन्य में एक ब्राह्मन यज्ञके निमित्त बोकरा माथे लिये आवतु हो वाहि तीन ठगनि देखि बोकरा लैनको आपस में मतो कियो अरु वेतीनों साध को भेष बनाय तीन ठौर जा बैठे * जब वह ब्राह्मन पहिले साधके निकट गयो तब उन कह्यो अरे ब्राह्मन यह कूकर माथे धरि काहे लिये जातु है * इनकही कूकर नाहिं यज्ञ को बोकरा है यह सुनि वह साध चुपरह्यो * आगे दूसरे के पास गयो पुनि उनहू कह्यो रे देवता मूंउपै

स्वान कौं चढायौ इतनौं सुनि इन चूरी मानि वा
हि सीसतें उतारि देखौ अरु संदेह करतु चल्यौ
कि जो देखतु है सो याहि कूकर कहतु है पर मेरी
दृष्टिमें तौ बोक जनातु है * ऐसें सोचतु सोचतु
वह तीजे के निकट जाय पहुंच्यौ तब उन हू
कह्यौ अहो बिप्र कूकरा सिरतें उतारिदे तें यह क
हा अनर्थ कियो जो स्वान मूंड पै धरि लियो *
यह बात वाके मुखतें सुनत प्रमान वाहि कूकर
जानि बिप्रनें माथेतें पटक आपनौं पंथ लियो
अरु विननि बोकलै आपनौं मनोरथ पूरो कियो
तातें हौं कहतु हौं कि दुष्टके बचनतें साधकी हू बु
द्धि चलै * बहुरि जैसें चित्रबरन ऊंट कौं सिंहनें
मारिखायो * राजा पूछी यह कैसी कथा है पुनि
वायस कहतु है
ऐक बनमें मंदोत्कट नाम सिंह ताके तीन सेवक
ऐक तेंदुआ दूजो काग तीसरो स्यार * विन तीन
नि ऐक दिन वा बनमें ऊंट देखौ तब उननि वा

हि पूछ्यौ तू कहांतें आयौ * उन कही मैं साथ भूलि आयौ हौं यह सुनि विन तीननि वाहि लै जाय सिंह सौं मिलायौ सिंहनें हू वाहि अभय दानदै राख्यौ अरु चित्रकरन नाम दियौ पुनि यह सबनके साथ हिलमिल रहनि लाग्यौ * किते क दिन पाछै बरखा कालमें कईएक दिनकी झ रीलागी औ वा समय अहार नजुख्यौ तब विन ती ननि आपसमाहिं कह्यौ कि भाई अब कोऊ ऐसौ उपाय करियै जु सिंह ऊंटहि मारै तौ अहार खै वे कौं मिलै * तें दुजा बोल्यौ मित्र याहि तौ सिंहनें अभयदान दियौहै सो कैसें मारिहै * का क कही अहो समय पाय राजाहू पाप करतु है जैसें भूखी नागिनि आपनें अंडा खाय भूख्यौ क हा नकरै * कह्यौ है मतवारौ असावधान रोगी बृ द्ध अधीर कामी क्रोधी लोभी भूख्यौ उखौ आदि ये सब अधर्म कौं नजानें नमानें * ऐसें बतराय वे सिंह के निकट गये अरु हाथजोरि सनमुख ठा

ठे रहे तब उनि पूछी कछु खैवे कों पायो * इ
ननि कही महाराज बहुत जतन कियो पर कछु
हाथ न आयो * सिंह कही अब कैसें बचिहैं बहुरि
काग कही महाराज आप हाथ आयो अहार
छोरतु हो तातें औरहु ठोर नाही मिलत * सिं
ह बोल्यो सो कहा इन ऊंक कानमें कही याचित्र
करनकों मारिखओ * उनि कही नाहि मैं अभ
य दानदियो ताहि कैसें मारों * कह्यो है भूमि
सुवर्न अन्न आदि दान बडेदान हैं पर सरनाग
त को राखिवो इनहूतें अधिक फल देतु है *
बहुरि कागकही महाराज तुम जिनमारो हम
ऐसो उपाय करिहैं जुवह आपही जीवदान
करि निज सिर तुम कों देहै * यह सुनि सिंह चुप
व्है रह्यो तब कागनें वाको मनोरथ जानि कपट
करि चित्रकरन सों कह्यो कि तोहि तो राजा नें अ
भय दानदियो है परंतु या समय तुम विनतें अ
हारकी मनुहार करो तो राजा तुमतें अतिप्रस

न होयगो * ऐसें वाहि फुसलाय सिंह पास
लैजाय उन तीननि हाथ जोरि कह्यौ महाराज
यह चित्रकरन कहतु है कि अहार तौ कछू नाहीं
मिलतु औ तुम अनेक दिनके भूखे हौ तिहारौ
दुख मोपै नाहीं देख्यौ जातु तातें तम मोहि मा
र खाऔ * कह्यौ है राजातें प्रजाकी रक्षा है प्रजा
कौ मूल प्रजापति है अरु मूल रहै तौ डारि पा
त फूल फल आपहीतें होंय * पुनि सिंह कही
अरे जलमरिये सो भलौ पर ऐसौ कर्म नकरि
ये * जब स्यार बोल्यौ महाराज ऐसेंही कह्यौ है
तब तौ चित्रकरनहूनें सिंहकी दृढता जानि मनु
हार करि कह्यौ महाराजआप मेरौ सरीर खाऔ *
इतनी बात वाके मुखतें सुनतही सिंहनें वाहि दौ
रि मार्‌यौ अरु सबनि मिल भक्षन कियौ * महा
राज तातें हौं कहतु हौं कि दुष्टके उपाय औ
उपदेस सों साधहूकी मनसा डिगै * बहुरि रा
जा चित्रबरन बोल्यौ अहो मेघबरन तुम इतेक

दिन शत्रुनि माहिं कैसें रहे अरु कौंन भांति उ
नतें तुमतें प्रीति निभी * वायस बोल्यौ महाराज
कह्यौ है कि स्वामी के काज शत्रु हू कौं माथे च
ढाइये औ गिराइये ऐसें जैसें नदी पाय धोय
धोय रूख कौं गिरावै पुनि जो सुबुद्धी होय सो
ऊ आपने प्रयोजन के निमित्त बैरी हू कौं माथे
चढाय निजकाज साधै * जैसें बूढे सर्पने सिर
चढाय मेंडुक खाये * राजा कही यह कैसी कथा
है तबकाग कहतु है

काहू बनमें ऐक अति बूढो मंदविष नाम नाग
रहै सो अहार कौं फिर नसकै तातें सरोवर के
तीर पस्यौ रहै * काहू दिन ऐक दादुर नें वाहि दे
खि दूरतें कह्यौ अहो तुम जो अहार नाहीं खोज
तु परेई रहतु हौ सोकहा है * उनकही हौं कहां
जांउ औ मो अभागे कौंको बूझतु है * इतनी सु
नि विन याहि आचार्यजानि कह्यौ कि तुम आप
नी अवस्था कहौ तब सर्प कहनि लाग्यौ

या ब्रह्मपुरी में कौंडिन्य नाम ब्राह्मन वाकौ बीस बरष कौ पुत्र पढ्यौ गुन्यौ मैं आपने अभाग्यतें उस्यौ नव कौंडिन्य सुसील नाम पुत्र कौं मर्‌यौ देखि सोग सौं घूमि भूमि पै गिर्‌यौ पुनि वाके भाई बंधु औ गांव के लोग सब आय जुरे * कह्यौ है सुख दुख समै असमें शुभ अशुभमें जे इष्ट मित्र बंधु होंय ते सुधि लेंइ * आगे ऐक कपलिदेव नाम ब्राह्मनने आय याहि समझाय बुझाय कै कह्यौ अरे कौंडिन्य तू अति मूर्ख है जो अब खेद करतु है क्यौं कि संसारकी तौ यही रीति है कि इत उपज्यौ उत मर्‌यौ तातें याकौ शोक कहा * देखौ सैना सहित युधिष्ठिर से पुरुष नर हे तौ औरकी कहा चली बहुरि देहधारी कौं मृत्यु ऐसें लगी रहति है कि जैसें संपत में बिपत प्राप्ति मे हानि संयोगमे बियोग ज्ञानमे ग्लान * पुनि यह देह छिन छिन यों घटति है ज्यौं जलमें काचौ घट घटै * कह्यौ है सरीर जोबन रूप द्रव्य

ठकुराई मित्राई औ एक ठौरकौ बास ये सब अ
नित्य हैं याते जो ज्ञानी चतुर पंडित होय सो
इनके गये को सोच नकरै * अरु सुनौं जैसें नदी
के प्रवाह में जहां तहां के काठ आय मिलत हैं ते
सें या संसार के जीव हैं इनतें जो तौ सनेह कीजै
तौ तौ दुख होय क्यौं कि जगमें सदा काहू कौ सा
थ नाहीं निबहतु अरु जौ आपनीही देह साथ
नदेय तौ औरकी कहा चली * कह्यौ है मायाकि
ये यों दुखबढे जौं कुपथ्य किये रोग पुनि काल
ऐसें चल्यौ जातु है जैसें नदी कौ जल यासों या
संसारकीमाया छांडिदीजै अरु साधकी संगति की
जै संगति साधकी सब सुख सों अधिक सुख देतु
है (दोहा) तीरथ ब्रत जग देवता लाल मंत्र
द्रुम खेत * कालपाय फल देतु हैं साधसदा फल
देत * अरु मित्र सुनौं जैसें बरषा काल में चाम
के बंधन ढीले व्हैजातु हैं तैसें वृद्ध अवस्था में या
सरीर के * इतनी बात कहि पुनि कौडिन्य सों क

पलदेव नें कह्यौ भाई अबदुख जिन करौ आप नें प्रान राखवे कौ उपाय करौ * यह सुनि कौ उन्य उठिबोल्यौ बंधु अब या ग्रह रूप कूपमें नरहि हौं बनमें जैहौं * पुनि कपिलदेव कही भाई अनुरागी कौं बनहूमें दोष औ उदासी कौं घरहीमें मोक्ष * कह्यौ है जो जन फलकी वासना छांडि विष्णु भजन करै ताहि बन औ घर समानहै अरु कौनहू आश्रम में रहि दुखसहि धर्म कर्म दान तप ब्रत यज्ञ करै औ सब जीव पै दया राखे ताही कौं तपसी जानिये * पुनि जो प्रान राखवे कौं अहार संतान कौं मैथुन करै औ सत्य वचन भाषै सोदुख रूपी समुद्र कौं तरै * कह्यौ है आत्मा रूपी नदीके संगम पै पुन्यतीर्थ सत्य जल शील करार दया तरंग तामें जो स्नानकरि अंतःकरन शुद्धकरै सो जनम मरन व्याधतें छूटै यह संसार सार नाहीं मनुष दुखकौं सुख करि मानत है * जैसें बोझकौ वाहनि हारो मो

ठ पाय सुखमानें तैसें मनुष की गति है * बहु
रि कौंडिन्य बोल्यौ भाई तुम सांच कहतु हो यह
बात ऐसें ही है * इतनी कहि विन लांबी सांसलै
मोहि तो यह आपदियै कि तू मेंडुकन कौ वाहन हो
उ अरु वानें आप ग्रहस्थाश्रम छांडि सन्यास धर्म
लियो तातें अब मैं वाको दियो आप भुगतवे कौं
आयो हों * यह बात सुनि दादुरनें आपनें राजा
सों जायकही तब जलकुंद नाम मेंडुक मेंडुकन कौ
राजा बाहर आयो पुनि नागनें वाहि प्रनामकरि
मूंडपे चढायो अरु ताल के चहुं घां लैफिस्यौ *
दूसरे दिन जब वह आय चढ्यौ तब वह चलनसक्यौ
पुनि दादुर बोल्यौ उतावलो चल * सांप वाही
स्वामी मोपे मारे भूखके चल्यौ नाहीं जातु * उन
कह्यौ तू मेरी आज्ञातें सेना के मेंडुक खायो कर *
बहुरि सांपनें हाथजोरि कह्यौ महाराज तुम मे
री बडी सहायता करी यों कहि पुनि खानि ला
ग्यैा कितेक दिनमें सब मेंडुकन कौं खाय उनि

जलकंद कौंहू खायौ तातें हौं कहतुहां कि जो च
तुर होय सो आपनौं कार्य साधवे केलये शत्रु हू
कों माथे चढावतु है * महाराज ऐसें ही मैं हू
राजा हिरन्यगर्भ सों प्रतीतबढाय गढमें रह्यौ *
आगे राजा चित्रबरननें गीध सों कही कि बाबा
जू अब राजा हंस हमारौ होय रहै तौ वा कौं ब
साइये नातौ आपनें लोभ * यह बातराजा चित्र
बरन मंत्री तें कहनि न पायो हो कि ऐक दूत
नें आय कह्यो महाराज संगलद्वीप कौ राजा
सारस तिहारे देसपै चढि आयौ है जो नगर बचा
यौ चाहो तो बेग सुधलेउ ना तौ रहनौं कठिन
है * यह सुनि राजा मौंन गहि रह्यौ अरु गीध
मंत्रीनें मनमें कह्यौ कि होय नहोय यह चकवा
को काम है * पुनि राजा मयूर क्रोधकरि बोल्यौ
कि यहकाम रहै चलौ प्रथम वाही कौं खेदका
ढें * गीधकही महाराज सरद कालके मेघ को
भांति बृथा नगाजिये बलकरि दिखाइये नीति

तो यों है कि ऐकही बेरि दिसदिस के लोगनि सों बैर न करिये * कह्यो है अनेक चेंटी हू मिलें तो गज कों मारें तातें महाराज मेरेजान तो राजा हंसतें बिनप्रीति किये य्हांतें निभनों हू कठिन होयगो क्यों कि चलतही शत्रु पीछो करिहै यातें बिचारकरि कार्य करो। बिनबिचार्यो काम किये पाछें पछितावो होतु है * जैसें बिना बिचारे न्योरमारि ब्राह्मनी पछताई * राजा कही यह कैसी कथा है तब गीध कहतु है

उज्जैन नगरीमें ऐक माधो नाम ब्राह्मन ताकी स्त्री नें पुत्र जायो सु ऐक दिन वह ब्राह्मनी पुत्र की रखवारी ब्राह्मन कों राखि आप नदी न्हेवे कों गई अरु ताही समय पंडित कों राजा को बुलावो आयो तब वानें बिचार्यो कि जो हों नजाऊंगो तो राजा जो दान देइगो सो और कोऊ लेजायगो * कह्यो है लेनदेनके काजमें उतावल नकरिये तो वह ओसर बीते हाथ न आवे आ जो जाऊं

तो बालक कौन कों देजाऊं * यह बिचार वह ब्राह्मन ऐक बहुत दिन को पोष्यो न्यौर हो ताहि वा छोहरा के निकट रखवारी राखि आप राजाके हां गयो * आगें सो उाके निकट ऐक सर्प आयो ताहि न्यौरनें मारखायो जब ब्राह्मनी आई तब न्यौर दौरि वाके पायन पै गिस्यो * उनयाको मुंह लोहू भस्योदेखि निज मनमें जान्यो कि इन चांडालनें मेरो पूत मारिखायो * यह समझ ब्राह्मनी ने न्योरकों मारिडास्यो पुनि आगू जायदेखै तो छोहरा खेलतु है अरु वाके निकट सांपमस्यो पस्यो है तब वह पछतायकबोली कि हाय मैं पापिन यह कहा कर्म कियो जु बिनदेखे भाले बापरे न्यौर को जीव लियो * तातें हों कहतु हों कि महाराज बिन बिचारे कबहू कछु काज नकीजै अरु काम क्रोध लोभ मोह तज दीजै क्योंकि इनही दोषन तें राजा पृथ जन्मेजय रावन औ कुंभकरन मारेगये अरु देखो शत्रुभाव छांडि परशुराम

औ अंबरीच नें जितेन्द्री होय अनेक दिन राज किये। तातें हों कहतु हों कि महाराज जो मेरी कह्यौ मानौं तौ या राजा नें प्रीति करि चलौ * कह्यौ है प्रथम तौ पराई भूमि मांहिं जाय डेरा करनौं कठिन अरु किये पाछै उठावनौं अति कठिन है यासों कार्य्य साधिवे कौं चार उपाय कहे हैं साम दाम दंड भेद पर इनमें साम उपाय सों वेग काम सिद्ध होतु है * राजा कही प्रीति उतावली कैसें होय * गीध बोल्यौ वेगही होय * कह्यौ है साध देखतही मिलै औ मूरख कछू न समझै जो ब्रह्मा हू वाहि चितावै तौहू न जानें न मानें अरु महाराज राजा हंस तौ बडो साधु है औ वाकौ मंत्री सर्वज्ञ नाम चकवा अति चतुर है मैं कागके कहेतें उनकी करनी औ करतूत जानी * कह्यौ है जाहि न देख्यौ होय ताके गुन औ कर्म सुनि सुनि कै वाहि पिछानिये * राजा कही अनेक बात करिवे तें कहा प्रयोजन अब जो उचित होय सो करौ * या

वातके कहतही गीधराजानें आज्ञा लै गढमें ग
यो अरु आपनें आवनको समाचार चकवासों
कहि पठायो वानें सुनतही आपनें राजा कों
जा सुनायो तब राजा हंसनें चकवा सों कह्यौ कि अ
ब जो गीधके पाछे औार कटक आवें तौ कहा क
रिये * चकवा बोल्यौ महाराज यह संका करवेकी
ठाम नाहिं क्यों कि यह गीध बडौ पुन्यात्मा है
यातें कछु चिंता नाहिं * कह्यो है बिनभय की ठौ
र संदेह करनों कुबुद्धी को काम है * इतनीकहि च
कवानें जाय गीध कों ल्याय राजा हंस सों गढके
द्वार आगे मिलायो तब राजाहंस नें गीध कों आ
दर दै बैठायो * पुनि गीध बोल्यो महाराज यह
गढ आपको है जाहि दियो चाहो ताहि देउ *
हंस कही यह बात ऐसें ही है * बहुरि चकवा बो
ल्यौ सुनों हमारो तिहारो एकही है पर अब कछु
अधिक कहिवे को प्रयोजन नाहिं * गीध बोल्यौ
महाराज नीति शास्त्रमें कह्यो है कि लोभी को

धनदै भलौ मनाइयै उग्रहोय ताकी कहजो स्तुति गाइयै * मूरख कौ कह्यौ राखियै पंडितनें सत्य भाषियै * देवता की निष्कपट पूजाकीजै * मित्रबंधु कों अति आदर दीजै * सेवक औ स्त्री कों दानमान तें बसकरियै तौ या कठिन संसारमें सुखसों दिन भरियै तातें हों कहतु हों कि जो उचित होय सो अब करियै * चकवा बोल्यौ जो संधिकी रीति है सो कहो अधिक बातकहिवेतें कहाकाम * पुनि राजा हंसनें कह्यौ कि संधि के कितेक प्रकार हैं सो कहो * गीध बोल्यौ धर्मावतार हों कहतु हों आप चितदै सुनियै * कह्यौ है कि जब बलवान पै अति बलवंत चढिआवै अरु वा पर याकौ कछु बल नचलै तब संधि उपाय करै * संधिके नाम * भूपाल उपहार संतान संगति उपन्यास प्रतिकार संयोग पुरुषार्थ अदृष्ट जीवन आत्मा उपग्रह परिक्रिय उच्छिन्न परिभूषन * अरु येसंधिगति हैं * समान तातें द्वै राजा मिलैं सो भूपाल संधि

कहावै * दानदै प्रीतिकरै ताहि उपहार संधि कहत हैं * दासी दै मिलै वाहि संतान संधि बहिये * पांच सातमिल बीचमें परि प्रीति करावें ताहि संगति संधिकहिगावें * द्वैराजा एकही काज करि आपस मांहिं हितराखें सो उपन्यास संधि * अबहम इनको काज सारें पाछे ये हमारे काज आय हैं ऐसें बिचारि जो मिलै सो प्रतिकार संधि * एकही शत्रुपर द्वैनरपति चढैं अरुपैंडे में मिलैं वह संयोग संधि * आपनें जोधान कों साथले मिलै वाहि पुरुषार्थ संधि कहैं * तुम वाहि मारो हम तिहारे ह्वैरहैं यों कहि मिलै सो अदृष्ट संधि * भूमिदै प्रीति करै वह जीवन संधि * प्रानराखिवेकों सर्बसदेय ताहि आत्मा संधि कहैं * आपनों कटक सेवा कों पठावै सोउपग्रह संधि * द्वै राजा आपसमें बैरभाव राखें पुनि काहु शत्रुके घेरेमें आय दोऊ मिल जांय सो परिक्रिय संधि * सारभूमि दे मिलै वह उच्छिन्न संधि * जो

द्रव्य उपजैगो सो तुमकों देहैं परनिकट जिनआ
औ ऐसैं कहि मिलै वाहि परिभूषन संधिकहि
ये * इतेक बातें कहि गीध बोल्यो महाराज ये
सब संधि कही पर या समय उपहार संधिही
भली है क्यों कि जो बलवंत आपनों देस छांडि
ग्रांठिको धनखाय आवै सो बिनभेट लिये नजा
य तातें बिनदिये संधिनहोय * अब धनदीजै
औ उपहार संधि कीजे * चकवा बोल्यो सुनों
यह आपनों वह परायो ऐसो जे बिचारतु हैं ते
अधम जनहैं अरु उत्तम जननि कौ तौ ऐसो
बिचार नाहिं वे तौ सब अष्टिही कौं कुटुंब जानतु
हैं * कह्यो है जे पुरुष पर स्त्री कौं माता करि मा
नें औ दूजेके धन कौं माटी समान जानें पुनि
सब जीवन को जीव आपनों सो गनें ते ई याजग
तमें पंडित औ धरमात्मा हैं * बहुरि गीधकही
तुम यह कहा कहतु हो सुनो मेरे ज्ञान जिन सं
सारमें आय या छिन भंग देह कौ धर्मछांड्यो ति

न सर्बस गंवायो * कहतु है कि जैसें जल मांहिं पवन चले चंद्र को प्रतिबिंब चंचल रहतु है तैसें ही प्रानी को मन सदा अस्थिर रहतु है तातें या मनष कों उचित है कि देहकी माया छांडि आपने कल्यान को काज बिचारै अरु सदा सर्बदा सज्जननि की संगति करै क्यों कि वासों धर्म औ सुख दोऊ मिलैं या सों हों कहतु हों जो मेरो कह्यो मानों तो ऐसें ही करो * कह्यो है सहस्त्र अश्वमेध की समान सत्य है पर जो खियै तो सत्य ही अधिक होय यातें हों कहतु हों कि अब दोऊ नरपति सत्य बीचदै मिलो अरु उपहार संधिकरो तो अति उत्तम है क्यों कि यामें सांपमरै न लाठी टूटै * चकवा बोल्यो तुम नीकी बात कही * यह सुनत ही राजा हंसनें रत्न वस्त्र अलंकार द्रव्य दूरदर्शी गीध कों दियो अरु विन हूले प्रसन्न व्है सर्वज्ञ चकवा कों साथ करि राजा हंस सों बिदा होय आपनें कटक कों प्रस्थान कियो * व्हां जाय व्हां को

सब वृत्तान्त सुनायौ औ चकवा कौं राजा चित्रबरन
नें अति आदरमान सौं मिलायौ तब राजानें हू
बडे मान सौं पान औ प्रसाद दे चकवाकौं बिदाकि
यौ * इत चकवा राजा हंसके निकट आयौ अरु
उत गीधनें चित्रबरनकौं टेरसुनायौ कि महाराज
तिहारी सबमनकी बांछापूजी अब कुशल क्षेम
आपनें देस चलौ * यह सुनि राजा मयूर वहां
तें चल्यौ अरु आनंदतें आपनी राज धानी में
पहुंच्यौ दोऊ राजा आप आपनें देस में सुखसों
राज करनि लागे * इतनी कथा कथ विष्णुशर्मा
बोल्यै महाराज कुमार अबजो कछु तुम्हें सुनिवे
की इच्छा होय सो कहौ * राजपुत्रनि कही अहो
गुरुदेव हमनें तिहारे प्रसादतें राजनीतिके सब अं
ग जानें सुखपायौ अज्ञान नसायौ मनकौ खेद
गंवायौ मानौंनयौजन्म भयौ * इति श्रीलाल कवि
विरचिते राज नीति ग्रंथे संधि नाम चतुर्थ कथा
संपूर्णम् *

अथ लब्धप्रनाश पंचम कथा लिख्यते

बिस्नुशर्मा बोल्यौ सुनिये महाराजकुमार या कथाके पढेसुने तें मनुष कठिनताके समद्रकौं ऐसें तरै जैसें बानर आपनी बुद्धिसें तस्यौ अरु जो कपटसें काज लियौचाहै औ अधूरे काम मांहिं मनोरथ कहि देय सो ऐसें ठगायौ जाय जैसें मगरमछ ठगायोगयौ * राजपुत्रनि कही यह कैसी कथा है तब बिस्नुशर्मा कहनि लाग्यौ

समुद्रकेतीर काहूठौर ऐक जामन कौ पेड सफल तापै रक्तमुख नाम ऐक बानर रहै* काहू समै सा गरकी लहर कौ मास्यौ ऐक बिकराल नाम म गरमछ वहां आयौ अरु बृच्छ तरै कोमल बालू में जायबैठ्यौ तब मरकटनें वासों कही अहो तू आज मेरौ पाहुनों है यातें मैं जंबूफल देतुहों तू

मनभरि भोजन कर * कह्यो है हितू होय कै अनहि
तू पंडित होय कै मूर्ख भोजन समय आवै तासों
अतिथि धर्म कीजै (दोहा) आवै भोजन के समय
शत्रु चोर चंडार * अतिथि जानि पूजा करैं जग
में परम उदार * आगे वह मगर फलखाय संतु
ष्टभयो पुनि नित आवै नित जाय भली भली वा
तें कहै सुनै फलखाय अरु पाकेपाके फल आ
पनी स्त्री हू के लिये लैजाय * एक दिन वानें पूछी
अहो कंत ये अमृतफल तुम कहांतें ल्यावतु हौ
इन कही मेरौ एक परम मित्र रक्तमुख नाम
वानर है सो मोहि प्रीति सहित ये फल देतु है *
पुनि वह बोली जो ये अमृत फल नित खातु है ता
कौ करेजा अमृत सम होय गौ तातें तू वा कौ
करेजा मोहि ल्यायदै मैं वाहि खाय तृप्ति होय
तासों क्रीड़ा करौंगी * मगर कही एक तौ वह
मेरौ परम मित्र दूजै फलकौ दाता ताहि मैं कैसे
मारिहों * कह्यो है संसारमें है प्रकार के भाई हो

तु है एक तो मांजायो दूजो मुखगायो पर आप ने सहोदर भाईतें वाहि अधिक जानियै * बहुरि वह बोली सुनि अबलों तो मेरो कह्यो तें कबहू न उलंघ्यो हो पर आजतें नमान्यों ताते मैं जान्यो कि जाहि तू बानर कहतु है सो नाहिं वह बानरी है तातें तू आशक्त भयो है वाही के अनुराग तें दिनभर करो रतु है सो मैं जान्यो * याहीतें तू मेरे पास आय वाहीकी बातें नित हंसिहंसि कह्यो करतु है औ रात्रि कौ सोवत समें तेरो अंग सिथल रहतु है मैं अब बूझी कि तेरो मन और नारि सों लाग्यो है * अधिक कहा कहौं जबलों आप नी सौतकौ करेजो नखाऊंगी तबलों अन्न पानी नकरौंगी अरु प्रानदै मरौंगी * यह सुनि उरि मगर दीनहै बोल्यो प्यारी हों तेरे पाय परतुहौं तू जिन रिसाय * यों सुनि वाहि अधीन भयो जानि आंखनि में आंसू भरि बोली अरे धूर्त कंत आजलौं तो ते मेरे अनेक मनोरथ साधे पर अब तू

और सों स्नेह करि मेरौ निरादर करतु है याते तेरौ
पायन कौ परबौ दूनों उर दाहतु है अरु जो तेरौ
प्रेम वासों नाहीं तौ कौन मेरौ नेम पूरौ करै *
पुनि वह निजमनमें कहनि लाग्यौ कि साधु ज
न सांच कहतु हैं * (दोहा) पाहन रेखरु तरुनि
हठ कुक्कुट क्रोध सुभाव * नीलरंग सम ना मिटै
की नेहु कोटि उपाय * तातें मोहि याके मनोरथ
कौ यत्न करनों बन्यौ यह बिचारि व्हांतें उठि बान
र के पास जाय मगर अनमनौं क्वै बैठि रह्यौ
पुनि मरकट नें वाहि उद्वेगी देखि कह्यौ * अहो
आज कहा है जो तुम कछु भाषतु नांहिं अरु चिं
तित होय बैठि रहे हो * मगर बोल्यौ मित्र आज
तेरी भाभी नें मोसों निठुर बचन कहि कह्यौ कि तू
कृतघ्नी है अरु काहू के उपकार कौं नमानतु है
नजानतु है क्यौं कि ऐसे उपकारी कौं तू एक बेर
हू आपनें घर नांहीं ल्यावतु * पुनि निर्लज्ज
होय वाके घर कहि खायखाय आवतु है अब अ

धिक कहा कहैं जो तू मेरे उपकारी देवर कौं न ल्यावै गो तो मो कौंहू जीवनु नपावै गो * मित्र यातें मैं तो व्हांतें उदास होय इत तेरे लैनकौं आयो औ उत उन तेरे कारन कंचन रत्न तें घर संवार पाटंबर छाय बिछाय नाना भांति के पकवान बिंजन बनाय राखे होंयगे अरु पौरिपर बैठी बापरी उत्कंठित बाट जोवति होयगी * बानरकही अहो मित्र भाभीने यह बात तो तुमतें सांचही कही क्यौं कि ऐसें और हू ठौर कह्यो है* मित्रता के छः लच्छन हैं दैनौं लैनौं निज दुख सुख कहिवो वा कौ सुनिवो * वाके घर जीमनौं आपने गेह जिमावनौं* ये बातें तो प्रीति में अवश्य कचाहियैं पर हम बनबासी तुम जलनिवासी तातें मेरो जैवो तो क्यों नांही बनतु पै तुम कृपाकरि भाभी कों यहां ले आओ तो मैं वाके पायपरि असीस लैउं* मगरकही बंधु हमारोगेह जलमांहि नांहिं जैसें समुद्र के कांठे इत तुम रहतु हो तैसें

उन हम अरु जो तुम नन्हाओगे तो हमारा ग्रह कैसें पवित्र होयगो * याते तुम मेरी पीठ पर चढलेउ मैं तुम्हें सुखसों लैचलौं * बहुरि बानर कही भाई जो ऐसो है तो अब बिलंब जिन करो बेगही चलौ यह कहि वाकी पीठपर चढि बैठ्यौ अरु वहलै नीरमें पैठ्यौ पुनि औंडेमें जाय वेग चलनि लाग्यौ तब बानर बोल्यौ भाई धीरै चलौ पानी की तरंग मोहि ठेलैदेतिहै * यह सुनि मगरनें निज मनमें बिचार्‌यौ किअब तौ यह बंदरा मेरी पीठ तें तिलभर हू नाहीं खिसक सकतु तातें हौं आपनौं मनोरथ कौं नकहौं जो यह अंत समय जानि आपनौं इष्ट देव भजै * ऐसें जीमें ठानि उनि बनचर सों कही मित्र हौं स्त्री के कहे विस्वासघात करि तोहि मारिबे कौं लियें जातुहौं तुम आपनौं इष्टदेव भजौ अरु जगकी माया तजौ * बानर कही भाई मैं भाभी कौ ऐसौ कहा अपराध कियो जो तुम मोहि मारनि कौं सा

य लियौ * मगर बोल्यौ अहो तुम नित अमृत फल खातु हो यातें तिहारो करेजा अमृतसमान होयगो यह जानि उनखैवे कौ मनोरथ कियो है अरु वा के मनोरथ पूरवे कौं मैं हूं सिर पाप लियो है * कह्यौ है अग्नि साखदै जाकौ कर गहिये ताकौ मनभायौ काज करिये यह पुरुष कौ धर्म है * याबातकों सुनि रक्तमुख बानरनें वाकी मूरखता देखि उक्तियुक्ति सौं वाके मनोरथ पर मनोहर बचन सुनाये कि मित्र जो तेरौ ऐसौ ही बिचार हो तो तें मोतें कांहीं क्यौं न कह्यौ जो मैं आपनौं करेजा जंबूतरुमें नराखि आवतो वह तो मोपै भाभी के पाय लागवेकी बडी भेटही * कह्यौ है राजद्वार देवद्वार गुरुद्वार सूनें हाथ जैबो उचित नाहीं पर हौं तो हृदय सून्य होय या अगाध जलमें तेरी गैल चल्यौ आयो अरु सुनि सब प्रानी कौं भय होतु है क्यौं कि भयकौ निवास देह में करेजा है याहीतें जीव सोचकरि चलतु हैं

आगले पायकों ठारकरि पाछलौ पग उठावतु हैं औ हम बनचर धरती पगहू नधरें ताही तें हमारो नाम ब्रह्मा नें शाखामृग धरयौ है सो आपने कुलधर्म सों भयकौ निवास जो करेजा ताहि निकारि रूखके खोलर में धरि निर्भय ह्वै उछरि कूदि दौरि दौरि कूदि कूदि फिरतु हैं अरु अब ही तेरे संग आवत जामनके खोडर में यत्न सों धरि आयौ * बिनहृदय तेरे साथ निर्भय ह्वै उठि धायौ * यद्यपि हमारो हृदय बिधाताने संसारकी रीतितें बनायौ है पर वह हमारे काहूकाम कौ नाहिं अरु तुम सोई चाहतु हौ यातें उत्तम कहा जो तिहारे कामआवै * कह्यौ है (दोहा) धन देके जियराखिये जियदै रखिये लाज * धन दै जीदै लाजदै ऐक प्रीति केकाज * इतनी बात के सुनतेही मगर आनंद सों बोल्यौ अहो प्रीतम जो ऐसी बात है तो आपनौं करेजा मोहिंदै जुवा दुष्ट पत्नी कौ हठ रहै अरु तेरौ जीव बचै मोहिं

मित्रद्रोह का पाप नलागे * इतनौं कहि पाछौ फिरयौ पुनि देदोऊ आप आपनौं इष्ट सुमरनला गे* कह्यौ है अधर्मी कौ मनोरथ इष्टदेव भजेहू निष्फल होय* आगे बानर आपने पुन्य प्रताप सों तीर पै जाय मगर की पीठतें उतरि लांबी लांबी उगैं भरि जंबू वृक्ष पर जाय बैठ्यौ औ मनमें कहनि लाग्यौ कि मैं आज नयौ जन्म पायौ जु या दुष्टके हाथतें बचिआयौ * कह्यौ है कि जाकौ विस्वास जीमें नआवै ताकौ विस्वास कबहू नकीजै पात्र कुपात्र विचारिये जाकौ जैसौ सुभाव होय तासों तैसें ही निबाहिये अरु दुष्टके मीठे बचननि पर नजाइये कौं कि वह आपनी घात ही सों कहै * यह तौ ऐसें बिचार रह्यौ हो तामें मगर बोल्यौ भाई बैठिकाहे रह्यौ वह करेजा मोहि दै मैं तेरी भाभी कौं जाय दैं उ* बानर कही मित्र अथाह जलमें गयेतें श्रम भयौ है ता तें मोपै बोल्यौ नाहीं जातु * मगर कही बंधु पुरुष कौं कह्यौ है

कि श्रम जीत परमार्थ पुरुषार्थ करै यह सुनि बानर रिसायकै बोल्यौ अरे मूरख बिस्वासघाती तोहि श्रो तेरी मति कों धिक्कार है क्यों कि काहू के द्वै करेजा हू होतु हैं अब तू ह्यांतें जा फेर जिन आवनें * कह्यौ है जासों एकबेर जीव बचाइये पुनि वाहि कबहू नपतियाइये अरु जो वाकौ बहुरि बिस्वास करै तौ निदान अनेक दुख भरि निसं देह मरै * ये बातें बानरतें सुनि मगर चिंता करि कहनि लाग्यौ कि मैं अभागे यह कहा कियौ जु काज बिनभये आपनौं कपट याके आगे कहदियौ अब काहू भांति यातें बिस्वास उपजाय पुनि याहिं दावमें ल्याऊं तौ भलौ * ऐसें मनमें ठानि हंसकै बोल्यौ कि हे मित्र तेरी भाभी कों तौ याबातनतें कछू प्रयोजन नहो परहौं हंसीकी रीति ते री प्रीतिकी परीक्षा लेतुहो तुम मनमें कछु जिन ल्याश्रो श्रो मेरी गैल आश्रो * कपि कही अरे दुष्ट जलचर तू ह्यांतें जा हौं आवन कौ नाहिं

इसें गंगदत्त हूनें कह्यौहो कि प्रियदरसन नें कहौ कि फेर गंगदत्त कुआ में आवन कौ नाहिं * मगर कही यह कैसीकथा है पुनि मरकट कहनि लाग्यौ

काहू ऐक कुआ में गंगदत्त नाम मेंडुक मेंडुकन कौ राजा रहै वाकौ कुटुंबतें बैरभयौ तब वह अरहटकी मालपै बेठि कूपतें बाहर आय बिचारन लाग्यौ कि अब कौंन उपायतें बैरियन मारि निष्कंटक राज करौं * यह बिचार करतु हो कि वानें ऐक कारोनाग बिलमें पैठतु देखौ अरु याहि वह प्यारो लाग्यौ तब बोल्यौ कि यासों प्रीति करि शत्रुन कौ नाश करौं * कह्यौ है कि रिपु मारिवे कौं अतिबलवंत शत्रु सों स्नेह करिये औ ससा के मारिवे कौं बाघ को बल धरिये थोरौ पराक्रम कबहू नकरिये ना तौ अवश्य हारिये * ऐसें जीमें ठानि सर्पके बिलद्वार पै जाय पुकार्यौ अहो प्रियदरसन मेरौ तुमकौं प्रनाम है बाहर आऔ

यह सुनि वासांपने निज मनमें बिचाखौ कि जो मोहि बुलावतु है सो मेरो सजाती तो नाहिं क्यों कि सर्पको शब्द नाहीं औ नकाहू सों मित्राई यातें प्रथम याहि भीतर बैठेही जानिलीज तब बाहर पाय दीजि * कह्यौ है जाको शीलसुभाव नजानि ये तासों बेगही नमिल बठिये यह बृहस्पतिको बच न है अरु जो मैं तुरतही बिन समझे बिलतें बा हर निकरों तो नजानिये कि कोऊ बैरी मंत्रबा दी पकरै तातें याहि जान्यों चाहिये* यों बिचार कांहों तें बोल्यो अरे तू को है जो मोहि टेरतु है * इनकही हों गंगदत्त नाम मेंडुक मेंडुकन को राजा हों तोसों मेरी सहायता होगी यातें मि त्राई करन आयो हों * सर्प कही अहो यह अन मिल संग है तृनअग्नि कैसी मित्राई पर अब तू मेरे घरआयो यातें मैं कहाकहों * कह्यौ है जासें आपनी मृत्यु जानिये ताकेनेरे सपनें हू नजाइये पै तें ऐसी कहा बिचारी * गंगदत्तकही

अहो यह तौ सांच है अरु हम तुम जन्महीके वैरी हैं पर हौं शत्रुकौ दबायो निरादर व्है तुमपास आयो * कह्यो है पगमें कांटो चुभै तौ सुआसों काढिये अरु शत्रु सों जब आपनों बिनास जानिये तब सबल शत्रुकौ आसरौ गहि प्रानधन राखिये * पुनि नाग बोल्यौ तो सों शत्रुता कौंनसों है इनकही कहूं बसों * उन पूछ्यौ तेरो निवास कूप तडाग वापी कहां है * इन कह्यौ पाथरन तें बंधे कुआमें रहतु हौं * सांप बोल्यौ तौ तौ नबनी क्यों कि तहां मोसों न गयौ जायगो * कह्यौ है अतिमीठो भोजन होय तौ हू पेटभर खाइये अधिक लोभ न करिये लोभकरे बिमार होय दुख पावे * पुनि गंगदत्त कही अहो ऐसौ कह्यौ है कि भेदी मिले कठिन ठौरहू सुगम व्है जातु है * जैसें घरके भेदी लंका खोई अब मैं तुमतें क्यों कौ सारौ भेद कहतु हौं तुम चितदे सुनों वा कुआके ऊपर रहट चलतु है ताकी मालतें लागि नीचे

जाय ऐक खवालमें बैठि तुम हमारे शत्रुनि नि
चिंताई सों खाओ अरु चैंनसों बैठि मंगलगाओ
हों तुमसे आचार्य कों आपनी गाढमें कछु सम
झही लिये जातु हों तासों तुम काहू भांतिकी चिंता
जिन करो बेग चलकि मेरी राज धानीकी रक्षा
करो* इतनी सुनि सर्प नें बिचार्‌यो कि यह कोऊ
मेरे भाग तें मोहि आपनें कुलको अंगार आय मि
ल्यौ है अरु मोहि तौ याठौर अहारहू नाहीं जुरतु
यातें वठौर याकी संगजाऊं तौ बिनश्रम बैठ्यौ अहार
पाऊं* कह्यो है कि जब देहको बल घटै अरु को
ऊ सहायक नहोय तब पंडित होयसो आपनी जीव
काकी वृत्ति बिचारै* ऐसें सर्पनें निजमनमें
ठानि गंगदत्तसों कही आजतें तू मेरो मित्र भयो
अब ह्यां लेचल जाहि कहैगो ताहि खाऊंगो* या
रीति सों यातें बचन कहि नाग बिलतें बाहर आ
यो पुनि दोऊ बतराय कूपपै आय रहटकी मा
लमें लागि वा मांहि धसे औ खवाल बीचबसे*

आगें गंगदत्तनें आपनें शत्रु चीन्ह चीन्ह बताये उन बीनबीन खाये जब विनमें तें कोऊ नरह्यौ तब सर्पनें गंगदत्त सों कह्यौ कि मित्र मैं नें तेरो कैसो काम कर दियौ जु शत्रुनि मारि निष्कंटक राज कियौ * गंगदत्त बोल्यौ भाई जैसें भले मित्र काज करतु हैं तैसें तुम कीनौं अरु मोहि सुख दीनौं पर अब याही अरहटकी माल लागि आपनें धामपधारौ * नागकही हितू यह कहाकहतु है तें मेरौ घरछुडायौ मोकों यहां लैआयौ यां ओरही मेरौ सजाती आनि रह्यौ होइगो सो मोहि बिलमें काहे बडन देयगो व्हांसों तें मोहि आन्यो अपनोंकरि ठान्यौ अब मेरे अहारकी चिंता कर नातौ हम सों तुमसों नबनि है * कह्यौ है अहारे व्योहारे लज्जा नकारे * यह बात सुनि गंगदत्त कों ऊतर नआयौ तबनिज मनमें पछतायौ कि मैं मूरख यह कहा कियौ जु आपनौं घरदिया ले दिखाय दियौ अब यह सो विरोधके वचन क

कहनु है * कह्यो है कि सरवस जातो जानिये तो
आधो दीजे बांट * तातें याके खिवेकों आपनी बगर
के में दुकान तें ऐकऐक नित दीजै ऐसें मनमें
ठहराय बोल्यो भाई तुम आपनें अहार कों मेरी
बाखलतें ऐकदादुर नितलेहु अरु जैसें आपनें
घर रहियतु हे तैसें रहो * वह वाहीभाति रहनि
लाग्यो ऐकदिन गंगदत्त को पुत्र सुभदत्त नाम
वाकें अहारमें आयो तब गंगदत्त रोवत रोवत
आपनी स्त्री के सन्मुख धायो उन कह्यो रेकुटुंब
के मारनहारे अब क्यों रोवतु हे तोहिंतो कुटुंब
को पाप लाग्यो पर अब निज प्रान राखिवेको यत्न
कर यह बातसुन गंगदत्त नें आपने कियेको बहु
त परेखो कियो आगें जब केवल गंगदत्तही रह्यो
तब प्रियदरसन नें बिचार्यो कि यासों मोसों बो
ल बचन हे तातें यातें भोजन मागों जब यह क
हैगो अबतो हों हीरह्यो तब याहि छलकरि खाऊं
गो * सर्पनें ऐसें मनमें ठानि गंगदत्तसों कही

रे प्रीतम अबतौवहां मेंडुक नाहिं अरु मोहि भूख लागी है * गंगदत्त बोल्यौ हे प्रीतम अबतौ हम तुम है भाई ही रहे पर आज्ञा करौ तौ दूजौ ब्याह करौं औ प्रजा बसाय कुटुंब तें घर भरौं तुम मेरी राजधानी की चिंता करौ औ मैं तिहरेअ हारकी * कहौ तौ अबही जाय तालके मेंडुकनि भुलाय ल्याऊं अरु फेर ज्यों कौ त्यौं नगर बसाऊं * सर्प कही बंधु यह तौ तुम नीकी बिचारी यातें तौ तिहारी राजधानी रहै अरु मेरी जीव का हू चलै सुनि अबलौं तू मेरौ भाई हो पर आजसौं तू मेरे पिताकी समान है * इतनौं सुनि गंगदत्त रहट की माल लागि कुआके बाहर आय निज मनमें कहनि लाग्यौ कि मैं आज कालके गालतें निकरि आयौ सु मानौं नयौ जन्म पायौ * ऐसें कहि ऐक सरवरमें जायरह्यौ अरु व्हां नागनें कितेक बेर लौं याकी बाट जोई निदान घबरायकै बोल्यौ कि मैं अभागे यह कहा कियौ जु वाहि

जीवत जानिदियो सब दादुर कुआक खाये पर ज बलग गंगदत्त मेरी डाढ तरै नआयौ तबलौं हौं नेंक हू नअघायो * ऐसें कहि कूप माहिं ऐकगोह रहत ही इन तासों कह्यौ हे प्यारी तू मेरीसंतुष्टता कौ काजकरै तौ हौं तोसों ऐक बात कहौं * वह बोली कह * याने कह्यौ कि गंगदत्त तालमें मेंडुक लैनगयौ है ताहि जाय कह कि दादुर लै बेग चलअरु वे नचलें तौ तूहीचल तेरेदेखेहीवाकी भूखजैहै * कह्यौ हे भूख प्यास सहीजाय पर मित्र कौ वियोग नसह्योजाय * पुनि कहियौ कि उनमो सों कह्यौ है जु मोहि भूखौ जान मन में कछु भय नकरै जो मैं वासों द्रोहकरौं तौ मेरे सब किये कर्म धोबीकी नांदमें परैं * इतनौंकहिसांप नें गोहकौं विदा कियौ वहकूपतें निकरि गंगदत्त के पास जाय नागकौ संदेसौ सुनाय बोली कि उन कह्यौ है अब दोऊ मित्र बैठि धर्मचरचा करि हैं खवेकौ सोच जिनकरौ * पूरन वारौ कन

कीरी औ मनकुंजरकौं देतु है * गोह तें सब बात सुनि गंगदत्त बोल्यौ हे प्रिये कह्यौ है भूख्यो कौंन पाप नकरै नीच जीव निर्दई होतु हैं तातें तू प्रियदरसंनतें जाय कइ कि अब गंगदत्त कुआ में आवनकौ नांहिं * ऐसें कहि उन गोह कौं बिदाकियो* इतनी कथा कहि बानरनें मगरसों कह्यौ अरे दुष्ट जलचर तू यहांतें जा हौं गंगदत्त की भांति फेर तेरे घर जानकौ नांहीं * पुनि मगर कही मित्र तुम्हें ऐसौ करनौं जोगनांहिं सुनौं जो तुम मेरौ कृतघ्न दोष दूर नकरि हौ तौ मैं तिहारे बार उपवास करि मरि हौं * बानर बोल्यौ रे मूढ तू के तौ ऊ करि पर मैं लंबकरन गदहाकी भांति फेर नजाऊंगौ* मगर कही यह कैसी कथा है * तहां बानर कहतु है

काहू बनमें एक कराल केसनाम सिंह अरु ताकौ सेवक धूसर नाम स्यार रहै सु काहू समें वह सिंह गजसों लड्यौ वाके शरीरमें चोट लागी सै

सो कि वातें ऐक उगहू नचल्यौ जाय यासों वाहि अहार नजुरयो तब जंबुक बोल्यौ कि स्वामी मेरे तो मारे भूखके प्रान जातु है अरु तिहारी सो यह गति है जु उगभरहू नांही चल्यौ जात मैं सेवकिसें करों * सिंह कही अरे तू कहूं कोऊ जीव जायदेख जो मेरी यह दसा है तोहू ताहि मारिहों यह सुनि स्यार ह्वांतें चलि गांवके निकट आय देखे तो ऐक तालके तीर लंबकरन नाम गदहा चरतु है वाहिदेखि यानें कह्यो मामा तोहि मेरो प्रनाम है आज अनेक दिन पाछै मैं तिहारो दरसन पायो अरु सबदुख पाप गंवायो * यों कहि वह धूर्त्त पुनि बोल्यौ मामा अब कै तोहि अति दुर्बल देखतु हों सुकहा है * उनकही अहो भगनीसुत कहा करों यह धुबिया बड़ो निर्दई है मोपै बहुतभार लादतु है अरु ऐक मूंठीहू अनाज नांही देतु हों धूर मिश्रित रूखे सूखे तृन खाय रहतु हों तुमही बिचारो तातें देह कैसें पु

ष्ट होय * स्यारकही मामा जो तू ऐसी बिपतमें है तो मेरे साथ चल मैं तोहि आछी ठोर लैजाऊं तहां नदी के तीर मरकत मनिके बरन हरी हरी दूबचरो औ आनंदतें बिचरो अरु हम तुम तहां बैठि आछीआछी बातें करें औ रहें * लंबकरन बोल्यो अहो भगनीसुत यह तो तें भली बात कही पर तुम बनबासी म ह नगर निवासी तिहारी जीवका मासतें हमारी तृन नाजतें यातें हमारो तिहारो मेल कैसें बनें अरु वह भली ठाम हमारे कौंन काजकी * स्यारकही मामा ऐसें जिन कहो वा ठोर तुम मेरी भुजानिके बलतें रहो कांकाहू भांतिको दुख भय नांही और हू गदही अनेक आपनी आजीवका के लये रहति हैं सोपाहीं औ ते आईहीं तब अति दुर्बल व्है रही हीं तातें महा कुरूप दीसतिहीं मेरे आश्रम में आय इननि सुखपायो अहार मुकतो खायो तासों वे पुष्ट होय चंपा बरनी व्है रही हैं अरु वेका

मकी सताई मोसों निसंक आपनें मनोरथ आय आय कहति हैं औ तामें आज प्रातही ऐक मामीनें मोतें आय कही कि तेरी मामासपने में मेरी पतिभयो है ताहि ल्याय मोसों मिलायदे यातें तुम बेगचलो नातो वाहि कोऊ और लै जायगो * यहबात सुनि कामातुर होय लंबकरन बोल्यो अहो भानेज जो ऐसी बात है तो आग होय तो हू में चलोंगो*कह्यो है स्त्री में द्वैगुन ऐक अमृत औ दूजो बिष संयोग अमृत औ बियोग बिष पुनि जाको नामलिये मनुष प्रसन्न होय ताको मिलनसुख तो अधिकही होयगो * आगै वह स्यार गदहाकों फुसलाय लैगयो औ सिंह गदहा कों देखतही धायो तब यह भय मानकै परायो औ वाके हाथ तें नआयो पर नाहर के हाथकी चोट याके शरीर में लागी* सिंह अछताय पछताय बैठरह्यो तब जंबुक बोल्यो कि तुम यह कहा कियो जु गदहा छांडिदियो बस देखेतेरो

पराक्रम जो याही कों नमार सक्यो तो हथीके से मारि गो * नाहरकही अरे ऐक तो मेरीदेह निर्ब ल दूजे वाको आवनें में नजान्यों यातें वह निक रि गयो नातो हाथी खेदमारों * पुनि स्यार बो ल्यो भलो जो भयो सोभयो वाहि जानि देउ अब हों वाहि फेरल्यावनु हों तुम सावधन होय बैठो * सिंह कही अरे जो मोहि देखिगयो है सो फेर कैसें आवेगो * स्यार बोल्यो तुम आपनें पराक्र म कीबात कहो वाहि ल्यावनकी हों जानों * यह बात सुनि सिंह सचेतव्है ऐं ठिबैठ्यो औ स्यार तहां तें चलि नग्रमें पैठ्यो गदहाके ढिग जाय हं सिके बोल्यो अरे मामा तू वहां तें क्यों बगदिआ यो * उनिकही अहो भगनीसुत तू मोहि भली ठौर लेगयो । जु मैं नीठनीठ मीचके हाथतें बचि आयो वह कौन जंतु हो जाके हाथकी चोट मेरे शरी रमें बज्रसमलागी * स्यारनें मुसकुराय के कह्यो मामा वह तो मामीही तोकों आवतु देखि अनुराग

तें आतुर होय आलिंगन करिवे कों उठीही पर तू नपुंसक जो भाज्यौ सु वह सकुच करि वहां ही बैठ गई * कह्यौ है जब स्त्री क्रीडा समय ढीठ होय ढिठाई करै अरु वाके भर्त्तार सों कछु काज न सरै तब वह आपनी ढिठाइतें आप लज्जित होय* अब वानें मो सों कह्यौ है कि जाके शरीरमें मेरो हाथ लाग्यौ मैं ताही कौं बरिहों नातो लंघन करिकरि मरिहों* तूही ताके मनमें बस्यौ है तेरे ही बिरह सों वह बापरी दुखपावति है यातें हों कहतु हों कि तू बेग चलि वाको मनोरथ पूरो कर नजानिये जो बिरह बिथातें वाको जीव निकरिजाय तो तोहि स्त्रीहत्या की पापलागै* कह्यौ है बालक स्त्री गो ब्राह्मन की हत्या तें महा नर्क भोगनों होतु है श्री भगवानें संसारमें नारी बडी वस्तु बनाई है ताहीतें सब कों प्रिय है (दोहा) नारीनारी सबक हैं नारी नरकी खान* अंतकालमें देखिये नारीहीमें प्रान * अरु जे खर्गकी इच्छाकरि

नारी कौं तजतुहैं तिनकौं कामदेव पीड़ा देतु
है * देखो कोऊ नग्नहोय छार में लोटतु है *
कोऊ आपने हाथ आपनौं सिर खसोटतु है *
कोउ जटाराखि पंचाग्नि मांहिं बैठि जरतु है *
कोऊ कपाली आसन मारि औ ऊर्द्ध बाहू होय
दुख भरतुहै * पुनि कह्यौ है नारी सब सुख की
जर है इतनौं कहि बहुरि स्यार बोल्यौ कि मा
मा हौं तिहारो हितूहोय कहतु हौं क्यौं कि तिहारे
सुखतें हमें सुख है औ दुखतें दुख * आगे ग
दहा स्यारको उपदेस सुनि कामांधहोय हरषि
पुनि वाके साथचल्यौ * कह्यौ है कि जब मनुष क
र्म के बस होयतब खोटी बात जानकेहू नमानें
बिन किये नरहै * पुनि ज्यौं खर वहां गयो त्यौं
ही सिंहने मारलियो * आगे सिंह स्यार कौं गद
हा के ढिगराखि आप नदी न्हैवे गयो * जौलौं
वह स्नान ध्यान पूजा तर्पन करि आवै तौलौ स्या
र चंडारने छुधाके मारे गदहाके कान नैंन औ

हियो लै भक्षन कियो सिंह आनि देखे तो वाको हृदय औ नेत्र कर्न नाहिं * तब उनि स्यार सों कह्यो अरे यह ते कहा कियो जो आंख कान औ हियो याको काढि खाय लियो तेरो जूठों मैं कैसें खाऊं * स्यार कही स्वामी ऐसो जिन कहो याजीव के कान आंख हियो होत नाहीं क्यों कि कान होते तो तिहारो नाम इन यावनमें सुन्यो होतो अरु नेत्र होते तो तुम्हें देखि फेर नआवतो औ हियो होतो तो तिहारे कर की चोट खाय फेर न भूलजातो यह बात स्यारतें सुनि सिंह नें गदहा बांटिखायो * इतनी कहि बानर बोल्यो अरे जलचर हों लंबकर न नाहिं जु तेरे साथ अब आऊं क्यों कि तें प्रथम ही मोसों कपट कियो बहुरि युधिष्ठिर कुम्हारकी भांति सब भेद कहिदियो * मगर कही यह कैसी कथा है * तहां बानर कहतु है

ऐक समें काहू देस में अतिबर्षा भई ताते का ल पर्‍यो तब वहां के रजपूत किनेक कहूं चाकरी

कौं चले तिनके साथ युधिष्ठिर नाम ऐक कुंभार हू
के लियो वाके माथेमें घावहो * किनेक दिनमें
काहू और देस मांहिं जाय ऐक राजाके यहां चाक
रभये कुंभारके लिलार कौ घाव देखि राजानें
आपनें जीमें बिचार्यो कि यह कोऊ बडो सूरहै
जु यानें सनमुख चोट खाई है * यातें राजा वा
हि वाके सबसाथियनतें अधिक मानें * ऐकदिन
वह नरपति आपनें सब सुभटन सहित सभामें
बैठ्यो हो कि वानें यासों पूछ्यो अहो रावत यह
घाव तुम मस्तक पर कौनसी लराईमें खायो * इ
नकही महाराज मेरो नाम युधिष्ठिर है यातें हों
झूठनाहीं बोलतु मैं रजपूत नाहीं जातको कुंभा
र हैं अरु यह घाव मैं नें रनमें नाहीं खायो या
को भेद कहतु हों सुनों * कि मेरे पिताके ब्याहको
उछाह हो तहां मैं हू आपनी मंडलीमें भांगपी घ
र में दौर्यो स उखटपर्यो ऐक ठीकरा मूडमें
पैठ्यो ताको यह चिन्ह है * इतनी बात सुनतही

राजा रिसकरि बोल्यो इन मोहि धोखो दियोअरु याकेलिये मैंने इन राजपूतनको अपमान कियो अब याहि धकाय काढों * कुंभारकही महाराज ऐसें जिन कीजै वरन युद्ध में मेरी परिक्षा लीजै * राजा बोल्यो अरे सर्वगुन संयुक्त कुलमें तू जनम्यो नाहिं ऐसें स्यार सिसुकों सिंहनीनें हू कह्यो हो * कुंभारकही यह कैसी कथा है * तब राजा कहनि लाग्यो

काहू वन में एक सिंह औ सिंहनी रहैं सु सिंहनी नें द्वै सिसु जाये तद वाको पति वाके लिये अनेक अनेक भांतिके जीव औ जंतु मारि ल्यावै एक दिन वह सारो दिवस फिर्यो पै वाके हाथ कोऊ जंतु नआयो जब सूरज अस्तभयो तबनिरास हो घर कों आवन लाग्यो तहां गैलमें एक स्यार को सुत तुरत को जायो इनपायो ताहि जतन सों मुहमें राखि सिंहनी के ढिग जीवतु ल्यायो * वाहि देखि बाघनि बोली हेनाथ कहा आज और

जंतु नपायो.* सिंह कही भद्रे सिगरा दिन भट
क्यौ पर कछु हाथ नआयौ अबही उगरमें आ
वतु यह हाथ पर्यौ सुयाहि बालक जानि मैं
नाहिं मार्यौ तेरे पथ्यके लिये ल्यायौ हौं * सिंह
नीबोली स्वामी यातें मेरो पेट हू न भरैगो वृथा
याहि क्यों मारों * कह्यौ है बाला बाल ब्राह्मनये
तीनौं अबध्य हैं बिशेष आपनें घर आवै ताहि
तौ कबहू नमारियै * बाघ बोल्यौ जो तें ऐसीवि
चारी तौ यह कैसें जियैगो * उन कही याहिमैं
आपनौं दूधप्याय जिवाऊंगी जैसें मेरेये द्वै हैं
तैसें तीसरो यहहू रहै * ऐसें कहि वह वाहि दूध
प्यावन लागी आगे जद वे बडेभये तौ वे बिनजा
नें इकठे रहैं अरु स्यार सिसु तिनमें बडो भाई
कहावै * एकदिन वा बनमें हाथीआयो तब सिंह
सिसु बोल्यौ अहो यह गज आपनें कुलकौ बैरीहै
चलौ याहि खेदमारें * यह सुनि स्यार सिसु इ
ननौं कहि भजौ कि भाई याके सनमुख कहांजात

है। वाके साथ सिंह सिसु हू भजे अरु वे तीनौं घर आये * कह्यौ है कि युद्धसमय आगे सूर होय तौ वाहि देखि औरनकौं हू सूरता होय अरु ऐक कायर संग्राम छोड़ भजै तौ वाके संग सब भजै * आगे सिंह सिसु नि आय माता सों कही कि मा यह हाथी देखि पराये। अरु याके पाछै हम हू * अपनी निंदा सुनि स्यारकौ सिसु उनके मारिवेकौं उठ्यौ तब सिंहनि बोली ये तोतें छोटे हैं तू इनतें बड़ो है यातें तोहि इनपै क्रोध करनौं उचित नाहिं * उन कही ये मेरी निंदा करतु हैं सो कहा हौं इनतें कुल बरन पराक्रम में घाट हौं कै हाथी नाहीं मार जानतु * यह सुनि सिंहनी नें वापै दयाकरि वाहि ऐकांत लै जाय कह्यौ * कि पूत तू सुंदर औ बलवान है पर वा कुलमें जनम्यौ नाहिं जु हाथी मारि अरे तू तो स्यार है मैं तोहि दयाकरि आपनौं दूध प्याय जिवायौ है सु ये तोहि जानतु नाहिं अरु अब इनतें तोतें विरुद्ध भयौ ये तोहि बिन मारे

नरहैंगे याते हों कहतिहों कितू अब आपनें स
जातिधनमें जायरह नतो जीवतु नबचैगो * इत
नों मुनि वह कांतें उठि घूंछदबाय धाय आपनें
सजातीनमें जाय मिल्यो * यह प्रसंग कहि राजा
ने कुंभार सों कह्यो कि सुनि तू वाकुलमें उपजो ना
हिं कि लोहकी आंच झेलै पुनि सभातें उठाय दि
यो * तातें हों कहतु हों रे मूर्ख जलचर तें हूं यु
धिष्ठिरकी भांति कपट कहि दियो सु यह कहा
कियो * नीति तो यों है कि जहां सांच बोलेतें का
जबिगरै औ झूठ तें सुधरै तहां सांच सों झूठ ही
भलो * कह्यो है जु मिथ्या कहे काहू को जीव बचै
औ आपनों महात्म रहै तो राखिये * द्वै ठौर
झूठ बोलवे को दोष नाहिं अरु बिन बोले काज सरै
तो कबहू न बोलिये औ हरकाम में चपलता करि बि
न स्वारथ न बोल उठिये देखो बगुला मनि धर्म
साधे निज काज करै औ चपल होय सुआ बोलि
बंधमें परै * इतनों कहि पुनि बानर बोल्यो अरे

मूढ नें स्त्री के संतोषके लये ऐसो अधर्म विचार्‍यौ कि मोहि मारन कौं उपस्थित भयौ * कह्यौ है नारीकौ मनभायौ सहजमें होय तो करिये अरु वाके कहे मूर्ख होय निजधर्म न बिसरिये क्यों कि स्त्रीजन आपस्वार्थी होति हैं तिनकी प्रतीत कबहू नकीजै कीजै तौ जैसें एक ब्राह्मन प्रतीत करि पछतायो तैसें पछतावनौं होय * मगर पूछी यह कैसी कथा है तहां बानर कहनि लाग्यौ

काहू गांवमें एक ब्राह्मन रहै ताकीनारी अति सुंदरि चंदमुखी चंपकबरनी मृगनैंनी पिकबैनी गजगैानी कटकेहरी अरु जाके करपद कोमल कंमलसे नारंगी सम कुच बार स्याम घटाकी समान दांत हीरा कीसी पांति ओठ बिंबाफल जान भौंह धनुषमान पुनि कीरकीसी नाक कपोतकौसो कंठ औ करतारनें वाहि ऐसी संवारी कि मानौं सांचेकीसी ढारी* वाके रूपकी ईर्षा सब कुटुंबकी

नारी खायौ करैं जब यह चरित्र वाके पतिनें दे
खौ तब वह घरकी माया छोडि वाके आधीन हो
य वाहि साथलै परदेस कौं चल्यौ कितेकदूर जा
य वाकी स्त्रीनें कह्यौ हे स्वामी मोहि प्यास लागी
है* उन कही प्रिये तू यहां बैठ हौं जलखोज ला
ऊं* यह कहि वह तौ पानी सोधन गयौ औ यहां
प्यासके मारे याकी प्रान निकरि रह्यौ वह आय
याहि मरी देखि अति विलाप करनि लाग्यौ तब
आकाशवानी भई कि अरे याकी तौ आयु पूरी
भई पर जौ तेरौ यासों अधिक सनेह है तौ तू
आपनी आर्बल याहि दे* ऐसे सुनि बिप्रनें हाथ
पाय धोय आचमन करि पवित्र होय आधी बैस
वाहि दई वह झट उठिबैठी भई जलपीय दोऊ आ
गेचले औ काहू गांवके निकट जाय एक मालीकी
बारीमाहिं उतरे*जब ब्राह्मन गांवमें सीधौ लैनग
यौ तब ब्राह्मनी बारीमें फिरनलागी तहां देखैतौ
एक पंगु कुआपै बैठ्यौ गायगाय रहटकौ बरध

हांकि रह्यो है वाकौ गानसुनि ब्राह्मनी रीझि ता के निकट जाय कहनिलागी * अरे मेरे मन नोसों अटक्यौ तू मेरौ मनोरथ पूरौकर * उनकही अरी घरगई हौं पंगु तू मोहि कहा करैगी इन कही दईमारे निगोडे तोहि याबातसों कहा काम जो मैं कहौं सो तू कर अरु जो तू मेरो कह्यौ नकरैगो तो मैं तोहि हत्या दूंगी यह सुनि वाने वाकौ मनोरथ पूरौ कियौ तब ब्राह्मनी प्रसन्न होय बोली आजतें यह जीव तेरौदियौ है * आगै सीधौलै विप्रआयौ अरु रसोईकरि जब स्त्री पुरुष भोजनकों बैठे तब ब्राह्मनी नें पंगुकों हू जिमायौ पुनि जद कांतें चलवे कौं भये तद ब्राह्मनी नें आपने पतिसों कह्यौ किहेस्वामी जोवेर तू मोहिं छांडि सीधौलेन नगरमें जातुहै वासमें हौंअकेली रहति हौं यातें यह लूलौ माली कौ टहलुआ है औ आछौ गावतु है याहि संगलीज तौ मेरे निकट रह्यौ करैगो * उनकही प्रिये एक तौ

गैलमें आपनी देह निवाहनी कठिन दूजै यापगुकौं कैसें लैचलैंगे * इनकही स्वामी ऐक पिटारौ आनिदेउ तामें राखि याहि हौं निज मूउपर आछी भांति लैचलि हौं तुम याबातकी चिंता जिन करौ।* यह सुनि उन पिटारौ आनि दियौ इ न वाहि वामें राखि सिर धर लियौ। आगै ऐकवन में जाय ब्राह्मनीनें निजमन मांहिं विचाखौ कि यह ब्राह्मन जबलौं रहै गौ तबलौं हौं यापंगु सौं निर्भय होय भोग नकर सकौंगी * ऐसें बिचारि समें पाय विप्रकौं कूपमें डारि पंगुकौ पिटारौ सिर लै ज्यौं ऐक नगरमें बडी त्यौं राजाके सेवक याहि पकरि नगर पति पै लैगये उन पिटारौ खु लवाय पंगुकौं देखि कह्यौ यह को है * इन कह्यौ महाराज यह मेरौ पति है याके शत्रुनके भयतें आपनें मूंउपै लियें डोलति हौं अब तिहारी स रन आनि लई है जैसी जानौं तैसौ करौ * राजा कही तू मेरे नगरमें रहि हौं तेरी आजीवका करै

देतु हों तेरो शत्रु आवे तो मोसों कहियो * इतनों कहि राजानें वाकी गांवगांवमें चुंगी करदई वह वाहि ले कों सुखसों रहनलागी आगे दईके जो को ऊ बनजारो वा बनमें आय निकस्यो तानें वा ब्राह्मन कों कुआ सों काढ्यो * कह्यो हे जु आयु न पूरी होय तो बाघ बेरी अग्नि जल केहू मुखतें बचे पुनि वह ब्राह्मन वाही नगर में आयो जहां ब्राह्मनी ही * जब ब्राह्मनी नें आपनों पति देख्यो तब उन राजासों जाय कह्यो महाराज मेरे स्वामीको रिपु आयो यह सुनि राजानें वाहि पकरि मंगायो अरु कह्यो रे विप्र तूं याहि क्यों दुखदेत है औ कहा मांगतु है * ऐसी बात राजा के मुख तें सुनि ब्राह्मननें निजमनमें बिचार्यो कि जो इनही मेरी ममता त्यागी तो मो कों हू याकी प्रीति तजनी उचित है क्यों कि मन टूट्यो फेर न मिले ज्यों फटिक को पात्र * ऐसें बिचारि ब्राह्मननें राजासों कही कि पृथ्वीनाथ हों या तें न कछू मागों न कहों पर मेरी

यापै आधी आयु है सो दिवाय देउ* राजा ब्राह्मनकी बात झूठ समझ चुपकैरह्यौ अरु ब्राह्मनी आगलौ भेद न जान बोलउठी कि धर्मावतार जाभांतियह कहै ताहीतिसों याकी आर्बल देउ * बहुरि विप्र बोल्यौ हाथ पाय धोय आचमनकर पवित्र होय ऐसें कह कि मैं तेरी आयुलई हीं सो पाछीदई उनवैसें ही कह्यौ औ कहतही वाकौ प्रान घटतें निकरि गयौ राजा सभा सहित देखि भैचकरह्यौ पनि वाका भेद पूछ्यौ तब ब्राह्मन नें सबभेद कह्यौ* या बात के सुनतही राजा नें ब्राह्मन कौं बिदाकियौ अरु आप नियम लियौ कि नारीकी बात कबहू सांची न मानियै * तातें हां कहतु हौं अरे मूर्ख जलचर स्त्रीकी बात कौ विस्वास कबहू नकरियै* कह्यौ है जो नारीकै बसपरै सो कहा नकरै जैसें राजा भोज औ पांडे बररुच कियौ * मगर पूछी यह कैसी कथा है तहां बानर कहतु है

एक समय रात्रकौं राजाभोजकी रानी राजा सों

रिसानी तबउन अनेक उपाय मनावे कौं कियेपर वाने याकीबात क्योंहू नमानी औ कह्यौ जौ तुम घोरा बनि मोहि चढाय आंगनमें लैफिरौ अरु हौं ऐडकरि चाबक चटकाऊं तौ तिहारौ गायौ गाऊं * उन सुनि वैसे ही करि आपनौं मनोरथ साध्यौ * औ वाही रात्र पांडेकी पंडियानहू रूठी तब पांडेनें कही तू काहू भांतिहू हटछोडै * उ नकही तू मेरौ अपराधी है यातें तोहिभद्रकरौं तौ मेरौ क्रोध मिटै * कह्यौ है जो अति चतुरहोय सो रसरीति समझै प्रीतिके बसपरै आगे पांडेने दाढीमूंछ औ मूंड मुडवायौ औ वाकौ गायौ गायौ * भोरभये तब राजा सभामें आय बैठ्यौ तब पांडेनें जाय असीस दई उन याहि देखि हंस के कही अहो विप्र बिन पर्व भद्रकहां भये* इन बिद्याके लब रातकी बात बिचारि कह्यौ महाराज जहां मनुष घोराकी भांति हींसै तहांबिन पर्वहू मुंडनहोय * यह सुनि राजा मौन गहि

रह्यौ* तातें हौं कहतु हौं अरेदुष्ट जलचर जैसें राजा औ पांडेनें कियौ तैसें तू हू कामांध होय स्त्रीके बसभयौ * वेदोऊ ऐसें बतराय रहेहे कि वाही समय ऐक जलचरनें आय मगरसौंकही भाई तेरी स्त्री मारे क्रोधके मरवेकौं व्है रही है अरु घरमें तेरे ऐक और मगर आयरह्यौ है यह सुनि मगर दुखपाय बोल्यौ हाय मैं अभागे यह कहाकियौ जु ऐसी दुष्ट पतनी के कहे आपनौंधर्म कर्म खोयदियौ * पुनि उनबानर सों कह्यौ कि मित्र तू मेरौ अपराध छिमाकर कैंयों कि मैं अब यादुखनें प्रान छांडि हौं * बानर बोल्यौ अरेमूर्ख तेरेघरमें बिगार हौं नौं तो युक्तही हो पर तोहि ऐसी दुष्ट स्त्री के गये उछाय करनौं जोग है कैंयों कि कह्यौ है * कलहकारनी नारी औ बिष बिपत की जरहै यातें जो आपनी आत्मा कौ सुखचाहै सो वासों बिरक्त रहै तोही भलौ वाकि मनमानें सो कहै औ करै नारीनके चरित्र भांतिभांतिकेहैं

ते कहांलौं कहौं परन्तु ऐतनीही बातमें जानियौं कि जे चतुर औ सज्ञान हैं ते तिनके आधीन कबहू नहींयगे* मगर कही अहो मोतें है चूकभई ता ही तें इत मित्राई गई औ उत स्त्री* जैसें ऐक नारिकौ जारभयौ तभचोर * बानर कही यह कैसी कथा है तहां मगर कहतु है
कि ऐक किसानकी स्त्री तरुनि औ वह बूढो फूस ताते वाकौ मनोरथ पूजिनसके यह नित प्रति परपुरुष हेखौकरै औ कामके मारे याकौ मन धाममें नलागै उदास रहै * ऐक दिन कोऊ पराये वित चितकौ चोर याहिं आनि मिल्यौ वासों इनकही हेसुभलक्षन मेरौ पति बूढोकै रह्यौ है जौ तू मेरौ जारहोय तौ मैं घरकौ द्रव्यलै तेरे संगचलौं * उनकही तें नीकी बिचारी भलौ मैं हौं उगो * इनकही तौ तू सकारे आइयो हौं तेरे सायचलौंगी * आगै भोरभये वह आयौ औ वाहि वित्त समेत लै नगरके बाहरकौं धायौ कोस

ऐक जाय मनमें बिचार करनि लाग्यो कि यह
ऐक तो जोबनवती दूजे याहि पर पुरुषकी इच्छा
है कदाचित जैसें यह मोहि मिली तैसें काहू और
सें मिलजाय तो फेर मैं कहाकरोंगो * यह बि
चारि ऐक नदीके तीरजाय बोल्यो भद्रे प्रथम नदी
पार वित्र वस्त्र धरि आऊं पाछे पीठपर चढाय
तोहि लैजाऊंगो * वाने याबातके सुनतही वसन
आभूषनकी गठरी दई इनलै पारहोय आपनी
बाटलई मोलई बिभचारनी नदी तीर पछताय
नीचीनार किये बैठरहीही कि ऐक स्यारनी मास
का लोथरा लियें तहां आई अरु ऐक माछरी हू
पानीतें निकरि रेतपर बैठीही वाहि देखि स्यार
नी लोथरा धरि माछरी पकरवे कों दोरी इतमा
स चील लै गई औ उत माछरी याहि देखि जल
में कूदी * जब स्यारनी निरास होय चीलकी ओर
तकनि लागी तब बिभचारनी बोली कि दोऊ गं
वाय अब कहा देखति है * उन कही ऐक तो हों

चतुर अरु मोहूतें दूनी तू जु तेरो सरबसु गयौ औ जार भयो नभचार * इतनी कथाकहि मगर बोल्यौ भाई मेरीहू वही दसा है पर अब कौन उपाय करौं नीति में तौ कार्य साधवेकों चार उपाय कहे हैं साम दाम दंड भेद अब इनमें तें मोहि जो करनौं जोगहोय सो कहो * बानर कही अरे मूढ कों उपदेस कबहू नदीजे * बहुरि मगर बोल्यौ मित्र हौं शोक समुद्रमें बूडतु हौं तू मोहि काढ तोहि जस धर्म होयगो * कह्यो है जौ मूरख काजबिगारै तौहू चतुर सुधारलेय मैं मूढ तू चतुर तातें जामें मेरो भलोहोयसो युक्तबताय* याकी दीनता देखि बनचर बोल्यौ भाई तूआपनें घरजा औ सजाती सों युद्धकर क्योंकि जौ जीतहै तौ घरपाय है औ मरिहै तौ स्वर्ग * कह्यो है उत्तम जनसों सामउपाय कीजै * मनुहार करि कार्य लीजै अरु अति बलवानकों धनदे दाम उपाय करि आपनौं काज संवारिये पुनि दुष्टतें

दंउउपायके अपनपा राखिये बहुरि समान सें भेद उपाय करि वाहि छलबलकरि मार नाखिये * जैसें ऐकस्यार नें कियो मगर कही यह कैसीकथा है * पुनि बानर कहतु है

काहू स्यारनें बनमें ऐक मखो हाथी पाये परवा के कठिन चाम यातें काख्यो नगयो त्यांही ऐक सिंह आयो यह देखतही वाके सनमुख उठिधायो ओ हाथ जोरि बोल्यो स्वामी या गजकें आपअंगी कार कीजे * उन कही हें काहू के माख्यो खातुना हीं मेरो यह धर्म है यातें यह मैं ताेही कें दियो इतनी कहि वह चल्यो गयो * पुनि ऐक तें दुआ आयो वाहि देखि स्यार नें जीमें बिचाख्यो कि यह दुष्ट है या कें भेदउपाय करि उराइये ऐसें मन में ठानि यह वाके सनमुख जाय गुमान सें हितू हाेय बोल्यो * अहो यहां कहां आवतु हो यह गज सिंह मारि गंगान्हान गयो है मोहि या कीरखवारी राखिके त्योंही बघेला नें याकी बात

सुनी अरु वाके चरन चिंन्ह देखे त्योंही पीठ दई इतेक में ऐक चीता आयो ताहि निहारि जंबुकनें बिचार्‍यो जु यासों हाथी को चाम फडवाय लीजे तो भलो ऐसें बिचारि इन चीतासों कह्यो अहो भगनीसुत में तोहि अनेक दिनपाछे देख्यो ज्यों भूख्यो है तो यह गज सिंह मारि नदी न्हैवे कों गयो है जो लों वह आवे तो लों कलेवा करिचल्यो जा * उनकही मामा हों आपनों मांस राखों तो लाख सिंह को मार्‍यो गज कैसें खाउं * स्यार बोल्यो अरे हों याको रखवारो हों औ तेरे आउ ठाढो रहतु हों तू खा जब सिंह आवेगो में पुकारोंगो तब तू भागजैयो * उनयाकी बात मानि ज्योंहीं वाकी खालफारि कछु मांस मुखमें लियो त्योंही स्यार पुकार्‍यो अरे भाग सिंह आयो * यह सुनत प्रमान वह उठिदोर्‍यो * याभांति स्यार नें वासों दामउपाय करि निज काज साध्यो आगे सजातीन सों दंउ उपाय करि युद्ध कियो अरु

वह हाथी काहू कों नखानदियो तातें हों कहतु हों कि साम दाम दंड भेद चारउपाय कहे हैं पर जै सौ जहां बुझिये तैसो तहां करिये * बहुरि मगर कही हों बिदेस जैहों * बंदर बोल्या अरे

एक चित्रांगद नाम कूकर परदेस में जाय काहू ग्रहस्त के घर पैठ्यो औ आछो आछो खाय जब बाहर आयो तब वा गांव के स्वाननि वाहि घेर अ ति मारदई पुनि इन दुख पाय निज नगरकी बाट लई अरु घर आयो तद याके कुटुंबनें पूछ्यो कि बिदेस जैवेकी अवस्था कहो जु क्यों कैसे रहे * इन कही परदेसमें और तो सबभलो पर सजाती देख नाहीं सकतु जो कोऊ मोसों पूछै तो मेरे जानें घरतें निकसनों उचित कयोंहू नाहिं * अरे मगर तातें हों कहतु हों कि तेरी दुष्ट पत्नी तो गई पै तू अबही सकाम है यातें नयो ब्याहकर * कह्यो है कुआ को नीर बडकीछांह तुरत बिलोयो घो खीरको भोजन बाल स्त्री येसब प्रानकों पोषतु हैं

अरु अवस्था प्रमान काजकीजै तौ दोषनाहीं * बानरतें यह उपदेस सुनि मगर निज घरगयौ औ उन नयौ विवाह कियौ घरमाड्यौ सब दुख छांड्यौ आनंद सों रहन लाग्यौ * इतनी कथा संपूरन करि विष्णुशर्मानें राजपुत्रनकों असीसदई कि तिहारी जय होय औ शत्रुन की हार * यह सुनि राजपुत्रनहू वस्त्र आभूषन द्रव्य मंगाय भेट धरि पायलाग गुरुकों बिदा कियौ अरु आप नीति मार्गसों निज राजकाज करनि लागे * इतिश्री लाल कवि विरचिते राजनीति ग्रंथे लब्ध प्रनाश पंचम कथा संपूर्णं समाप्तं

सूचीपत्र

शुद्धि पत्र राजनीतिका

अशुद्ध	शुद्ध	पिष्ठ	पंक्ति
काहू	काहू	६०	१०
देऊंगी	देउंगी	६१	१
बढ़ई	बढई	७०	१७
करतु हैं	करतु हैं	९०	३
हकार	अहंकार	११२	७
राग	राजा	११७	१४
द्रमा	चंद्रमा	१३२	१६
प्राधीन	प्राचीन	१३५	४
भांजिये	भाजिये	१४५	१४
सुबनर	सुबरन	१६२	११
नीछे	नीचे	१७६	१२
काहै	काहे	२१२	१७
भगवानें	भगवाननें	२३२	१४

[illegible] Library, Calcutta-[illegible].